

[सर्वाधिकार सुरक्षित-प्रधान सम्पादक के लिए]

# वक्तृत्वकला के बीज

दसवां भाग

समन्वय प्रकाशन

- प्रबन्ध सम्पादक  
मोतीलाल पारख
- प्रकाशक  
मोतीलाल पारख  
श्यामसुखा हाऊस  
ढढो का चौक, बीकानेर
- सस्करण  
वि० स० २०३२ चैत्रसुदी १३  
श्री महावीर निर्वाणशताब्दी वर्ष  
ई० स० १९७५, अप्रैल
- मुद्रक  
श्रीचन्द मुराना के लिए  
दुर्गा प्रिंटिंग वर्क्स,  
दरेसी आगरा-२

---

मूल्य • पाँच रुपए

“वक्तृत्वकला के बीज” के अमर सग्रहकर्ता



बहुश्रुत मनीषी मुनि श्री धनराज जी



# समर्पण

पथ से भी पथिक बड़ा होता है। अति प्रलव पथ भी बढ़ते हुए पथिक के अध्यवसायी चरणों के आगे क्रमशः छोटा बनता हुआ चला जाता है और एक क्षण ऐसा आता है, जहाँ पथ का अंतिम छोर मजिल का दर्शन करवा देता है। मजिल को पाकर कृतकृत्य पथिक मार्गानुभूत सभी कठिनाइयों को विस्मृत-सी कर देता है।

मेरा भी यह द्वादशवर्षीय अनवरत परिश्रम इसी परिस्थिति का द्योतक है। अनेक अतर्कित बाधाओं तथा हृदय को हताश करने वाली विचित्र रुकावटों के बावजूद मेरे दृढ सकल्पबल और अडोल आत्मविश्वास ने मुझे इस “वक्तृत्वकला के बीज” रूपी सहकार को पुष्पित एवं फलित देखने का सुअवसर प्रदान किया। आज अपने परिश्रम को पूर्णता के परिवेश में पदन्यास करते हुए देख, मैं भारमुक्त-सा बन गया।

दिव्य आत्मशक्ति के प्रेरणास्रोत मेरे आराध्यदेव भगवान् महावीर की पच्चीसवीं निर्वाणशताब्दी का स्वर्णिम अवसर मुझे अनायास प्राप्त हो रहा है। अतः फूल-फूल की पाँवुड़ी जैसा मेरा यह लघुतम उपहार उनके ही पावन चरणकमलों में उपहृत करता हुआ मैं अपने आपको कृतकृत्य मानता हूँ, साथ-साथ यह मंगलकामना भी करता हूँ कि हसबुद्धि वाले पाठक अनेक ज्ञातव्य विषयों में से श्रेय को आत्मसात् करते हुए हेय का त्याग करेंगे।

—धनभुनि (प्रथम)

## प्रबन्धकीय

“भवितव्य भवत्येव” इस युक्ति को चरितार्थ करते हुए जीवन में मनुष्य द्वारा कुछ ऐसे कार्य बन पड़ते हैं कि जिन्हें देखकर वह स्वयं यह विश्वास नहीं कर पाता कि क्या ये कार्य मेरे द्वारा हुए हैं। वस्तुतः मनुष्य का बाह्य क्रिया-कलाप निमित्त मात्र ही है, अन्दर का उपादान कुछ अतृष्णा ही काम करता रहता है।

वैसे बाल्यकाल से मैं बहुत कम साधु सन्तो के सम्पर्क में रहा हूँ। कभी-कभी माता जी के साथ अवश्य आचार्य श्री, मुनि श्री धनराज जी, मुनि श्री चन्दन-मल जी एवं साध्वी श्री दीपा जी के दर्शन करता रहा हूँ। कारण मेरी माताजी स्वनामधन्य श्री केवलचन्द जी स्वामी की पुत्री एवं धन-चन्दन मुनि श्री की सहोदरा लघु-भगिनी हैं, अतः भानेज होने के नाते मुझे यत्किंचित् उनके दर्शनो का मौका मिलता रहा है। पूज्य नानाजी, महाराज मुनि श्री केवल-चन्द जी के दर्शन का सौभाग्य मुझे नहीं मिला। वे मेरे जन्म से पहले ही स्वर्गवासी हो गये थे।

वि० स० २०२३ की साल जब आचार्य श्री तुलसी का, दक्षिण यात्रा को जाते हुए, मध्यवर्ती क्षेत्र अहमदाबाद में चार्तुमासिक प्रवास हुआ, तब मुनि श्री चन्दनमल जी भी साथ थे। मैं उस समय सागरमल शुभकरण की-अहमदाबाद लक्ष्मी कोटन मिल्स में सर्विस पर था। आचार्य श्री तुलसी का निवास भी सागरमल शुभकरण के बगले-दूगड निवास में था। उस समय मुझे सत-सम्पर्क का काफी मौका मिला।

साहित्य प्रकाशन की ओर

मुनि श्री चन्दनमल जी ने चार्तुमासिक चतुर्दशी में मन्वत्सरी तक लगभग ५० दिनों का मौन-व्रत स्वीकार किया था, अतः वे अहमदाबाद के उपनगर उस्मानपुरा में चम्पालाल जी ओस्तवाल के बगले में एकान्त के लिए विराज-मान थे। मैं प्रायः वहाँ दर्शन हेतु जाया करता था।

वि० स० २०२२ में वृद्ध मुनियों की सेवा हेतु मुनि श्री चन्दनमल जी का राजलदेसर (राजस्थान) में १० महीनों का लम्बा प्रवास हुआ था। उस

समय वहा के श्री सोहनलाल जी चण्डालिया ने मुनि श्री का सस्कृत एव प्राकृत का काफी साहित्य धारकर लिपिबद्ध किया था जो बहुत ही सुन्दर अक्षरो मे सशोधित किया हुआ तैयार था । वे पाण्डुलिपियाँ मेरे देखने मे आयी । मेरे अन्तर से ऐसी आवाज आई कि क्यों न मैं ऐसे साहित्य-प्रकाशन के कार्य मे सहयोगी बनूँ । यद्यपि यह कार्य मेरे जैसे नौकरी-पेशे वाले के लिए शक्य नहीं था, फिर भी मेरा सकल्प मुझे उस तरफ प्रेरित कर रहा था । एक रोज मैंने अपनी भावना मुनि श्री के सामने रखी । मुनि श्री ने मेरी मनो-भावना का ममादर करते हुए मेरे सकल्प को प्राणवान बनाया और फरमाया कि सकल्पबल से प्रत्येक असम्भावित कार्य को व्यक्ति सम्भावित बना सकता है, सिर्फ कार्य-सलग्नता होनी चाहिए ।

#### अकल्पित सफलता

मैं इस दिशा मे प्रयत्नशील बना । मुनि श्री की सेवा मे आने वाले कुछ विशिष्ट व्यक्तियों से परिचय करता रहा तथा साहित्य-विषय की परिचर्चा उनसे चलाता रहा । ३-४ पुस्तको के प्रकाशन मे सहयोगी बनने वाले कुछ व्यक्ति मुझे अनायास मिल गए । सहयोगियो द्वारा अर्थ-राशि भी मेरे पास एकत्रित होने लगी । मुनि श्री के प्रति एव उनके साहित्य के प्रति समाज इतना आकृष्ट है, यह जानकर मैं भी आश्चर्यचकित रह गया । इम अकल्पित सफलता का श्रेय मुनि श्री के उच्चकोटि के साहित्य को ही था, मैं तो केवल निमित्त मात्र ही था । उसके बाद मैंने कई प्रेस प्रकाशन की दृष्टि से देखे तथा वेचरदाम जी दोशी, दलमुखमाई मालवणीय जैसे कुछ साहित्यिक व्यक्तियों को मुनि श्री के मौन खोलने के बाद दर्शन भी करवाए । किन्तु मेरे सर्बिस मे होने के कारण उचित समय के अभाव मे यह योजना सफल न हो सकी । उम वर्ष का पावस-प्रवास मुनि श्री का बेंगलोर सौटी मे घोषित हुआ । वहा श्री ताराचन्द जी छाजेर तथा उनके लघु भ्राता श्री मनोहर जी छाजेर 'भारतीय' जो स्वयं साहित्यकार है, उन्होंने इस प्रकाशन कार्य को हाथ मे लिया । अहमदाबाद के मौनावस्था मे लिखी हुई पुस्तक "मौन वाणी" सर्व-प्रथम उन्होंने प्रकाशित करवाई । उसमे श्रीमती कान्ता कोचर जिनके प्रकाशन के लिये मैंने कुछ पहले सम्पक साधा था, वह कार्यरूप मे परिणित हो गया ।

फिर “ज्योति-स्फूर्तिगा” पुस्तक छाजेर प्रकाशन की ओर से निकली। इस भाँति यह क्रम आगे बढ़ने लगा, फिर भी प्रूफ सशोधन आदि की बड़ी कठिनाइयाँ पढती रही।

**श्रीचन्द जी सुराना से सम्पर्क**

मुनि श्री धनराज जी का कुछ साहित्य आगरा स्थित श्रीचन्द जी सुराना ‘सरस’ द्वारा निकला था। साहित्य शुद्ध एव सुन्दर लगा, अतः मैंने भी उनसे सम्पर्क किया। मुनि श्री के साहित्य के लिए उन्होंने अपनी सेवा देने के लिए उत्सुकता व्यक्त की। बस फिर तो यह क्रम बहुत तेजी से चला। “अर्जुन-मालाकारम्”, “उपदेशामृतम्”, “प्रभव प्रबोध काव्यम्”, एव “रणवाल कथा” आदि पुस्तकें मेरे ही सम्पर्क सूत्र से निकली। अनेक हिन्दी, सस्कृत एव प्राकृत की पुस्तकें, जहाँ-जहाँ मुनि श्री के चातुर्मास हुए, वहाँ के स्थानीय श्रावको द्वारा निकलती चली गईं। इस भाँति दक्षिण यात्रा के चार वर्षों में मुनि श्री का विशाल साहित्य प्रकाश में आया और मेरा इस दिशा में साहस एव उत्साह बढ़ता चला गया।

**वक्तृत्वकला के बीज**

इस प्रकार श्री चन्दनमुनि के साहित्य-प्रकाशन में यत्किंचित् सहयोगी बनने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ, परन्तु श्री धनमुनि के साहित्यिक कार्य में मैं कुछ भी सहयोगी न बन सका। अनेकधा मैं उस तरफ भी कुछ करने की सोचता रहा। पर कैसे क्या किया जाये—कुछ समझ नहीं पा रहा था।

इधर मुनि श्री चन्दनमल जी चातुर्वार्षिक दक्षिण यात्रा-प्रवास सम्पन्न कर बम्बई से सूरत होते हुए केशरियाजी के मार्ग से उदयपुर पहुँच रहे थे, तब कुछ रास्ते की सेवा करने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ। मैंने उनसे श्री धनमुनि के साहित्य को लेकर अपनी भावना व्यक्त की। मुनि श्री ने कहा—“उनका तो बड़े में बड़ा साहित्य, जो अभी प्रकाशित नहीं है, वह है—“वक्तृत्वकला के बीज” जिसकी पाण्डुलिपि चिकमगलूर से होती हुई वैगलौर आचार्य श्री के पास पहुँची थी। परन्तु वह बहुत बड़ा काम है शायद उसके ७-८ भाग बन सकते हैं। इतने भारी काम को पार पहुँचाना तेरे लिये शक्य है क्या?”

मैंने कहा—“आपका आशीर्वाद चाहिये। पूर्वकृत कार्य के अनुभव से मुझे

पूर्ण विश्वास है कि मैं इस कार्य में निश्चित ही कृत्य-कृत्य वनूंगा।" मैंने श्री धनमुनि से भी एक बार ऐसी प्रार्थना की थी।

आखिर इस भागीरथ कार्य को मैंने हस्तगत कर ही लिया और भिन्न-भिन्न भागों के अलग-अलग प्रकाशक होने के कारण 'समन्वय प्रकाशन' नाम से इस प्रकाशन कार्य को चालू किया। उस वर्ष मुनि श्री धनराज जी का वार्षिक प्रवाम छापर में वृद्ध सन्तो की सेवा के लिए हुआ। वह प्रूफ आदि की दृष्टि से बहुत ही मुविधाजनक रहा। एक ही वर्ष में "वक्तृत्व कला के बीज" के पाँच भाग प्रकाशित हो गए। किन्तु कुल ८ की जगह १० भाग होते नजर आने लगे।

### सघर्षों के बीच

इस ग्रंथ के प्रकाशन कार्य में अनेको सघर्षों के बीच से मुझे गुजरना पड़ा। अनेक अवरोध आए। प्रशंसा के स्थान पर अनेक उलाहने सहने पड़े। परन्तु धन-चदन मुनि की कृपा से बादलों की भान्ति वे सारे सघर्ष स्वतः क्षीण होते चले गये। प्रकाशित भाग जनता के सामने आये तो बड़ी सुन्दर प्रतिक्रिया हुई। अनेको के शुभ सवाद मिले। तथा अन्यान्य सम्प्रदायों के अनेक विद्वान् मुनिवरो तथा साहित्यिक विद्वानों ने बड़े चाव से उन नवप्रकाशित भागों की मांग की। सभी को यह जानकर आश्चर्य होगा कि इतने विशाल कार्य में मुझे अर्थ की दृष्टि से किंचित भी कठिनाई नहीं पड़ी। हितैषियों का सहयोग अधिक से अधिक मिलता रहा।

उन महानुभावों को मैं कभी नहीं भुला सकता जिन्होंने मेरा हर तरह से इस पुनीत कार्य में सहयोग किया है। उल्लेखनीय नामों में अहमदाबाद के श्री भगवतप्रसाद रणछोडदास पटेल एवं श्री गणेशमल दूगड हैं जिनके असाधारण सहयोग के बिना शायद इस कार्य को मैं पूरा नहीं कर पाता।

आज मेरा यह कार्य अपनी सम्पन्नता के साथ विज्ञ पाठकों के हाथों में प्रस्तुत हो रहा है। मैं अपने आपको भार मुक्त-सा महसूस कर रहा हूँ। भविष्य में ऐसे मुअवमर मुझे प्राप्त होते रहे—इसी शुभ सकल्प के साथ—

ग्वालियर

दि. ५।६।१९७४

—मोतीलाल पारख



## कृतज्ञता के परिप्रेक्ष्य में

सर्वप्रथम मैं अपने प्रातःस्मरणीय श्रीकालू गुरुदेव के चरणारविन्दों में इस महान् ग्रन्थ की सम्पन्नता पर नतमस्तक हूँ। मैंने जो भी कुछ पाया, सीखा, समझा और आत्मसात् किया, वह सब उनके अलौकिक अनुग्रह का ही सुपरिणाम है। मैं क्या था, मुझे किस योग्य बना दिया यह उन्हीं के कलाकार हाथों का चमत्कार है। उनकी कृतज्ञता शब्दों द्वारा ज्ञापित करना शायद कुछ बालोचित प्रयास ही होगा। वह तो वचनातीत एव वर्णनातीत है। बस उनके अकथनीय उपकार का मैं प्रतिपल स्मरण करता रहूँ—यही मेरे लिए आनन्द का विषय है, जैसा कि महर्षि वाल्मीकि श्रीराम के मुह से हनुमान के लिए कहलाते हैं —

“मय्येव जीर्णतां यातु यत्त्वयोपकृत हरे !”



इस पावन प्रसंग पर भावितात्मा पितृचरण श्री केवलमुनि की स्मृति भी मेरे मानसपटल पर सहज उभर आती है। ससार में लाखों पुरुष पितृपद को सुशोभित करते हैं, परन्तु श्री केवलमुनि—जैसे आत्मगवेषी और सतान-वत्सल पिता इतिहास के अमरपृष्ठों पर खोजने से विरले ही दृष्टिपथ को पावन करते हैं। बस “सागर सागरोपम” उन जैसे वे ही थे—इतना ही कहना पर्याप्त है। उन्होंने किस भाँति अपनी सन्तानों को सयममार्ग पर अग्रसर किया—यह किसी से छुपा नहीं है। आज मेरे द्वारा जो भी कुछ विशिष्ट कार्य हो रहा है, वह उन्हीं की पावन प्रेरणा का सुफल है।



उसी भाँति मेरे अनन्य सहयोगी लघुभ्राता श्री चन्दनमुनि का भी इस जटिल कार्य में विशिष्ट आभ्यन्तर योगदान रहा है। राम की सर्वजनविदित विजययात्रा में लक्ष्मण के सतत सहयोग को कैसे गौण किया जा सकता है? इतना ही कहना उचित होगा कि उनके प्रबलतम सहयोग के परिणामस्वरूप

ही यह विशालकाय ग्रन्थ जन-जन की पठन सामग्री के रूप में प्रस्तुत हो रहा है। उन के लिए क्या आभार व्यक्त किया जाय, वास्तव में ऐसे सुयोग्य एवं विनयी कनिष्ठ भ्राता का पाना ही मेरे लिए गौरव का विषय है।

□

साहित्यकार साहित्य निर्माण कार्य में तभी स्वयं को यशस्वी बना पाता है, जब उसे मनोनुकूल अनुगामी का सामीप्य प्राप्त हो। श्री झूमर मुनि का भी मुझे ऐसा ही सहयोग प्राप्त हुआ है। इस ग्रंथ की सकलना में मुझे अनेकानेक दुर्गम ग्रन्थों का पारायण तथा दोहन करना पड़ा है। इस बौद्धिक परिश्रम को बुद्धिजीवी ही जान सकता है। ऐसे आन्तरिक श्रम के लिए शरीर का स्वस्थ रहना नितान्त आवश्यक है। कार्य-सलग्न बुद्धिजीवी को स्वयं का ख्याल कम रह पाता है, किन्तु पार्श्ववर्ती योग्य सहयोगी ही उन सब चीजों का विशेष ध्यान रखता है और सामयिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। श्री झूमरमुनि बड़े ही समयज्ञ एवं कुशल सेवाभावी हैं प्रायः अस्वस्थ रहने वाले मेरे शरीर को उन्होंने यथामाध्य स्वस्थ रखने का प्रयत्न किया है। वस, यही कारण है कि मैं इस विशाल सग्रहग्रन्थ को सानन्द सम्पन्न कर सका हूँ।

□

इन सभी सहयोगियों के साथ मैं मुनि श्री राकेशजी को कैसे भुला सकता हूँ, जो मेरे इस ग्रन्थ के निर्माण में प्रबल प्रेरक रहे हैं। वे बड़े ही विनम्र एवं गुणग्राही वृत्ति के धनी हैं। गुरुओं के गौरव को अक्षुण्ण रखना उनकी सहज प्रवृत्ति है।

विक्रम संवत् २०१७ के वर्ष में मेवाड़ से थली जाते समय विहार में वे मेरे साथ हो गए। मेरे द्वारा सगृहीत व्याख्यान सामग्री को देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा—“मुनिश्री ! यह तो अद्भुत सग्रह है। यत्र-तत्र उपलब्ध होना असंभव है। इसे आप यदि एक ग्रंथ का रूप दे दें तो भावी पीढ़ी के लिए यह अमूल्य निधि के रूप में सुरक्षित रह सकता है।” आखिर यह उनकी बलवती अन्तःप्रेरणा नाकार बन कर रही। फलस्वरूप यह विशालकाय ग्रन्थ “वक्तृत्वकला के बीज” नाम से जनता के सामने आया।

उत्तर पक्ष में जिनके प्रति सहज ही कृतज्ञता प्रादुर्भूत होती है, वे हैं कवि-वर्य उपाध्याय श्री अमरमुनि जी । श्री मर्तृहरि के वे पद "परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्य, निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्त कियन्त" जिनमें मूर्तरूप ले चुके हैं । उनका कितना सरस, सहृदय एवं गुणग्राही मानस है, यह उनकी अमृतस्त्राविणी लेखनी ही अभिव्यक्त कर देती है । वे कही भी, उन्हें जो अच्छा, सहज और विशिष्ट लगता है, उसे अभिव्यजना देने में विलकुल नहीं सकुचाते । उनकी प्रमोदमेदुरा गुणानुरागिता को सप्रदाय भेदों की समुन्नत दीवारे किंचित भी तिरोहित नहीं कर सकती । मेरे इस "वक्तृत्वकला के बीज" पर उनके द्वारा लिखी गई भूमिका उसी का स्पष्ट निदर्शन है । काश ! यह गुणज्ञता का महान् सद्गुण अन्यान्य विज्ञानों में भी उनकी भाति विकास पाता ।



इस ग्रन्थ की पूर्णाहुति के मंगल-प्रसंग पर मैं युग प्रधान आचार्य श्री तुलसी को भी स्मृति पटल से ओझल नहीं कर सकता, जिन्होंने मेरे इस प्रयास का मूल्यांकन करके शुभकामना के रूप में अपना अमूल्य सदेश विना मागे ही वितरित किया । यह उनकी गरिमा के अनुरूप है । मैं भी अध्ययनकाल में उनका सहपाठी था । शायद उम्र वाल्यकालिक मंत्री को पुनर्नवीन करते हुए आपने ऐसा किया हो ! कुछ भी हो, दुग्धवाराधवल यह अयाचित मंगलसदेश निश्चित ही मेरे श्रम पर चार चाँद लगानेवाला सिद्ध होगा ।



अन्त में वे विद्यार्थी, युवक और वृद्ध भी भुलाए नहीं जा सकते, जिन्होंने इस ग्रन्थ को सविधि धारकर तैयार किया है । श्री डूंगरगढ़ के उत्साही श्रावको ने इस कार्य का श्रीगणेश किया और जोधपुर के विवेकी श्रावको ने इसे सपन्नता दी । बीच के लम्बे समय में अनेकानेक गावों-नगरों के भक्त इसमें अपना योगदान देते रहे और इस कार्य को आगे बढ़ाते रहे । पाण्डुलिपि की लगभग सौ कॉपियों में यह समावेश पाया ।

इतने बड़े ग्रंथ को प्रकाश में लाना भी साधारण काम नहीं था। किन्तु वीकानेर-निवासी कर्तव्यनिष्ठ, उत्साही मोतीलाल पारख ने अपनी अतः प्रेरणा से प्रेरित होकर सहसा इस कार्य को हस्तगत कर लिया और भारी विघ्न-बाधाओं को चीरते हुए बड़ी प्रामाणिकता एवं निष्ठा के साथ इसे पार पहुँचाया। उक्त कार्य में उसे श्रीचन्द्रजी सुराना 'सरस' का विशिष्ट सहयोग रहा है। उन्होंने पूर्ण मनोयोगपूर्वक इस ग्रन्थ को यथाशक्य सुन्दर, शुद्ध एवं आकर्षक बनाने की चेष्टा की है।

इस भाति मेरे इस भगीरथ-कार्य में अनेक सहयोगियों का सहयोग और अनेक मनीषियों की सहानुभूति रही है। नामोल्लेख करके यहाँ किस-किस को याद किया जाए। किस-किस को भुलाया जाए। सभी का समुचित सहयोग, फिर वह चाहे स्वल्पतम भी क्यों न हो, मेरे लिये चिरस्मरणीय रहेगा।

एक उर्दू के शायर ने क्या ही खूब कहा है—

“जिम ने कुछ अहसाँ किया, इक भार हम पर रख दिया।  
सर से तिनका क्या उतारा, सर पै छप्पर रख दिया।”

इन्हीं शब्दों के साथ विनयावनत—

—धनमुनि (प्रथम)

# मत-सम्मत

## तेरापंथ धर्म संघ के अनुशास्ता युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी

मनुष्य विभिन्न शक्तियों का स्रोत है। नहीं, वह अनन्त-शक्तियों का स्रोत है।

पर, जिन-जिन शक्तियों को अभिव्यक्त होने का समय और साधन मिल पाता है वही हमारे सामने विकसित रूप से प्रगट होती है, शेष अनभिव्यक्त रूप में अपना काम करती रहती हैं।

सग्राहक शक्ति भी उन्हीं में से एक है, जो अन्वेषण-प्रधान है और दूसरों के लिए बहुत उपयोगी बन जाती है।

मखन का आस्वादन करना एक बात है, पर उसे दही में से मथकर निकालकर सग्रहीत करना एक विशिष्ट शक्ति है।

मुनि श्री धनराजजी (सिरसा) में यह शक्ति अच्छी विकसित हुई है। शुरू से ही उनकी यह धुन रही है, आदत रही है, वे बराबर किसी न किसी रूप में खोज करते रहते हैं और फिर उसको सग्रहीत कर एक आकार दे देते हैं। वह साहित्य बन जाता है, जन-जन की खुराक बन जाता है।

—“वक्तृत्वकला के बीज” एक ऐसी ही कृति हमारे समक्ष प्रस्तुत है, जो मुनि श्री धनराजजी की सग्राहकशक्ति का एक विशिष्ट उदाहरण है। उसमें प्राचीन, अर्वाचीन अनेक ग्रन्थों का मन्थन है, अनेक भाषाओं का प्रयोग है। भूल उद्धरण के साथ हिन्दी अनुवाद देकर और सरसता उसमें लाई गई है। बड़ा सुन्दर प्रयास है। अपनी वक्तृत्वकला का विकास चाहनेवाले वक्ता के लिए बहुत उपयोगी है यह ग्रन्थ, जो अनेक भागों में विभक्त है। मेरा विश्वास है—यह प्रयत्न बहुजन हिताय—बहुजन सुखाय सिद्ध होगा।



श्री श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी वर्धमान श्रमणसंघ के  
 आचार्य श्री आनन्द ऋषि

‘वक्तृत्व कला के बीज’ के कुछ भाग देखे । मुनि श्री धनराज जी का अथक श्रम, बहुश्रुतता तथा दृढ अध्यवसाय अत्यंत सराहनीय है । इस विशाल संग्रह को वक्ता और लेखक गण—एक अमूल्य निधि की भांति सजोकर रखेंगे ।

□

राष्ट्रसंत उपाध्याय श्री अमर मुनि

प्रस्तुत कृति में जैन आगम, बौद्ध वाङ्मय, वेदों से लेकर उपनिषद्, ब्राह्मण पुराण, स्मृति आदि वैदिक साहित्य तथा लोक कथानक, कहावतें, रूपक, ऐतिहासिक घटनाएँ, ज्ञान-विज्ञान की उपयोगी चर्चाएँ इस प्रकार शृंखलावद्ध रूप में सकलित हैं कि किसी भी विषय पर हम बहुत कुछ विचार सामग्री प्राप्त कर सकते हैं । सचमुच वक्तृत्व कला के अगणित बीज इसमें सन्निहित हैं । सूक्तियों का तो एक प्रकार से यह रत्नाकर ही है । अंग्रेजी साहित्य व अन्य धर्म ग्रन्थों के उद्धरण भी काफी महत्वपूर्ण हैं । कुछ प्रसंग व स्थल तो ऐसे हैं जो केवल सूक्ति और सुभाषित ही नहीं हैं, उनमें विषय की तलस्पर्शी गहराई भी है । और उस पर से कोई भी अध्याता अपने ज्ञान के आयाम को और अधिक व्यापक बना सकता है । लगता है, जैसे मुनि श्री जी वाङ्मय के रूप में विराट् पुरुष हो गए हैं । जहाँ पर भी दृष्टि पड़ती है, कोई-न-कोई वचन ऐसा मिल ही जाता है, जो हृदय को छू जाता है, और यदि प्रवक्ता प्रसंगत अपने भाषण में उपयोग करे तो अवश्य ही श्रोताओं के मस्तक झूम उठेंगे ।

पुस्तक में विषयो का उपयुक्त चयन एवं तत्सम्बन्धित सूक्तियो आदि का सकलन इतना शानदार हुआ है कि इस प्रकार का सकलन अन्यत्र इस रूप में नहीं देखा गया ।

## □ सुप्रसिद्ध कवि एवं साहित्यकार मुनि श्री बुद्धमलजी

‘वक्तृत्वकला के बीज’ मुनिश्री धनराजजी के श्रम-सातत्य और दृष्टि-नैपुण्य का एक पुण्य फल है । अनेक भागो में सकलित इस ग्रन्थ में विभिन्न विषयो पर विभिन्न ग्रन्थो एवं चिन्तको की विचार-सामग्री एकत्रित की गई है । वक्तृता के अभ्यासियो को अपनी योग्यता बढाने तथा अभ्यस्तो को अपनी वक्तृता में निखार लाने के लिए इन भागो में बीजात्मक सामग्री प्रचुर मात्रा में सहज ही उपलब्ध हो सकती है । ज्ञान-वृद्धि में भी यह सकलन अच्छा सहयोगी बन सकता है । मैं मुनिश्री के अध्यवसाय की भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ और आशा करता हूँ कि जनता इससे लाभान्वित होगी ।

## □ प्रसिद्ध साहित्यकार श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री

‘वक्तृत्वकला के बीज’—देखकर मन रीझ गया । इतना सुन्दर सतुलित और व्यापक तथा विशाल संग्रह किसी भी साधारण वक्ता को वाग्मी और सामान्य लेखक को कलम कलाधर बना सकता है । मुनि श्री धनराजजी ने जिस उदारता और तटस्थता के साथ अपनी साठ वर्षीय ज्ञान निधि का सचित कोष सर्वसाधारण के लिए समर्पित किया है, वह साहित्य के इतिहास में एक अनूठा उदाहरण होगा ।

## बहुश्रुत श्री मधुकर मुनि

ज्ञानार्जन से भी अधिक महत्व का कार्य है—ज्ञानदान । मुनिश्री धनराजजी ने दीर्घकाल तक ज्ञानार्जन कर स्वयं का उपकार किया पर अब उस अमूल्य ज्ञाननिधि का सर्व सामान्य के लाभार्थ जो वितरण प्रारंभ किया है, वह उनकी महान जनोपकारिता का निदर्शन है ।

‘वक्तृत्व कला के बीज’ पुस्तक के ६ भाग—एक अद्भुत ज्ञान-कोष है । जैसे-जैसे समय बीतेगा, पाठक इनका महत्व समझेगे । और फिर इनके लिए तरसेंगे । असग्रही मतों के लिए भी यह ग्रन्थ सग्रहणीय है ।

□

## महासती उमरावकंवर ‘अर्चना’

‘वक्तृत्वकला के बीज’ देखे, बीज में विशाल वृक्ष लहरा रहा है । ग्रन्थ का एक-एक भाग, एक-एक कोष्ठक और उसका एक-एक प्रकरण अपूर्व दुर्लभ सामग्री का सग्रहालय है ।

प्राचीन जैन साहित्य में एक कहावत है—‘उपोमास्वाति सग्रहीतार’ सग्रह कर्त्ताओं में उमास्वाति प्रमुख है, मुनिश्री धनराज जी ने भी आज सग्रह कर्त्ताओं में एक नया कीर्तिमान स्थापित कर दिया है ।

आने वाले कुछ वर्ष बाद पाठक शायद यह विश्वास न करेगा कि एक ही व्यक्ति ने इतना विशाल सग्रह कैसे कर डाला ? ग्रन्थ की उपयोगिता अमदिग्ध है ।

□



## शतावधानी मुनि श्री महेन्द्र कुमार 'प्रथम'

मुनिश्री धनराजजी 'प्रथम' की पैनी दृष्टि अनवरत श्रम से अनुस्यूत होकर बहुमूल्य मणिमुक्ताओं की उपहृति का सहज निमित्त बन जाती है। वे जन-भावना को भलीभांति पहचानते हैं, अतः उनके गीत लोकगीत तथा उन गीतों को सुनती है तथा उस साहित्य को श्रद्धा वडे आदर के साथ पढती है। उन्होंने अब तक साहित्य के भण्डार को श्रद्धा समृद्ध किया है, उतना थोडे ही साहित्यकार कर पाते हैं। उनकी वक्तृत्वशैली भी अद्भुत है। अध्यात्म, लोक-भजन तथा सरस नदाहरणों का सगम बनकर उनकी वक्तृता जन-मानस पर छाती है।

मुनिश्री धनराजजी 'प्रथम' का साहित्य जन-सामान्य में जितनी विपुल मात्रा में पढा जाता है, तेरापथ साधु-समाज के लेखकों के अन्य साहित्य की तुलना में वह सर्वाधिक है। यह उनके साहित्य की मौलिक विशेषता है। 'वक्तृत्वकला के बीज' पुस्तक का सचयन करके तो उन्होंने जन-सामान्य तथा विद्वज्जनो में विशेषतः अग्रणी स्थान बना लिया है। यह उनकी अद्भुत सूझ, गहन अध्ययनशीलता तथा प्रस्तुतीकरण की कलात्मक क्षमता की परिचायक है। हम आशा करेंगे कि भविष्य में मुनिश्री इस प्रकार के और भी साहित्यिक रत्न समाज के समक्ष उपहृत करेंगे।

दिनांक २३ सितम्बर १९७४  
वाराणसी

## मेवाडभूषण श्री प्रतापमल जी महाराज

श्वेताम्बर तेरापथ सम्प्रदाय के आचार्य श्री तुलसी के अनुयायी श्री धन मुनि 'प्रथम' द्वारा सग्रहीत एव सकलित 'वक्तृत्वकला के बीज' के प्रथम प्रभृति सात भागों का अवलोकन करने का मुझे भी अवसर मिला। सचमुच ही मुनिश्री का पुरुषार्थ अनुमोदनीय है। समन्वय की दृष्टि से मुनि श्री ने जैन बौद्ध-वैदिक, इस्लाम, सिक्ख, फारसी, व पाञ्चात्य धर्म ग्रन्थों की गहरी अन्वेषणा करके जीवनोपयोगी तत्वों का अनुपम-अद्वितीय चयन प्रस्तुत किया है। जो अपने आप में तत्व-पीयूष का कुम्भ भी कहा जा सकता है। यह सुन्दर चयन ऐसे तो प्रत्येक बुद्धिजीवी के लिए सदैव उपयोगी एव प्रेरणा देने वाला है, पर, अधिक रूप से लेखक एव वक्ताओं के लिए अति उपयोगी है। सभी वाचनालयों में इन भागों का उपयोग होना श्रेयस्कर रहेगा।

आशा है मुनि श्री के परिश्रम का पवित्र स्रोत अधिकाधिक साहित्योद्यान को पल्लवित करता रहे।

□

## मानसजी शास्त्री, हाथरस

श्री धन मुनिजी 'प्रथम' द्वारा सकलित 'वक्तृत्वकला के बीज' नामक पुस्तक के कई खंड प्राप्त हुए। श्री मुनि जी ने अथक परिश्रम करके संस्कृत, प्राकृत, हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती, राजस्थानी आदि विभिन्न भाषाओं में प्रचलित विविध विषयों पर सूक्तियाँ एक स्थान पर सकलित करके कई खंडों में पुस्तकाकार करके वक्ताओं तथा मनीषियों के लिये बड़ा ही उपकार किया है। मेरे विचार में इतना सुंदर सगह अन्य किसी ने भी अद्यावधि नहीं किया है।

इन महापुरुष के परिश्रम का साफल्य यही है कि विद्वज्जन लाभ ले। आशा ही नहीं विश्वास है कि सहृदय मनीषीगण अवश्य विशद वाणी के लिये 'वक्तृत्व कला के बीज' का पूर्ण समादर करेंगे।

□



हिन्दी, गुजराती, राजस्थानी, पजाबी आदि भाषाओं के विद्वान हैं और उनका अध्ययन अत्यन्त व्यापक है अतः उनके मूलाधार ग्रन्थ जैन, बौद्ध और वैदिक धर्म, पाश्चात्य दर्शन, लोकसाहित्य, आयुर्वेद, सामाजिक विज्ञान, इतिहास, पुराण, मनोविज्ञान आदि सभी क्षेत्रों से सम्बद्ध रहे हैं। मूल उद्धरणों के साथ हिन्दी में अर्थ देने व सदर्भ ग्रन्थों के उल्लेख से इनकी उपयोगिता अधिक बढ़ गई है। इन पुस्तकों का सहयोग पाकर कोई भी व्यक्ति अभ्यास और परिश्रम में अच्छा वक्ता और लेखक बन सकता है। ऐसे ज्ञानवर्द्धक, बहुआयामी उपयोगी प्रकाशन के लिए मुनि श्री व प्रकाशक बधाई के पात्र हैं।

—डा. नरेन्द्र भानावत



वक्तृत्वकला के बीज भाग १ से १०	
भाग	पृष्ठ संख्या
पहला भाग	३०६
दूसरा "	३६४
तीसरा "	३४०
चौथा "	३७२
पाचवाँ "	३६८
छठा "	३५०
सातवाँ "	३००
आठवाँ "	३५७
नौवाँ "	३७०
दसवाँ "	१४८



appended at the end of each volume This was needed for satisfaction of the curiosity of the reader

As said above, the main purpose of the project under review is to serve as a ready aid to speaking As such, the passages assembled therein have been carefully chosen so as to be consistent with the aim in view of the compiler The other and equally valuable feature of the work is information of intimate interest which has been supplied in it, here and there A few illustrations in this regard may suffice

(i) Volume I section 1 head 7 throws light on some important World Religions and numbers of their adherents

(ii) III 3 13 has to give us some useful information about science and scientists of the world

(iii) IV 4 19 speaks about some renowned saints and great souls of the world

(iv) VI 3 26 tells us something about Income and Income Tax

(v) IX 2 16-17 comprise lists of Indian Embassies and High Commission Offices abroad and *vice versa* And so on And so forth.

Muni Shri Dhana Raj-ji the compiler of this miniature encyclopaedia of quotations and information, is rightly conscious that a work such as the present one must be totally free from all bias, whether in the field of Religion or in that of Politics The consciousness has been meticulously maintained by him throughout Thus, the work must prove very useful for readers of all tastes and shades of opinion alike



# आमार दर्शन

मेरे इस भागीरथ कार्य में सम्पादन सहकारी के रूप में जिनका तन, मन, धन में विशिष्ट सहयोग प्राप्त हुआ है उन श्री मदनचन्द सम्पतराय वोरड को किसी भाँति मैं भुला नहीं सकता। वैसे श्री मदनचन्दजी मेरे सगे मौसाजी लगते हैं और उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री सम्पतराय वोरड मौमेरा भ्राता। यद्यपि यह पूर्ण ग्रन्थ उनकी विद्यमानता में प्रकाशन नहीं पा सका फिर भी प्रथम पाँच भाग उनके समक्ष प्रकाशित हो चुके थे। मैं उनकी कृतज्ञता ज्ञापित किए बिना नहीं रह सकता। वे कितने सीधे-सादे एवं मिलनसार थे यह जानने के लिए उनका मक्षिप्त जीवन परिचय विज्ञ पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है।

प्रबन्ध सम्पादक

—मोतीलाल पारख

## स्व० सेठ श्री मदनचन्दजी वोरड : एक परिचय

यह सृष्टि का अटल नियम है कि “जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु” जन्म का अंतिम परिणाम मृत्यु ही है। वस्तुतः एक ही जीवन के ये दोनों छोर हैं। पर जीवन को सजीवन कोई मौभाग्यशाली ही बना पाता है। जिनका जीवन और मरण समरूप से सफल रहा हो, जो मरार से जाते वक्त हसते चले जायें और लोग उनके उपकारी कार्यों को याद करते रोते ही रह जायें, ऐसे विरल व्यक्ति ही जीवन कला के पारगामी होते हैं।

सेठ श्री मदनचन्दजी वोरड उमी कलात्मक जीवन के धनी थे। आपका जन्म वि० म० १९४६ के वर्ष माघ शुक्ला २ के शुभ दिन मुकाम कतरखेडा (पजाब) में एक नमृद्ध, परिवार में हुआ। आप बाल्यकाल में बड़े परिश्रमी एवं सादगी प्रिय थे। जमीनों के मालिक होने के कारण वही आपका प्रमुक्त आय का साधन था। गगानगर जिले में गगानहर जाने के बाद जमीनें एक





कि इस युग मे जीकर भी कभी आपने साबुन का शरीर पर प्रयोग नहीं किया। छाछ दही आदि द्रव्यो से आप स्नान करना पसन्द करते थे। डाक्टरी दवा, इन्जेक्शनो आदि से आपका वास्ता नहीं था। आपका शरीर प्राय नीरोग रहा था। वर्फ-मिश्रित शीतलपेय कोका कोला आदि आप कभी नहीं पीते थे। इसी के परिणाम स्वरूप आपके भरेपूरे पाच पुत्रो के परिवार मे किसी प्रकार का दुर्घ्यसन स्थान नहीं पा सका। बहुत वर्षों से आप निवृत्त जीवन जी रहे थे। आपके मुयोग्य पुत्रो ने सारा कार्यभार समाल लिया था। विनीत एव घर्म-परायण आपकी घर्मपत्नी श्रीमती कस्तूरीदेवी का आपको हर एक व्यावहारिक एव धार्मिक कार्यो मे सुन्दर सहयोग मिला। आपके पाँचो पुत्र श्री सम्पतराय जी, कुन्दनमल जी, चैनरूप जी, नवरतनमल जी व अमरचन्द जी वडे ही विनीत एव धार्मिकता मे विशेष रुचि रखने वाले हैं। आज भी घर मे एकता का स्वर्गीय वातावरण है।

### सामाजिक कार्यो में रुचि

यद्यपि प्राचीन विचारधारा से आपका चिन्तन विशेष अनुप्राणित था, फिर आप ऐदयुगीन सामाजिक कार्यो को कभी उपेक्षित नहीं करते थे। श्रीगगानगर के जैन भवन के निर्माण मे जो आपने प्राथमिकता स्वीकार कर असाधारण उत्साह दिखलाया वह आपकी धार्मिक प्रभावना एव क्रियाशीलता का उत्कृष्ट उदाहरण था। वैसे ही जैन समा मे सभी जैन सम्प्रदायो को समाविष्ट करके समन्वय एव सीमनस्य का वातावरण बनाने मे आपश्री का अनुकरणीय योगदान रहा। इसी भाँति प्रत्येक नगर के सामाजिक, एव व्यावहारिक कार्यो मे आप सदा अग्रगण्य बने रहे। साहित्य प्रकाशन के क्षेत्र में भी आपने सोलह सतिया, मनोनिग्रह के दो मार्ग आदि पुस्तके सहर्ष प्रकाशित करवाईं। वस्तुत्व कला के बीज के महान प्रकाशन कार्य मे भी आपका प्रत्यक्ष एव अप्रत्यक्ष रूप से विशिष्ट सहकार रहा।

इस प्रकार अपने जीवनकाल के ७६ वसन्तो को पारकर चैत्र कृष्णा १३ स० २०२८ दि० १३-३-७२ के दिन नमाधिपूर्ण स्थिति में भौतिक शरीर का परित्याग किया परन्तु उनकी यश सौरभ युग युगान्तरो तक अपनी मुवास फँलाती रहेगी।

# अनुक्रम

बीसवी शताब्दी के विशिष्टजन जैन साहित्यकार	
शतावधानी मुनि श्री धनराज जी	
वक्तृत्व कला के बीज की विषयानुक्रमणिका	
पहला भाग	" "
दूसरा भाग	" "
तीसरा भाग	" "
चौथा भाग	" "
पाँचवा भाग	" "
छठा भाग	" "
सातवाँ भाग	" "
आठवाँ भाग	" "
नौवा भाग	" "
उप विषयानुक्रमणिका	
विषयो का अकारादिक्रम	
उद्धृत ग्रन्थ सूची	
व्यक्ति नामावली	

पहला भाग	
दूसरा भाग	
तीसरा भाग	
चौथा भाग	
पाचवाँ भाग	
छठा भाग	
सातवाँ भाग	
आठवाँ भाग	
नौवाँ भाग	
मुनि श्री धनराज जी का साहित्य	
विहगावलोकन	

## शुद्धि पत्र

पृष्ठ

१

१२-१४
१२-१७
१८-२०
२०-२३
२४-२६
२६-२९
२९-३२
३२-३५
३५-३९
४०-४६
४७-७३
७४-८४
८५-९५

९६

९७

९९

१००

१०१

१०३

१०४

१०५

१०७

१०९-११

भाग १०

वक्तृत्वकला के बीज



बीसवीं शताब्दी के विशिष्ट जैन-साहित्यकार

## शतावधानी मुनिश्री धनराजजी

नाना प्रकार के सूक्ति, पद्य, गाथा, सद्बिचाररूप मणियों से परिपूर्ण "वक्तृत्वकला के बीज" जैसे महान् ग्रन्थरत्नाकर का अवगाहन कर प्रत्येक विज्ञ विचारशील मनुष्य के हृदय में यह कुतुहल उत्पन्न होना स्वाभाविक है कि इस अद्भुत ग्रन्थरत्न के सकलयिता कौन हैं? कौन महान् प्रतिभाशाली मनीषी प्रवर हैं, जिन्होंने महर्षि व्यास और आचार्य हेमचन्द्र की परम्परा को इस युग में भी जीवित रखा है। वे किस वशावलि को पावन किए हुए हैं और स्वनामधन्य ये महामना किस धर्म-सम्प्रदाय विशेष से सम्बद्ध हैं?

लीजिए उनका सक्षिप्त-सा जीवन-परिचय यहाँ प्रस्तुत है। पाठको की जिज्ञासा तृप्ति के लिए।

यह तो निश्चित है ही कि सहकारी कारणों को पाकर एक छोटा-सा बीज अकुरित, विकसित, पुष्पित एवं फलित हो जाता है, किन्तु सारे परिणाम अपने उपादान के अनुरूप ही अभिव्यक्त होते हैं। जैमे-आम-आम के रूप में ही शोभित होना है और नीम-नीम के रूप में ही विकास पाता है। वस्तुतः प्रत्येक बीज अपने गुण-धर्मों को साथ लेकर ही पैदा होता है, किञ्चित् अनुकूल संयोग के मिलते ही वह अपने रूप में निखार ले जाता है।

मुनिश्री धनराजजी भी अपनी विशिष्ट उपादान नामश्री को लेकर ही यहाँ अवतरित हुए हैं। जैसा कि गीता का मकेत है—“शुचीना श्रीमता गेहे, योग भ्रष्टोऽभिजायते” सच है। कुद्व निमल आत्माएँ अपनी नाचना को विशेष उज्ज्वल बनाने के लिए ही सर्वथा अनुकूल वातावरण में पुनर्जन्म धारण करती हैं।

आपश्री का शुभ जन्म वि० सं० १९६७ के वर्ष हरियाणा प्रदेशान्तर्गत 'सिरसा' शहर में हुआ। आपके पिताश्री का नाम केवलचन्दजी एव माता का नाम जडाववाई था। आप जाति से ओसवाल जैन एव नौलखा गोत्र से सम्बद्ध हैं। छह बहन-भाईयो में आप सबसे बड़े हैं। ८-९ वर्ष की आयु में ही आप अपने पिता श्री के साथ दार्जिलिंग, कलकत्ता, जहाँ आपकी दुकानें थी, रहने लगे। धर्मवृत्ति पिता श्री से बहुत छोटी वय में ही आपने सामा-यिक, बन्धना पच्चीस बोल, चर्चा, प्रतिक्रमण, कलकत्ता आदि तात्विक चीजों कण्ठस्थ कर ली थी। वैसे तेरापन्थी विद्यालय, कलकत्ता में आपका विद्याभ्यास चलता था। बाल्यकाल से ही आपकी ग्रहण-शक्ति बहुत तेज थी।

### अप्रत्याशित घटना

सं० १९७६ की साल श्री केवलचन्द जी अपने ज्येष्ठ पुत्र धनराज के साथ कलकत्ता से चलकर सिरसा आए। सपरिवार वहाँ से आपने तेरापन्थ सघ के अधिनायक अष्टमाचार्य श्रीकालूगणि के राजलदेसर में दर्शन किए। वहाँ से गुरुदेव के साथ वीदासर आए। वहाँ आपकी माता विषम ज्वर से पीड़ित हो गईं और उसी ज्वर ने डबल निमोनिया का रूप ले लिया। कोई उपचार अनुकूल नहीं पड़ा। आखिर उसी असाध्य बीमारी में आपकी स्नेहमयी माता दिवंगत हो गई। इस अप्रत्याशित एव अकल्पित घटना ने जीवन की क्षणभंगुरता के विषय में एक प्रश्नचिह्न उपस्थित कर दिया। गहरे सोचते-सोचते आप जीवन की कृतार्थता किससे है, इस विषय पर चिन्तन करने लगे। प्रातः सभी के साथ माता के दाह-संस्कार के लिए आप प्रमथान घाट पर गए। चिता पर लेटाए गए माता के शव पर, ज्येष्ठपुत्र होने के नाते लोगो ने आप से चिता प्रज्वलित करने के लिए कहा। कापते हुए हाथों से आपने इस रश्म को अदा किया, किन्तु यह क्या लीला है—आपका अवोध हृदय कुछ समझ नहीं पा रहा था। चिता प्रज्वलित हो उठी। आप ध्यान से उसे निहार रहे थे।

### पिताश्री का उपदेश

उमी समय पिताश्री ने आपको धर्म का मार्मिक बोध पाठ दिया—“देखा पुत्र! तूने ससार का विविन्न नाटक! बोल, कहा है तेरी वह बाल्मल्यम

माता । अल्पज्ञ मनुष्य क्या-क्या सोचता है, लेकिन विधि की बलवती रेखा क्या कुछ अतिक्रित घटित कर देती है । मनुष्य देह पाने का यही सार है कि बुद्धिमान व्यक्ति इस भव-झवानल में अपनी आत्मा को बाहर निकाल ले” इस भाँति पिताश्री का आध्यात्मिक उपदेश सुनकर आपकी वृत्ति सहमा अन्तर्मुखी बन गई ।

दाह-संस्कार के बाद कुएँ पर स्नान करके तत्काल पिताश्री के साथ आपने आचार्यचरण के दर्शन किए और भागवती दीक्षा प्रदान करने की सविनय प्रार्थना की । किंवदन्ता, यह भावना उत्तरोत्तर ऐसी तीव्र बनी कि आपके साथ आपकी छोटी बहन भवरी (स्व० साध्वी श्री दीपाजी) तथा नन्हा भाई चन्दन (मुनिश्री चन्दनमल जी) भी दीक्षा के लिए तत्पर हो गया । पिताश्री तो स्वयं तैयार थे ही ।

### दीक्षा और शिक्षा

परिणामस्वरूप वि० सं० १९८० प्रथम ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा के दिन लघु भाई-बहन के साथ आपकी भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न हो गयी । तथा पिताश्री ने भी फँसे हुए व्यापार को समेटकर सवा पाँच महिनो के बाद मुनिव्रत स्वीकार किया । इस प्रकार भव्यात्माएँ बुद्ध सामयिक स्थितियों से प्रेरणा पाकर अपनी उपादानशुद्धि के कारण भवसमुद्र से तरने को तत्पर हो गईं ।

दीक्षा के बाद आप आचार्य प्रवर के सान्निध्य में जानार्जन बड़ी तत्परता के साथ करने लगे । कण्ठस्थ ज्ञान की अपनी निजी विशेषता है । आप इस दिशा में बड़े उत्साह के साथ बढ़े । सर्वप्रथम कुछ महिनो में ही आपने दशवैकालिक सूत्र कण्ठस्थ किया । उसके बाद अभिधानचिन्तामणि, हेमी नाममाला, जिसके लगभग पन्द्रह सौ श्लोक हैं, कण्ठस्थ किये । व्याकरण में—सम्पूर्ण सिद्धान्त-चन्द्रिका, भिक्षु शब्दानुशासन की अष्टाध्यायी धातुपाठ की दो हजार धातुएँ, गणपाठ के लिए गणरत्नमहोदधि जैसे दुर्गम ग्रन्थो को तथा हेम लिगानुशासन को कण्ठस्थ किया । दर्शनशास्त्र के अवगाहन के लिए षड्दर्शन समुच्चय तथा प्रमाणनयतत्वालोकालकार जैसे दुरूह शास्त्रो को कण्ठस्थ किया । जैनागम के शास्त्रीय ज्ञान के लिए भी आपने तैरहत्कार, लघुदण्डक, गतागति, अल्प-बहुत्व, सजया, नियन्ठा, गमा, डाला-पाला आदि गहनतम थोकडे कण्ठस्थ





मे से आपने प्रचुर व्याख्यान-सामग्री एकत्रित की। इसी प्रकार अन्यान्य मुनियों से भी आप तत्प्रायोग्य सामग्री सविनय ग्रहण करते रहे। विशेषतः श्री सक्तमलजी, जो उस समय गण मे थे, तथा मुनिश्री सोहनलाल जी, चौथमलजी आदि अनेक तदानीन्तन मुनिवरो से कुछ-न-कुछ विशिष्ट व्याख्यान-सामग्री, मधुकर की ज्यो नाना पुष्पो से मकरन्द की तरह, सचित कर लेते थे। माधुकर की वृत्ति के सस्कार तो प्रारम्भ से ही आप मे थे। परिणाम-स्वरूप आपके पिता मुनिश्री केवलचन्द्रजी जब अग्रगण्य के रूप मे विहार करने लगे तब रात्रिकालीन प्रवचन का दायित्व आपको ही सौपा गया। शनैः शनैः आपकी व्याख्यानशक्ति की महक सर्वत्र फैलने लगी। आपका नाम सुनते ही जनता व्याख्यान सुनने के लिए लालायित हो जाती। इस प्रकार दिन-प्रति-दिन आप इस दिशा मे प्रगति करते गए।

### कवित्वशक्ति

कवि बनाया नहीं जाता, जन्मजात सस्कारो मे ही वह उस शक्ति को लेकर आता है। आप मे भी यह स्फुरणा स्वतः जाग्रत हुई। दीक्षा के कुछ वर्ष बाद ही आपकी प्रतिभा कविता की ओर झुकने लगी। प्रथम आचार्य देव के गुणानु-वादरूप कुछ दोहा, सर्वैया, कवित्त, गीतिका आदि बनाने लगे। वैसे ही कुछ मस्कृत भाषा मे भी पद्यादि रचने लगे थे। वि० स० १९९१ के वर्ष सिरसा चातुर्मास मे आपने 'प्रास्ताविक श्लोकशतकम्' नामक एक काव्य लिखा। सम्बत् १९९२ से आप 'फथाप्रबन्ध' की गीतिकाएँ बनाने लगे। कुछ आप-देशिक गीतिकाएँ भी समय-समय पर बनाने लगे थे। हर्ष का विषय था कि आपकी कृतियों को विविध प्रान्तों मे विहार करने वाले मुनिवर बड़े चाव से लिपिवद्ध करते थे। मर्यादा—महोत्सव के अवसर पर वीमो पचासो प्रति-लिपियाँ बन जाती थीं। फिर तो यह क्रम बड़े जोरों से चला। कथा प्रबन्ध गीतिकाओं के सकलन रूप १०८ लघु व्याख्यानों की व्याख्यान-मणिमाला, व्याख्यान रत्न मजूपा तथा चन्दनवाला, आनन्दकुमार, कान्हो कुमार, पद्मनेन, सक्षिप्त जैनरामायण, सक्षिप्त जैन महाभारत, नव्य चन्द्रचरित्र, पतिव्रता पद्मिनी, आदि अनेकानेक व्याख्यान बनते गए। वैसे ही सौराष्ट्र के वैवापिक प्रवास मे आपने गुजराती भाषा मे भी 'गुर्जर भजन पुष्पावलि' तथा 'गुर्जर व्याख्यान

वक्तृत्वकला के वीज भाग दसवाँ

रत्नावलि' की सुन्दर एवं अधिकारपूर्ण रचनाएँ की। आपकी ये रचनाएँ अत्यन्त सरल भाषा में एवं चाबू रागिनियों में होने के कारण वे समाज में खूब प्रचलित हुईं।

तेरापथ शासन में सर्वप्रथम शतावधानी होने का श्रेय आपकी को ही मिला। वि० स० २००४ में जब आपका प्रवास बम्बई में था तब प्रसिद्ध अवधानकार श्री धीरजलाल टोकरसी भाई से आपका सम्पर्क हुआ। आपने अवधान-विद्या सीखने की उत्सुकता व्यक्त की। उन्होंने आप श्री को योग्य पात्र मानकर सहर्ष अपना समय आपकी सेवा में लगाया। कभी सप्ताह, कभी १०-१२ दिनों के बाद वे आते और स्मृति के विशिष्ट-प्रयोगों का अभ्यास बतला जाते। इस भाँति सिर्फ़ तेरह बैठकों में इस अद्भुत अवधान विद्या को आपने आत्मसात् कर लिया। पहले आपने ३६ अवधान प्रयोग सफलतापूर्वक किए, बाद में १०१ प्रयोग विना स्वलना के करके जनता को विस्मित बना दिया। फिर भिवानी में आचार्य श्री के सान्निध्य में भी कुछ सफल अवधान प्रयोग करके दिखलाए। तदनन्तर पंजाब, हरियाण, राजस्थान आदि क्षेत्रों में मारी मानवमेदिनी के समक्ष आपने अनेकों बार बड़े विविध प्रश्नों को समाहित करते हुए अवधान-प्रयोग किए। सभी जगह आप शतप्रतिशत यशस्वी सिद्ध हुए। धर्म सभ के अनेकों युवामुनियों ने भी आपके द्वारा अवधान विद्या सीख कर देश-विदेश में जिन शासन की प्रभावना की। उल्लेखनीय नामों में—मुनिश्री पुनमचन्दजी (गगाशहर), चम्पालाल जी (सरदारशहर) मगनमल जी, धर्मचन्द जी आदि हैं।

लेखक के रूप में यद्यपि "वैदिक विचार विमर्शन" नामक एक बड़ा ग्रन्थ आप स० २०११-१२ में लिख चुके थे। जिसमें वेद, स्मृति, पुराण आदि वैदिक ग्रन्थों पर जैन दर्शन की दृष्टि से विमर्शन किया गया है। वैसे ही बम्बई प्रवास में तेरापथ का तात्त्विक ज्ञान कगने, आचार और विचार पक्ष की यथार्थता दिखलाने के लिए "परीक्षक बनो" तथा "धर्म एटले शू" ऐसी दो पुस्तकें आप लिख चुके थे। फिर भी आपकी रचि नवीन-नवीन मजत एवं व्याख्यान आदि बनाने में अधिक रहती हैं।

एक वार श्रीचन्दन मुनि के चित्र साथी मुनिश्री लालचन्दजी ने आपसे प्रार्थना की, कि आपने भजन एव व्याख्यान आदि तो बहुत बना लिए, अब आप कुछ तत्वज्ञान की पुस्तकें लिखे तो जनसाधारण के लिए उनका अच्छा उपयोग हो सकता है। उनका यह सहज कथन आपके मन में घर कर गया और तभी से आपकी लेखनी इस ओर विशेष रूप से चलने लगी। सर्वप्रथम आपने “प्रश्न-प्रकाश” नामक पुस्तक लिखी जो जैन धर्म के मौलिक तत्वों को जानने के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुई। इस पुस्तक के अनेक संस्करण भी निकल चुके हैं।

वैसे ही पंजाब में विहार करते हुए एक वार नेममुनि ने कहा—“मुनिश्री ! आप अपनी सरल भाषा में ऐसा जैन-साहित्य बनाइये जो कभी पुराना न हो।” उनके सुझाव को भी आपने प्रश्रय दिया और “जैनजीवन” “चमकते चाँव” एव “सच्चा धन” नाम की तीन पुस्तकें लिखी जो प्रत्येक जैन पाठक के लिए अवश्य पठनीय हैं। फिर तो आपका यह लेखन का क्रम विशेष रूप से आगे बढ़ा। ‘प्रश्न प्रकाश’ की शैली पर ‘लोक प्रकाश’, ‘ज्ञान प्रकाश’, ‘दर्शन प्रकाश’, ‘चारित्र्य प्रकाश’, ‘मोक्ष प्रकाश’, ‘श्रावक धर्मप्रकाश’ आदि पुस्तकें आपने लिखी जो अपने-अपने विषय पर पूर्णरूप से प्रकाश डालती हैं। दुर्गम एव दुरवगाह शास्त्र के गम्भीर विषय भी आपकी प्रश्नोत्तरों की शैली में इस प्रकार सरलता के साथ प्रस्तुत किए गए हैं कि प्रत्येक जिज्ञानु पाठक इन्हें पढ़कर निश्चित ही तत्वज्ञान के गहरे समुद्र में गोता लगा सकता है। ज्ञान प्रकाश में पाँच ज्ञान का बड़ा विस्तृत विवेचन है। दर्शनप्रकाश में न्यायवाद, सप्तभंगी, नय निक्षेप का बहुत विशद विवेचन है। साथ-साथ बौद्ध, नैयायिक, सांख्य, वैशेषिक, वेदान्त आदि पद्धतियों का तथा यहूदी, पारसी, मिस्र आदि प्रचलित दर्शनों का संक्षिप्त दिग्दर्शन है। “मोक्षप्रकाश” तो अपने आप में एक बहुत ही अनूठा ग्रंथ है। कर्म फिलोसोफी जैने दुर्गम विषय को अत्यन्त सरल एव सुगम भाषा में प्रस्तुत कर वास्तव में पाठकों के लिए बड़ा उपकार किया है। इसके अतिरिक्त गुणन्यानों के विवेचन के साथ आश्रव, सवर, निर्जरा आदि का भी बहुत विशद विवेचन है। इसे पढ़ने वाला गुणज्ञ अवश्य ही आपश्री की ज्ञानगरिमा का गौरव गाए बिना नहीं रह सकता। वस्तुतः ये सारे प्रकाश



लिखवा लेते थे। इस भाँति नाना प्रकार की व्याख्यान-सामग्री सगृहीत होने लगी। फिर जब पिताश्री के दिवगत होने पर स्वयं अग्रगामी के रूप में स्वतंत्र विहार करने लगे। वहाँ भी आपने इसी क्रम को चालू रखा। बम्बई एवं सौराष्ट्र के लंबे प्रवास में गुर्जर भाषागत विशिष्ट साहित्य के पठन में प्रचुर व्याख्यान-योग्य चीजें आपको उपलब्ध हुयीं। पंजाब में भी आपका बहुत रहना हुआ। वहाँ से भी आपको पंजाबी भाषा सम्बन्धी विशिष्ट व्याख्येय तथ्य प्राप्त हुए। हरियाण प्रांत में भी उन दिनों उर्दू भाषा का बहुत बोलवाला था। अतः वहाँ से उर्दू, फारसी, अरबी आदि मूक्तियों का भण्डार मिला। वैसे ही अनेक अन्यान्य ग्रन्थों के अवलोकन से विचित्र सामग्री आपके हस्तगत होती गयी। संस्कृत भाषा पर आपका पूर्ण अधिकार होने के कारण जैन साहित्य, वैदिक साहित्य एवं बौद्ध साहित्य आदि के अवगाहन का सुन्दर अवसर मिला। उनसे भी अनेक सूक्त एकत्रित होते गए। आपने इस विशाल सगृह को “व्याख्यान के मसाले” नामक शीर्षक में काफी सूक्ष्म लिपि में हस्तलिखित पत्रों में लिपिवद्ध कर लिया। उससे भी अनेक सत-सतिया लाभान्वित होते रहे। इस भाँति यह विशाल सगृह निजी उपयोग के लिए ही था, किन्तु इसे ग्रन्थ रूप देने का आपका कोई विचार नहीं था।

### राकेश मुनि की प्रेरणा

वि० स० २०१७ मर्यादा महोत्सव की सपन्नता कर आपने गंगाशहर की ओर त्रिहार किया। रास्ते में मुनिश्री राकेशकुमार जी भी आपके साथ थे। उन्होंने एक बार विनय पूर्वक आप से कहा—“मुनिश्री, आपका सानिध्य प्राप्त करने का मुझे बहुत कम अवसर मिला है। प्रायः नहीं मिला है, ऐसा कहा जा सकता है। इस वर्ष सद्भाग्य में सहज ही यह सुयोग मुझे प्राप्त हो गया है। अतः मैं चाहता हूँ कि आपसे कुछ विशिष्ट व्याख्यान कला सीखूँ एवं तदयोग्य सामग्री प्राप्त करूँ।”

आपने कहा—राकेशजी, तुम स्वयं अच्छे व्याख्याता हो, फिर भी कुछ मुझे आना है, मैं सुनाता एवं बतलाता रहूँगा—यों कहकर आपने तुरन्त व्याख्यान के मसाले वाले पत्र उन्हें दिये और उन्हें पठकर देंगे, ऐसा परामर्श दिया।

श्री राकेश मुनि उम विशिष्ट सगृहीत व्याख्यान सामग्री को पढ़ाकर बहुत



तक विस्तृत व्याख्या कर सकता है और यह व्याख्या श्रोताओं को नित्य नई प्रतीत होगी। अतः कई विद्वानों ने इसे विश्वकोष (इन्साइक्लोपीडिया) के नाम से पुकारा है। इसको ग्रन्थ रूप देने के बाद इसकी तैयारी में १३-१४ वर्ष लगे हैं। वैसे यह ४० वर्षों का सग्रह एवं अनुभवों का निचोड़ है, सार है, नवनीत है। जब इसे गृहस्थों ने धारना (लिपिवद्ध करना) शुरू किया तो करीब छोटी-बड़ी १०० कापियों में यह ग्रन्थ पूर्ण हुआ। पाठकों को यह जानकर और आश्चर्य होगा कि यह कार्य कहीं एक स्थान पर बैठकर नहीं हुआ है। साधुचर्या के नियमानुकूल आपके अनवरत नवकल्प विहार होते रहे हैं। कभी पजाब, कभी हरियाणा, कभी वीकानेर, कभी जोधपुर आदि प्रांतों में परिक्रमण होता रहा है। साथ में काम करने वाला कोई पण्डित नहीं रहा है। जहां गए वहां के स्थानीय कार्यकर्ता ही इसमें सहयोगी बने हैं। अतः भिन्न-भिन्न कापियां भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के हाथों की लिखी हुई हैं। उसका मशोधन आदि सारा कार्य स्वयं मुनि श्री ने किया है। इन सब स्थितियों को जानकर कोई अनुभवों चित्तक आपके अदम्य उत्साह की भूरि-भूरि प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता।

### आज भी उसी उत्साह के साथ

मुनिश्री की वर्तमान वय लगभग ६४ वर्ष की है। शरीर भी काफी दुबल एवं रुग्ण रहता है। मस्तिष्क की वेदना वार-वार सताती रहती है, किन्तु आपका उत्साह आज भी वैसा का वैसा है। सुबह से शाम तक ध्याम्यानादि निजी कार्य करते हुए मुनिश्री साहित्य कार्य में भी सलग्न रहते हैं। बन्तुत साहित्य-सृजन ही आपके जीवन का व्यसन बन गया है।

ऐसे महान् उत्साही साहित्यकार मुनि-पुण्ड्र को पाकर तेरापथ मघ तो गौरवान्वित है ही, बल्कि समूचे मानव समाज को आप जैसे महामनीषियों पर सात्त्विक गर्व होना स्वाभाविक है। जैन गगनागण के ये ऐसे उज्ज्वल नक्षत्र हैं कि जिनका प्रकाश युग युगांतरों तक फैलता रहेगा। ऐसे दृढनिष्ठावान, साधना-शील, मनस्वी साहित्यिक मुनिवर्य चिरजीवी बने रहें—इसी शुभकामना के साथ।



# वक्तृत्वकला के बीज-विषयानुक्रमणिका

पहला भाग

पहला कोष्ठक

- १ मंगलाचरण
- २ मागलिक तत्व
- ३ मागलिक पद्य
- ४ देव (ईश्वर)
- ५ ईश्वर का जगत्कर्तृत्व
- चिन्तनीय
- ६ अपेक्षा से ईश्वर का कर्तृत्व
- ७ पुराणानुसार विष्णु के दस अवतार

- ८-९ प्रतिमा-निषेध
- १० प्रतिमापूजा-निषेध
- ११ पूजा
- १२ पूजा के आठ फूल
- १३ द्रव्य पूजा का रहस्य
- १४ ईश्वरीय ज्ञान एव दर्शन
- १५ भगवान का निवास
- १६ प्रभु-आज्ञा
- १७ भक्ति का स्वरूप
- १८ भक्ति की महिमा
- १९ भक्ति के भेद

पृष्ठ २० भक्ति के विषय में स्फुट विचार

- १ २१ भक्त
- २ २२ सच्चे भक्त
- ४ २३ भक्तों के लिए शिक्षा
- ६ २४ भक्तों के वश भगवान
- १३ २५ ठग भक्त
- १४ २६ इकरग-दुरगो भक्त
- १५ २७ प्रभु-भजन
- १६ २८ जप
- १७ २९ भजन विना जीवन सूना
- १८ ३० दुःख में प्रभु का स्मरण
- १९ ३१ ईश्वर की निन्दा भी

दूसरा कोष्ठक

- १ गुरु (गुरु की व्याख्याएँ)
- २ गुरु-महिमा
- ३ गुरु की आवश्यकता
- ४ गुरु-आज्ञा
- ५ गुरु-शिक्षा
- ६ गुरु क छत्तीस गुण
- ७ सुयोग्य आचार्य

पृष्ठ

३६  
३९  
४४  
४७  
४९  
५२  
५६  
५७  
६१  
६३  
६४  
६५

६

	पृष्ठ		पृष्ठ
८ आचार्य का शिष्य के प्रति कर्तव्य	८३	३१ धर्म की उत्पत्ति आदि	१३६
९ शिष्यो को आचार्य का उपदेश	८५	३२ धर्म के विविध प्रसंग	१३८
१० आचार्यों के प्रकार	८७	३३ सच्चा धर्माचरण	१४१
११ अयोग्य आचार्य	८९	३४ धर्मोपदेश किसके लिए ?	१४२
१२ गुरु भक्ति की विधि	९०	३५ धर्मोपदेश के अधिकारी	१४५
१३ विनीत शिष्य	९८	३६ विधि-अविधि में किया हुआ धर्म	१४८
१४ गुणी शिष्य के कर्तव्य	१००	३७ स्वधर्म-परधर्म	१४८
१५ अविनीत शिष्य	१०२	३८ धर्मज्ञ	१५०
१६ शिष्यो पर अनुशासन करते समय	१०२	३९ धर्मी	१५१
१७ गुरु शिक्षा के समय विनीत अविनीत शिष्यो का चिन्तन	१०४	४० दृढधर्मियो के उदाहरण	१५३
१८ गुरु की आशातना	१०६	४१ धर्म के ठेकेदार	१५५
१९ धर्म	१०८		
२० धर्म के लक्षण	११०	तीसरा कोष्ठक	
२१ जैन धर्म एवं उसका महत्त्व	११३	१ अधर्म	१५८
२२ धर्म की महिमा	११४	२ पाप	१६०
२३ धर्म की प्रेरणा	११८	३ पाप को छिपाओ मत !	१६०
२४ धर्म की आवश्यकता	१२३	४ महापाप	१६१
२५ धर्म के फल	१२८	५ पापी	१६१
२६ धर्म के भेद	१२८	६ पाप-निवृत्ति का उपदेश	१६८
२७ धर्म में धर्म नहीं,	१३१	७ पाप का पञ्चात्ताप	१७०
२८ दुष्प्राप्य धर्म	१३२	८ पाप के प्रकार	१७०
२९ धर्म प्राप्ति के उपाय	१३३	९ पाप-बन्ध	१७१
३० धर्म समझने के वाद	१३४	१० अहिंसा	१७१
		११ अहिंसा की महिमा	१७८
		१२ अहिंसा के फल	१८१
		१३ अहिंसा का उपदेश	१८३



७ ब्रह्मचारी शिक्षा	१२	३१ पति-पत्नी का सहवास	
८ ब्रह्मचर्य की नव गुप्तिया (वाहें)	१५	अनियमित न हो	७०
९ ब्रह्मचर्य-सम्बन्धी उदाहरण	१८	३२ सहवास के लिए निषिद्ध	
१० अवब्रह्मचर्य	२०	समय एव ग्यान	७१
११ विषय-वामना	२३	३३ अतिसहवास का निषेध	७४
१२ काम	२७	३४ गर्भाधान के विषय में विवेक	७६
१३ काम के भेद	३०	<b>दूसरा कोष्ठक</b>	
१४ भोग	३४	१ परस्त्री गमन-निन्दा एव	
१५ काम-भोग	३७	निषेध	७८
१६ कामासक्त	३९	२ परस्त्रीगामी	८०
१७ कामान्धो के उदाहरण	४२	३ परस्त्री-त्यागी	८२
१८ विवाह		४ पति का सर्वस्व पत्नी	८५
१९ विवाह का प्रभाव	४५	५ पतिव्रता एव साध्वी स्त्री	८७
२० विवाह का नमय	४६	६ कुमार्या	९१
२१ विवाह किसके माय ?	४९	७ पतिव्रता के लिए पति-	
२२ कन्यादान	५१	सर्वस्व	९३
२३ विवाह के भेद	५४	८ अनेक पति-प्रथा	९५
२४ विवाह के मय	५६	९ सती-प्रथा	९६
२५ वैवाहिक रीति-रिवाज		१० कुमार्या	९७
का रहस्य	५८	११ कुलटा स्त्री	९९
२६ विवाह के विचित्र रूप	५९	१२ स्त्री-व्रभाव	१०२
२७ पुनर्विवाह	६५	१३ स्त्री के दोष	१०४
२८ विवाह मग्वन्धी कहावते	६७	१४ स्त्री के लिए निकृष्ट	
२९ वीद-वीदणो की अद्भुत	६८	उपमाएँ	१०६
जोड़ी	६८	१५ स्त्री की निरकुण्ठता	११०
३० पति-पत्नी की एकता	६९	१६ श्रिया की सफलता	११०

	पृष्ठ		पृष्ठ
१७ सुस्त्री-प्रणसा	११४	२ सतोष से लाम	१७१
१८ स्त्री-सम्मान	११७	३ सतोष का उपदेश	१७२
१९ स्त्री-नाश के कारण	११९	४ सतोषी	१७४
२० स्त्री घन	१२१	५ असतोष	१७६
२१ स्त्री के विषय में कहावतें	१२२	६ लोभ	१७८
२२ वेश्या-निन्दा	१२४	७ लोभ त्याग	१८१
२३ लन्दन में सवा लाख		८ लोभी	१८२
वेश्याएँ		९ क्षमा	१८५
२४ अपरिग्रह	१२७	१० क्षमा का उपदेश	१८८
२५ आवश्यकता	१२९	११ क्षमावान्	१९१
२६ परिग्रह	१३०	१२ असह्य बातें	१९२
२७ परिग्रह के प्रकार	१३२	१३ क्षमा के उदाहरण	२००
२८ आशा	१३५	१४ क्षमापना	२०५
२९ आशा की प्रणसा	१३७	१५ शम (शान्ति)	२०६
३० इच्छा	१४३	१६ शान्ति की महिमा	२११
३१ विविध इच्छाएँ	१४५	१७ शान्त	२१३
३२ निस्पृहता	१४८	१८ समता	२१५
३३ A वृष्णा	१५१	१९ क्रोध	२१७
३३ B वृष्णाविजय	१५३	२० क्रोध के दुर्गुण	२२१
३४ आसक्ति	१६०	२१ क्रोध की उत्पत्ति आदि	२२२
३५ ममता	१६२	२२ क्रोध की स्थिति	२२६
३६ ममता और समता	१६४	२३ क्रोध-त्याग	
३७ ममता के विषय में	१६६	२४ क्रोधी	
कहावतें		२५ क्रोध पर काबू पाने वाले	
		महापुरुष	
		१६७	
		२६ वैर	
		२७ वैर-त्याग	
		१६८	

	पृष्ठ		पृष्ठ
२८ वैरी	२३४	२१ प्रेम	२८२
२९ वैरी के साथ व्यवहार	२३६	२२ सहज एव सच्चा प्रेम	२८५
३० वैर के बदले	२३९	२३ प्रेम की महिमा	२८६
		२४ प्रेम-बन्धन	२८७
<b>चौथा कोष्ठक</b>		२५ प्रेम का निर्वाह	२८८
१ ईर्ष्या	२४२	२६ प्रेम का नाश	२९०
२ ईर्ष्यालु	२४४	२७ प्रेम के भेद	२९१
३ ईर्ष्या मन्वन्धी दृष्टान्त और कहावतें	२४६	२८ प्रेम की प्रेरणा	२९२
४ कलह	२४९	२९ प्रेमी	२९४
५ कलह से हानि	२५१	३० जाति प्रेम के उदाहरण	२९७
६ कलहकर्ता	२५३	३१ मोह	२९८
७ पैशून्य (चुगली)	२५५	३२ मोहक्षय	३००
८ पिशुन (चुगल)	२५६	३३ मित्र	३०३
९-A अम्याग्यान	२५७	३४ मित्र के गुण-दोष	३०६
९-B निन्दा	२५८	३५ सुमित्र एव सच्चा मित्र	३०७
१० निन्दा-निषेध	२६०	३६ मित्र की आवश्यकता	३१०
११ निन्दा में समभाव	२६२	३७ कुमित्र	३११
१२ आत्मनिन्दा	२६४	३८ मित्र बनाने के विषय में	३१३
१३ निन्दक	२६६	३९ मित्रता	३१६
१४ द्वेष	२६८	४० मित्रता एव दुष्टता की मित्रता	३१८
१५ राग	२७०	४१ मित्रता न करने योग्य व्यक्ति	३२०
१६ अनुरागी	२७२	४२ मित्रता की प्रेरणा	३२१
१७ राग-द्वेष	२७४	४३ सगठन	३२२
१८ राग-द्वेष के क्षय में लाभ	२७६	४४ निन्तता	३२८
१९ स्नेह	२७९		
२० स्नेह-त्याग	२८१		

वक्तृत्वकला के बीज भाग दसवाँ

पृष्ठ	पृष्ठ
२५ इज्जत-सम्मान	४४
२६ सम्मान की इच्छा का निषेध	४६
१ २७ प्रशंसा	५०
२ २८ आत्मस्तुति (स्व-प्रशंसा) निषेध	५२
४ २९ स्वप्रशंसक	५४
५ ३० रयाति-प्रसिद्धि	५५
७ ३१ यश-कीर्ति	५८
८ ३२ आर्जव-सरलता	६०
९ ३३ सरल एव कुटिल व्यक्ति	६२
१० ३४ माया-कपट	६३
११ ३५ मायावी व्यक्ति	६५
१२ ३६ माया-त्याग	६७
१३ ३७ कषाय	६९
१५ ३८ कषाय-त्याग	७१
१७ ३९ मदकषायी-तीव्रकषायी	७५
१९ ४० प्रमाद-आलस्य	७८
२१ ४१ प्रमाद के भेद	७९
२३ ४२ प्रमाद-त्याग	८१
२४ ४३ प्रमादी (आलसी)	८३
२७ ४४ प्रमादी के विषय में कहावतें	८३

तीसरा भाग  
पहला कोष्ठक

१ विनय की परिभाषा
२ विनय की महिमा
३ विनय का उपदेश
४ विनय के भेद
५ विनीत
६ अविनीत
७ नम्रता
८ नम्रता से लाभ
९ नम्र
१० वन्दना
११ नमस्कार
१२ लघुता
१३ अभिमान
१४ अभिमान के दुर्गुण
१५ तू-मैं
१६ अभिमान के भेद आदि
१७ मान-त्याग
१८ व्यर्थ अभिमान
१९ तुच्छ व्यक्तियों में अधिक अभिमान
२० अभिमानी
२१ अभिमान के उदाहरण
२२ अपमान
२३ अपमान-निषेध
२४ महत् पुरुषों का घन—मान

दूसरा कोष्ठक

२९ १ निद्रा
३१ २ निद्रा से लाभ
३३ ३ निद्रा-निषेध
३७ ४ सोने का समय
३९ ५ स्वप्न

	पृष्ठ		पृष्ठ
६ निद्रा के भेद	१००	३३ गरज	१४७
७ नीद की अद्भुत करतूतें	१०१	३४ हाँजीडे (खुशामदी)	१४८
८ जागरण	१०२	३५ भूल	१४९
९ जागृत और मुप्त	१०५	३६ भूल पर हास्य	१५१
१० चिन्ता	१०७	३७ भूलसुधार	१५२
११ चिन्ता मे हानि	१०८	३८ भूल को स्वीकार	१५४
१२ चिन्ता-निषेध	११०	करना कठिन	
१३ शोक	११२	३९ भूल के विषय मे	
१४ शोक-निषेध	११४	विविध	१५६
१५ घृणा	११७	४० भयकर भूलें	१५८
१६ रोदन	११८	४१ हठ (आग्रह)	१६०
१७ आसू	१२१	४२ रिवाज (रूढि)	१६२
१८ भय	१२२	४३ प्रसन्नता (खुशमिजाजी)	१६५
१९ भय आवश्यक	१२४	४४ प्रसन्न	१६६
२० अभयदाता	१२५		
२१ भयभीत	१२७	तीसरा कोष्ठक	
२२ भय सम्बन्धी कहावते	१२८	१ वैराग्य	१६८
२३ भय सम्बन्धी दृष्टान्त	१२९	२ वैराग्य की महिमा	१६९
२४ हास्य	१३१	३ वैराग्यवान	१७१
२५ हास्य-निषेध	१३३	४ ज्ञान (ज्ञान की	
२६ उपहास-मजाक-विनोद	१३४	उत्पत्ति-आदि)	१७३
२७ उपहास-निषेध	१३६	५ ज्ञान की आवश्यकता	१७६
२८ लज्जा	१३८	६ ज्ञान से लाभ	१७८
२९ लज्जा-निषेध	१४०	७ ज्ञान की महिमा	१८०
३० निर्लज्ज	१४२	८ ज्ञान का उपदेश	१८२
३१ स्वार्थ	१४३	९ ज्ञान के भेद	१८४
३२ मतलब	१४५	१० सम्यग्ज्ञान	१८६



वक्तृत्वकला के बीज भाग दसवाँ

	पृष्ठ		पृष्ठ
११ अतिज्ञान और अल्प ज्ञान	१८८	३ बुद्धि के भेद	२५४
१२ ज्ञानी	१९०	४ सुबुद्धि एव कुबुद्धि	२५७
१३ विज्ञान एव वैज्ञानिक	१९४	५ बुद्धि एव उसके फल	२५८
१४ ज्ञान और क्रिया	२०५	और गुण	
१५ विना ज्ञान की क्रिया	२०८	६ अकल के विषय में	२६०
१६ अज्ञान	२०९	कहावतें	२६२
१७ अज्ञानी	२११	७ बुद्धिमत्ता	२६४
१८ ज्ञानी-अज्ञानी में अन्तर	२१५	८ बुद्धिमान	२६६
१९ विद्या	२१७	९ विभिन्न बुद्धि वाले व्यक्ति	२७०
२० विद्या की महिमा	२१८	१० बुद्धिमानों के कर्तव्य	
२१ विद्याप्राप्ति के साधन	२२०	११ बुद्धिमान एव मूर्ख में	
२२ विद्याध्ययन की प्रेरणा	२२३	अन्तर	२७२
२३ विद्या की आवश्यकता	२२५	१२ पण्डित	२७४
२४ विद्या के पात्र-अपात्र	२२७	१३ पण्डितों की विशेषता	२७६
२५ विद्या के भेद	२२९	१४ परोपदेश-कुशल पण्डित	२७८
२६ विद्यार्थी	२३१	१५ चतुर	२८०
२७ विद्यार्थी और परीक्षा	२३३	१६ हाजिर जवाब	२८२
२८ शिक्षा	२३६	१७ मूर्ख	२८७
२९ शिक्षा-ग्रहण	२३८	१८ मूर्ख को उपदेश	२८९
३० शिक्षादान	२४२	१९ मूर्खों की मान्यता	२९३
३१ शिक्षा के योग्य-अयोग्य	२४३	२० निन्दनीय मूर्खजीवन	२९४
पात्र	२४५	२१ मूर्ख का सग त्याज्य	२९५
३२ महत्त्वपूर्ण शिक्षाएँ		२२ मूर्खता	२९७
		२३ मूर्खता के उदाहरण	३०२
		चौथा भाग	
		पहला कोष्ठक	
		१ विवेक	

चौथा कोष्ठक

१ विद्वान

२ बुद्धि का महत्त्व

	पृष्ठ		पृष्ठ
२ विवेक-महिमा	२	२६ निर्भीक कवि गग	४२
३ विवेकी	३	२७ प्राचीन एव आधुनिक	
४ अविवेकी	४	कवि	५१
५ विवेकहीन	६	२८ महान् कवि	५२
६ चिन्तन-मनन	७	२९ कल्पना	५४
७ विचार	८	३० कल्पना के उदाहरण	५६
८ सम्मति	१२	३१ कहावतें	६१
९ सलाह लेना जरूरी	१४	३२ साहित्य	६२
१० सलाह के विषय में विविध	१५	३३ इतिहास	६४
११ उपदेश	१८	३४ मयोजक	६५
१२ कला	२१	३५ लेखक	६७
१३ विविध कलाएँ	२२	३६ बुरे लेखक	७०
१४ कविता	३२	३७ लेखनी	७०
१५ कविता का महत्त्व	३३	३८ अध्ययन	८१
१६ अच्छी कविता	३४	३९ स्वाध्याय	७३
१७ कविता-विरोध	३७	४० जनाध्याय	७६
१८ कवि	३९	४१ अधिक अध्ययन	७७
१९ कवि-प्रशंसा	४१		
२० कवियों की प्रकृति	८२	दूसरा कोष्ठक	
२१ कवियों की शक्ति	४३	१ पुस्तक (शास्त्र)	७८
२२ कवियों के लिये		२ पुस्तकों का चयन	८०
विचारणीय बातें	४५	३ विभिन्न दर्शनों के	
२३ निन्दनीय कवि	६६	धर्मग्रन्थ	८१
२४ विभिन्न भाषाओं के		४ प्रामाणिक ग्रन्थ	८३
महान् कवि	५३	५ युक्ति एव न्याय में ग्रन्थों की	
२५ रसिक श्रोताओं के अभाव		प्रामाणिकता	८५
में कवि	४८	६ पुस्तक-प्रकाशन	८७

७ विश्व के प्रख्यात पुस्तकालय

८ अनुभव

९ अनुभवहीन

१० परीक्षा

११ परीक्षा आवश्यक

१२ परीक्षा-विधि

१३ परीक्षा का समय

१४ दर्शन

१५ नास्तिक

१६ नास्तिकों का कथन

१७ नास्तिकों का कथन

१८ सम्यक्दर्शन-सम्यक्त्व

१९ सम्यक्त्व की दुर्लभता

२० सम्यक्त्व से लाभ

२१ सम्यक्त्व का महत्त्व

२२ सम्यग्दृष्टि

२३ श्रद्धा

२४ श्रद्धावान्

२५ अश्रद्धावान् (शकाशील)

२६ सशय

२७ विश्वास

२८ विश्वास के अयोग्य

२९ विश्वासघात

३० मिथ्यादर्शन

३१ मिथ्यात्व के भेद

३२ मिथ्यादृष्टि

पृष्ठ

तीसरा कोष्ठक

६०

१ तत्त्व

६२

२ द्रव्य

६६

३ नय-प्रमाण

६६

४ निश्चय-व्यवहार नय

१००

५ स्याद्वाद

१०१

६ उत्सर्ग-अपवाद

१०४

७ सिद्धान्त

१०६

८ चारित्र्य

११०

९ चारित्र्य का महत्त्व

१११

१० ज्ञान के साथ चारित्र्य

११३

आवश्यक

११४

११ चारित्र्य की रक्षा

११८

१२ चारित्र्य से लाभ

११९

१३ त्याग

१२०

१४ त्याग के भेद

१२३

१५ त्यागी

१२७

१६ प्रत्याख्यान

१२९

१७ आचार (आचरण)

१३१

१८ आचरण विना ज्ञान

१३४

१९ आचारवान्

१३६

२० आचारहीन

१३९

२१ कथन के समान आचरण

१४२

आवश्यक

१४३

२२ शील

१४४

२३ व्रत

१४७

१४८

१५०

१५४

१५५

१५६

१६१

१६३

१६५

१६७

१७०

१७२

१७६

१७७

१७८

१८०

१८१

१८४

१८८

१८९

१९२

१९३

१९६

१९८

	पृष्ठ		पृष्ठ
२४ महाव्रत	२०२	१८ सन्त	२६४
२५ सभ्यता	२०४	१९ कतिपय जगत्प्रसिद्ध	
२६ योग	२०६	सन्त-महात्मा	२६७
२७ योगमहिमा	२०८	२० साधुओं के गुण	२८५
२८ योगी	२११	२१ साधुसगति	२८७
२९ योगियों के चमत्कार	२१५	२२ सन्तों का सन्ताप	२८९
		२३ साधुओं की गोचरी	२९१
चौथा कोष्ठक		२४ गोचरी के भेद	२९५
१ सयम	२२०	२५ गोचरी के नियम	२९६
२ सयम से लाम	२२४	२६ साधु का आहार	३०२
३ सयम की दुष्करता	२२६	२७ आहार किसलिये ?	३०५
४ सयम में सुख-दुःख	२२८	२८ साधुओं का निवास-	३०८
५ सयम (दीक्षा) का		स्थान	
समय आदि	२२९	२९ साधुओं के वस्त्र	३१०
६ सयम में भ्रष्ट होने के		३० साधुओं के पात्र	३१२
अठारह स्थान	२३१	३१ साधुओं का विहार	३१४
७ सयम के भेद	२३४	३२ साधु की भाषा	३१७
८ साधना	२३८	३३ साधुओं के लिए कल्प-	
९ साधु	२३९	अकल्प	३२२
१० मुनि	२४३	३४ साधुओं के सुख	३२५
११ अनगार	२४७	३५ साधुओं के वारह सम्भोग	
१२ निक्षु	२५०	और उनका विच्छेद	३२७
१३ श्रमण	२५२	३६ साधुओं को शिक्षा	३२८
१४ निर्ग्रन्थ	२५४	३७ नामधारी साधु	३३०
१५ न्यविर	२५८	३८ पापी साधु	३३२
१६ तापन	२६१	३९ कन्दर्पादि में लीन	
१७ फकीर	२६०	साधुओं की गति	३३५

वक्तृत्वकला के बीज भाग दसवाँ

पृष्ठ

पृष्ठ

दूसरा कोष्ठक

पाचवा भाग  
पहला कोष्ठक

१ श्रावक (श्रावक की पूर्व भूमिका)

२ श्रावक का स्वरूप

३ श्रावक के गुण

४ श्रावक-धर्म

६ सामायिक

७ सामायिक के विषय में विविध

८ सामायिक का प्रभाव

९ नाम की सामायिक

१० पौषघ

११ तप

१२ तप से लाभ

१३ तप कैसे और किसलिए ?

१४ तप के भेद

१५ अनशन

१६ उपवास

१७ प्रायश्चित्त

१८ प्रायश्चित्त के भेद

१९ आलोचना

२० आलोचना के विषय में विविध

२१ आलोचना के दोष

२२ आवश्यक

२३ वैयावृत्य

१ ध्यान

२ ध्यान से लाभ

३ ध्याता (ध्यान करने वाला)

४ स्वाध्याय-ध्यान की प्रेरणा

५ समाधि

६ आहार

७ भोजन

८ भोजन की विधि

९ भोजन कैसा हो ?

१० भोजन के भेद

११ भोजन में आवश्यक तत्व

१२ रासायनिक तुलनात्मक

चार्ट

१३ भोजन का व्येय

१४ भोजन की शुद्धि

१५ भोजन का समय

१६ भोजन के समय दान

१७ भोजन के बाद

१८ भोजन की मात्रा

१९ मितभोजन

२० अतिभोजन

२१ अधिक खाने वाले आदमी

२२ राक्षसी खुराक वाले व्यक्ति

२३ मुफ्त का खाने वाले

२४ रात्रिभोजननिषेध

२५ रात्रिभोजन से हानि

६७

७४

७६

७८

८०

८१

८४

८५

८८

८९

९१

९५

९६

१०१

१०२

१०३

१०५

१०७

१०८

११०

११२

११४

११७

११९

१२१

१२२

	पृष्ठ		पृष्ठ
२६ रात्रिभोजन के त्याग से लाभ	१२७	१८ ससार का पागलपन	१७१
२७ भूख	१२८	१९ ससार का स्वभाव	१७४
२८ भूख में स्वाद	१३०	२० दृष्टि के समान सृष्टि	१७६
२९ भूखा	१३०	२१ ससार की उपमाएँ	१८०
३० भूखा क्या नहीं करता ?	१३३	२२ दुनिया की ताकत	१८३
३१ पेट	१३४	२३ जगत को वश करने का उपाय	१८४
३२ पानी	१३८	२४ ससार की विशालता	१८६
तीसरा कोष्ठक		२५ नरक-ससार	१९०
१ मोक्ष (मुक्ति)	१४२	२६ नरक के दुःख	१९३
२ मोक्ष की परिभाषाएँ	१४३	२७ नरक में जाने के कारण	१९६
३ मोक्षस्थान	१४५	२८ नरकगामी कौन ?	१९७
४ मोक्ष-मार्ग	१४७	२९ देव-ससार	२००
५ मोक्ष के साधन	१४८	३० दैविक चमत्कार की विचित्र बातें	२०३
६ मोक्षगामी कौन ?	१५०		
७ मुक्त आत्मा	१५२	चौथा कोष्ठक	
८ मिद्ध भगवान	१५३	१ तिर्यञ्च ससार	२१७
९ मुक्ति के सुग	१५६	२ आश्चर्यकारी तिर्यञ्च	२२१
१० ससार	१५७	३ दृश्यमान विश्व में पशु-पक्षी	२३१
११ ससार का स्वरूप	१५९	४ मनुष्य-ससार	२३८
१२ ससार के भेद	१६१	५ मनुष्य का स्वभाव	२३५
१३ दुःख रूप ससार	१६३	६ मनुष्य का कर्तव्य	२३८
१४ सब को दुःख	१६६	७ मनुष्य के लिये शिक्षाएँ	२३८
१५ सुग-दुःखमय ससार	१६७	८ मनुष्य का महत्त्व	२४०
१६ गतानुगतिक ससार	१६९	९ मनुष्य की दम अवस्थाएँ	२४१
१७ परिवर्तनशील ससार	१७०	१० मनुष्य के प्रकार	२४६



	पृष्ठ		पृष्ठ
३१ उतावल	७३	१४ गुणो मे दोष	१२३
३२ तेजस्वी-पुरुष	७५	१५ दृष्टिदोष एव उसके	
३३ समर्थ-पुरुष	७७	आश्चर्य	१२४
३४ शूर-वीर पुरुष	७८	१६ उपकार-अहसान	१२६
३५ कायर	८१	१७ परोपकार	१२८
३६ शूरता और कायरता	८३	१८ प्रत्युपकार (उपकार	
३७ बलवान व्यक्ति	८४	का बदला)	१३०
३८ अद्भुत बलिष्ठ व्यक्ति	८६	१९ कृतज्ञता और कृतज्ञ	१३२
३९ निर्बल	८८	२० परोपकारी	१३३
४० बल-पराक्रम	९०	२१ निरूपकारी	१३५
४१ कुलीन पुरुष	९२	२२ कृतघ्न	१३६
		२३ उदार और उदारता	१३८
		२४ दाता	१३९
<b>दूसरा कोष्ठक</b>		२५ दाता के उदाहरण	१४२
१ गुण	९४	२६ दान	१४३
२ गुणो का महत्त्व	९६	२७ दान की महिमा	१४४
३ विभिन्न प्रकार के गुण	९८	२८ दान की प्रेरणा	१४६
४ गुणो का नाश एव		२९ दान मे विवेक	१४९
प्रकाश	१०२	३० दान के भेद	१५२
५ गुणज्ञ	१०३	३१ अमयदान	१५४
६ गुणी	१०४	३२ मुपात्रदान	१५६
७ गुणग्राहक बनो !	१०६	३३ कुपात्रदान	१५८
८ गुणग्राही के अभाव मे	१११	३४ पात्र-कुपात्र	१६०
९ गुणहीन	११०	३५ ज्ञान-दान	१६२
१० गुणशून्य नाम	११४	३६ कृपण	१६३
११ दोष	११६	३७ याचक	१६८
१२ स्वदोष	११९	३८ याचना	१७१
१३ पर-दोष	१२१		





	पृष्ठ		पृष्ठ
१७ आत्मा की महिमा	२६६	४२ मन के विषय में विविध	३१६
१८ आत्मा के भेद	२७०	सातवा भाग	
१९ इन्द्रियाँ	२७२	पहला कोष्ठक	
२० इन्द्रियो की शक्ति	२७४	१ भावना	१
२१ इन्द्रियदमन	२७६	२ भावना की प्रमुखता	३
२२ जितेन्द्रिय	२७८	३ भावनानुसार फल	४
२३ कान और बधिरता	२७९	४ भावना से लाभ	६
२४ आँखें	२८१	५ भावना के भेद	७
२५ अघा	२८३	६ अनित्य-भावना	८
२६ जिह्वा	२८५	७ असरण-भावना	११
२७ मन	२८८	८ एकत्व-भावना	
२८ मन का स्वभाव	२९१	९ मापा (वाणी)	१६
२९ मन के आश्रित बन्ध-		१० देशी-विदेशी मापा	१७
मोक्षादि	२९२	११ विश्व की मापाओं के विषय	
३० मन की मुख्यता	२९४	में ज्ञातव्य	१८
३१ मन के बिना कुछ नहीं	२९७	१२ मापा के प्रकार	२१
३२ मन शुद्धि (मन का		१३ वाणी का फल	२२
निरोक्षण आवश्यक)	२९९	१४ वाणी की महिमा	२३
३३ मन शुद्धि दुष्कर	३०१	१५ वाणी का प्रभाव	२४
३४ मन शुद्धि के अभाव में	३०२	१६ क्रिनु शब्द की करामात	२६
३५ मन की शिक्षा	३०३	१७ वाणी-वाणी में अन्तर	३०
३६ मनोनिग्रह	३०४	१८ मीठी वाणी	३३
३७ मनोनिग्रह के मार्ग	३०६	१९ नुमानित-भक्ति	३६
३८ मनोनिग्रह में लाभ	३०८	२० प्रोलने योग्य वाणी	३८
३९ मन का तार	३१०	२१ विचान्गुप्त वाणी	४०
४० विल पात्र (दृष्ट मवल्प)	३१२	२२ ममवोपयोगी वाणी	४२
४१ मन की उपमाएँ	३१३	२३ सक्षिप्त वाणी	४५



	पृष्ठ		पृष्ठ
६ वस्त्र-आभूषण	१३५	३३ बालको के निर्माण की	
१० स्वास्थ्य-आरोग्य	१३८	कुछ विधियाँ	१७६
११ स्वास्थ्य-नीरोग	१४०	३४ जन्म-मृत्यु एव बालमृत्यु	१७८
१२ रोग	१४३	३५ बालको को विगाडने एव	
१३ रोग के प्रकार	१४५	मुधारने वाले अभिभावक	१८०
१४ रोगी	१४७	३६ बालको की सरलता	१८८
१५ रोगी की सेवा	१४९	३७ बालको की उच्छृंखलता	१९१
१६ औपधि	१५०	३८ आश्रयकारी बालक-	
१७ कतिपय औपधियाँ	१५१	वालिकाएँ	१९०
१८ उत्तम औपधियाँ	१५३		
१९ पथ्य	१५४	<b>चौथा कोष्ठक</b>	
२० वैद्य	१५५	१ यौवन	१९६
२१ वैद्यो के प्रकार	१५७	२ यौवन का अनर्थकारित्व	१९८
२२ श्रेष्ठ वैद्य	१५८	३ जरा (वृद्धावस्था)	१९९
२३ निकृष्ट वैद्य	१५९	४ वृद्ध	२०२
२४ चिकित्सा	१६१	५ वृद्धो का सम्मान	२०५
२५ आयुर्वेद एव नाटी-		६ वृद्धो के प्रकार	२०७
विज्ञान आदि	१६४	७ वृद्ध ऐसा चिन्तन करें ।	२०९
२६ जन्म	१६६	८ जीवन	२११
२७ जन्म सम्बन्धी अनोनी		९ जीवन के हेतु आदि	२१३
प्रयाण	१६७	१० जीवन की अन्वियग्ना	२१४
२८ पुनर्जन्म की वास्तविकता	१६८	११ जीवन में नाम	२१६
२९ गर्भ	१७३	१२ श्रेष्ठ जीवन	२१७
३० नीलह मन्ता	१८५	१३ निकृष्ट जीवन	२२०
३१ बालक	१७६	१४ आयु	२२०
३२ बालको के गुण जी-		१५ लम्बी आयु वाले व्यक्ति	२२५
दोष		१६ कतिपय देगो की औसत आयु	२२६

१७ आयु क्षय	२३१	८ कलिकाल के प्रभाव से	२२
१८ मरण	२३४	वस्तुओं के मूल्य में	
१९ मृत्यु की निर्दयता	२३६	उत्तरोत्तर वृद्धि	
२० मृत्यु की अप्रियता	२३८	९ कलिकाल के प्रभाव	२६
२१ मृत्यु-विज्ञान	२३९	में न आनेवाले	२७
२२ मृत्यु का भय	२४०	१० भविष्य की सूचनाएँ	
२३ मरते समय भी निर्भय	२४१	११ स्वरो का रहस्य एवं उनके	
२४ उत्तम मरण	२४२	आधार पर भविष्य की	
२५ अमरत्व	२४३	सूचनाएँ	२९
२६ मरने के बाद	२४४	१२ समय	३४
२७ मरने के भेद आदि	२४८	१३ समय की कीमत	३५
२८ आत्महत्या	२५०	१४ समय का सदुपयोग	३७
२९ अन्तिम सस्कार की		१५ समयानुसार काम	४१
अनोखी प्रथाएँ	२५२	१६ आज का काम कल पर	४३
आठवा भाग		मत छोड़ो ।	
पहला कोष्ठक	१	१७ कल का काम आज ही	४६
१ काल		कर लो ।	४७
२ जैनमिद्धान्तानुसार काल	३	१८ थोड़ी-सी देर से नुकसान	४९
के भेद		१९ गया वक्त वापस नहीं आता	५०
३ पौराणिक-काल गणना	८	२० अवसर	५१
पद्धति		२१ अवसर चूकने के बाद	५७
४ सुषम-दुषम काल के	१०	२२ परिस्थिति	५८
लक्षण		२३ स्वभाव	६०
५ सुभिक्ष-दुभिक्ष के लक्षण	१२	२४ वस्तुओं का स्वभाव	६३
६ कलिकाल के कौतुक	१५	२५ स्वभाव का परिवर्तन कठिन	६५
७ कलिकाल में प्रभावित		२६ स्वभाव न छोड़ने वाले	६६
भारत की स्थिति	१९	२७ स्वभाविकता नहीं छिपती	६७

मानुक्रमिका भाग ८ कोष्ठक २

पृष्ठ

पृष्ठ	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
११	६७	२१ रामकृष्ण परमहंस का	१०७
२५	६६	अद्भुत अम्याम	१०८
३५	७१	२२ कारण	१०९
४५	७३	२३ काम (कर्म)	१११
५५		२४ काम का महत्त्व	११२
६५		२५ अच्छा काम	११३
७५		२६ करने योग्य काम	११५
८५		२७ न करने योग्य काम	११८
९५		२८ व्यर्थ काम	१२१
१०५		२९ निकम्मा-बेकार	१२४
११५		३० विचारपूर्वक काम	१२५
१२५		३१ अपना-पराया काम	१२७
१३५		३२ यथाशक्ति काम	१२९
१४५		३३ अति काम	१३०
१५५		३४ अतिपरिचय अपमान	१३४
१६५		का हेतु	१३५
१७५		३५ उल्टा काम	१३६
१८५		३६ मनचाहा काम	१३७
१९५		३७ हाथ कमाया काम	१४०
२०५		३८ दो-दो काम नहीं होते	१४१
२१५		३९ एक पच, दो काज	१४२
२२५		४० काम को अधूरा	१४३
२३५		मन रखो ।	१४५
२४५		४१ कार्य-निष्ठि	१४६
२५५		४२ कार्य की अमिद्धि	१४७
२६५		४३ कर्तव्य	१४८
२७५		४४ विशेष कर्तव्य	१४९
२८५			
२९५			
३०५			
३१५			
३२५			
३३५			
३४५			
३५५			
३६५			
३७५			
३८५			
३९५			
४०५			
४१५			
४२५			
४३५			
४४५			
४५५			
४६५			
४७५			
४८५			
४९५			
५०५			
५१५			
५२५			
५३५			
५४५			
५५५			
५६५			
५७५			
५८५			
५९५			
६०५			
६१५			
६२५			
६३५			
६४५			
६५५			
६६५			
६७५			
६८५			
६९५			
७०५			
७१५			
७२५			
७३५			
७४५			
७५५			
७६५			
७७५			
७८५			
७९५			
८०५			
८१५			
८२५			
८३५			
८४५			
८५५			
८६५			
८७५			
८८५			
८९५			
९०५			
९१५			
९२५			
९३५			
९४५			
९५५			
९६५			
९७५			
९८५			
९९५			
१००५			

वक्तृत्वकला के बीज - भाग दसवाँ

पृष्ठ  
२००

- ४५ व्यवहार
- ४६ लोकव्यवहार
- ४७ लोकप्रियता

तीसरा कोष्ठक

१ कर्म	१४८	२२ सासारिक सुख	२०३
२ स्वकर्म ही सुख-दुख के दाता	१४९	२३ सुख में धर्म की विस्मृति	२०४
३ कर्मानुसार फल	१५१	२४ दुख के बाद सुख	२०६
४ कर्मों का अवश्य भोग	१५३	२५ सुख के भेद	२०८
५ कर्मकर्ता के पीछे-पीछे	१५५	२६ सुख का स्रोत	२१२
६ कर्मों की विचित्र गति	१५७	२७ सुखी	२१३
७ कर्म-बन्ध	१५९	२८ सुख-दुख	२१४
८ कर्म-क्षय के बाद	१६१	२९ मन के पीछे सुख-दुख	२१६
९ विधि-भाष्य	१६२	३० सुख-दुख का जोड़ा	२१७
१० भाष्यानुसार लाभ	१६४	३१ दुख	२१८
११ विधि की विचित्रता	१६६	३२ दुख की अधिकता	२२०
१२ सद्भाष्य-पुण्योदय	१६८	३३ महात्मा दुख	२२२
१३ भाष्यवान	१७०	३४ दुख में दुख	२२३
१४ दुर्भाग्य-भाष्योदय	१७३	३५ दुख के भेद	२२५
१५ भाष्यहीन	१७४	३६ दुख का महत्त्व	२२६
१६ भवितव्यता-होनहार	१७६	३७ आपत्ति	२२७
१७ भवितव्यता के दृष्टान्त	१८०	३८ दुखनाश के उपाय	२२८
१८ आनन्द	१८२	३९ दुखी	२२९
१९ आनन्द की स्थिति	१८५	४० पर दुख से दुखी	२३१
२० सुख	१८७	४१ कठिनाई	२३२
२१ वास्तविक सुख	२००	४२ दुविधा	२३३
		४३ कमी	२३४
		४४ तितिक्षा सहनशीलता	२३५
		४५ सयोग के साथ वियोग	२३६
		४६ सहयोग	२३७
		४७ सहारा-सहानुभूति	२३८

	पृष्ठ		पृष्ठ
		२३ सन्तान	२८४
चौथा कोष्ठक		२४ अधिक सन्तान कष्ट का	
१ गृहस्थ	२३६	कारण	२८६
२ गृहस्थ को शिक्षा	२३६	२५ अधिक सन्तान वाले	
३ प्रशसनीय-गृहस्थाश्रम	२४१	मा-बाप	२८७
४ निन्दनीय-गृहस्थाश्रम	२४२	२६ पुत्र	२८६
५ अतिथि-सत्कार	२४४	२७ माता-पिता के अनुरूप पुत्र	२६१
६ अतिथि के लक्षण	२४६	२८ पुण्यो से पुत्र प्राप्ति	२६४
७ मेहमान (पाहुना)	२४७	२९ पुत्र के विना	२६५
८ घर	२४६	३० पुत्रों के लिये अनर्थ	२६६
९ स्थान	२५१	३१ मुपुत्र	२६८
१० स्थान भ्रष्ट	२५३	३२ कुपुत्र	३००
११ स्थान-त्याग	२५५	३३ शत्रु के रूप में पुत्र	३०२
१२ भारत के कुछ दर्शनीय- स्थान	२५७	३४ मुपुत्र-कुपुत्र	३०३
१३ कला के लिए प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान	२६२	३५ पुत्रों के प्रकार	३०४
१४ जन्मभूमि-स्वदेश	२६६	३६ पुत्री-कन्या	३०६
१५ देश भक्त	२६८	३७ पुत्री की विदाई	३०७
१६ देश-विशेष के दोष गुण	२७०	३८ पुत्री के योग्य-अयोग्य वर	३०६
१७ स्वपक्ष	२७२	३९ जामाता-दामाद	३१०
१८ स्वजन-शांति	२७३	४० सनुराल	३११
१९ माता	२७७	४१ बहू	३१२
२० पिता	२८१	४२ विनीत बहू की सेवा और अमर सुहाग	३१५
२१ माता-पिता	२८२	४३ भाना-भार्य	३१७
२२ पुत्र के प्रति माना-पिता का कर्तव्य	२८३	नौवा भाग प्रथम कोष्ठक १ शाह्य	१



वक्तृत्वकला १०

पृष्ठ

४

३६

२	ब्राह्मण के लक्षण	४	२१	तीर्थ, यज्ञ एवं ब्राह्म- क्रियाकाण्डो को महत्त्व देने वालो के लिये	३८	४०
३	ब्राह्मण के अनेक रूप	७	२२	श्राद्ध	४२	
४	ब्राह्मण के विषय मे विशेष ज्ञातव्य	८	२३	श्राद्ध के योग्य-अयोग्य ब्राह्मण	४३	
५	वैदिक सस्कृति मे ब्राह्मण और शूद्र	९	२४	श्राद्ध को न मानने वालो का मतव्य	४४	
६	शूद्र के विषय मे विशेष	११	२५	श्राद्ध आदि मे मास का विधान और निषेध	४६	
७	स्नान	१२	२६	व्यसन	४७	
८	स्नान-निषेध	१४	२७	सात व्यसन और उनमे हानि	४८	
९	तीर्थ	१६	२८	श्रुत	५१	
१०	मानस तीर्थ	१७	२९	मास	५३	
११	जगयतीर्थ की प्रतीक्षा मे गगा	१९	३०	मास-निषेध	५५	
१२	मन शुद्धि के विना जलादि से आत्मशुद्धि नही	२२	३१	मासत्याग का महत्त्व	५६	
१३	आध्यात्मिक तीर्थ	२४	३२	मास की ताकत कम मासाहार से होने वाले	५७	
१४	शुद्धि-शौच	२६	३३	मासाहार से होने वाले मयकर रोग	६०	
१५	व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि मे वस्तुओ की शुद्धि	२७	३४	अमासाहारी	६२	
१६	यज्ञ	३०	३५	मासमक्षको के लिये ध्यान देने योग्य बातें	६७	
१७	हिंसात्मक यज्ञ	३१	३६	मद्य (मद्यनिषेध)	६९	
१८	हिंसात्मक यज्ञो का निषेध	३२	३७	मद्यपान की मात्रा		
१९	आत्मयज्ञ (अहिंसात्मक यज्ञ)	३४	३८	मद्यपान के दुर्गुण		
२०	आत्मयज्ञ की श्रेष्ठता	३७	३९	शरावियो की दुर्दशा		

	पृष्ठ		पृष्ठ
४० तमाखू (तमाखू का प्रचार)	७८	१७ भारत में विदेशी हुतावाम	
४१ तमाखू में जहर	७५	एव उच्चायुक्त	१२१
४२ सिगरेट	७७	१८ राजकर्मचारी	१२३
४३ तमाखू का निषेध	७८	१९ गुप्तचर	१२४
४४ तमाखू के समर्थक	८१	२० प्रजा	१२५
४५ चाय	८२	२१ यथा राजा तथा प्रजा	१२७
		२२ राज्य	१३०
दूसरा कोष्ठक		२३ मुराज्य (अच्छी सरकार)	१३१
१ राजनीति	८३	२४ कुराज्य	१३२
२ भारत की राजनीतिक		२५ अराजकता	१३७
स्थिति	८५	२६ स्वराज्य (प्रजातंत्र राज्य)	१३८
३ राजनीतिज्ञ	९३	२७ राष्ट्र-देश	१३९
४ राष्ट्रपति पद के विषय में		२८ दुर्ग-किला	१४०
चिन्तन	९४	२९ राज्यकोप (बजाना)	१४१
५ राजा-(राजा की महिमा)	९५	३० वन (मेना)	१४२
६ श्रेष्ठ राजा	९७	३१ जन्म	१४५
७ राजा के धर्म-कर्तव्य	१००	३२ युद्ध (युद्धनिषेध)	१४८
८ राजा की कमिया	१०३	३३ युद्धसे पहले विचारणीय बातें	१५०
९ अयोग्य राजा	१०५	३४ युद्ध के कतिपय नियम	१५२
१० राजाओं के प्रकार	१०८	३५ युद्ध का प्रोत्साहन	१५३
११ राज-गुप्त	११०	३६ प्राचीन युद्ध के चित्र	१५४
१२ राज्य-मंत्री	११३	३७ विश्व के कतिपय उल्लेखनीय	
१३ मंत्री कितने हो ?	११४	युद्ध	१५९
१४ अयोग्य मंत्री	११५	३८ जय-भरजय	१६३
१५ राजतूत	११७		
१६ विदेशों में भारतीय		तीसरा कोष्ठक	
हुतावाम एव उच्चायुक्त	११९	१ मेना	१६५

वक्तृत्वकला के बीज भाग दसवाँ

३८

	पृष्ठ	पृष्ठ
२ स्वामी	१६७	२९ वणिक-निदा
३ स्वामी के कर्तव्य	१६८	३० वाणिज्य-व्यापार
४ स्वामी का प्रसाद	१६९	३१ व्यापारी
५ निन्दनीय स्वामी	१७०	३२ कृपक
६ सेवक	१७१	३३ कृषि-खेती
७ सेवक की दयनीयदशा	१७३	३४ चारण-चारण जाति की विशेषता
८ सेवा	१७५	३५ सोनार
९ राजसेवा	१७६	३६ जाट
१० राजसेवक	१७७	३७ असभ्य
११ नौकरी	१८०	३८ असमानता
१२ नौकर	१८१	३९ समानता-बराबर
१३ स्वाधीन-स्वतन्त्र	१८२	४० श्रेष्ठ
१४ स्वतन्त्रता	१८३	४१ न्यूनधिकता
१५ स्वाधीनता-आजादी	१८४	४२ विगाड
१६ पराधीनता	१८६	४३ वृद्धि
१७ शासक	१८७	४४ लाम और हानिकारक
१८ शासन	१८८	४५ निरुपाय
१९ सत्ता	१८९	४६ दुर्ज्ञेय
२० क्रांति और संघर्ष	१९०	४७ नही
२१ कानून	१९२	४८ नही के समान
२२ नियम	१९३	४९ नही से कुछ अच्छा
२३ न्याय	१९५	चौथा कोष्ठक
२४ न्यायाधीश	१९७	१ नीतिमान और नैतिकता
२५ पत्र	१९९	२ नैतिक शिक्षाएँ
२६ न्यायकर्त्ताओं के उदाहरण	२०२	३ सामान्य नीति
२७ वैश्य-वणिक	२०४	
२८ वणिक-प्रथासा		

	पृष्ठ		पृष्ठ
४ विज्ञान-प्रश्नोत्तरी	२५६	१८ आश्चर्यजनकअन्य कईवस्तुएँ	२८७
५ पर्व-त्योहार	२५८	१९ कतिपय अद्भुत व्यक्ति	२९८
६ जैन एव बौद्ध पर्व	२५९	२० शकुन	२९९
७ हिन्दुपर्व	२६२	२१ शुभाशुभ शकुन	३०१
८ ईमार्हपर्व	२६६	२२ शकुन एव उनकी आश्चर्य-	
९ मुस्लिमपर्व	२६८	जनक दाते	३०५
१० आश्चर्य	२६९	२३ जादूगर एव उनके आश्चर्य	३०८
११ आश्चर्य के भेद	२७१	२४ ज्योतिष की जानकारी	३११
१२ आश्चर्यजनक वृद्ध	२७४	२५ ज्योतिषियोंकी चमत्कारी दाते	३१८
१३ आश्चर्यजनक पशु-पक्षी	२७५	२६ वायु	३२२
१४ आश्चर्यजनक बहुमूल्य		२७ रेलगाडी एव मोटरे	३२४
पुस्तकें	२७७	२८ टाक एव तार	३२६
१५ आश्चर्यजनक प्रतियोगिताएँ	२७८	२९ मद्य	३२७
१६ आश्चर्यजनक स्मरणशक्ति	२८१	३० प्रकीर्णक	३३०
१७ अन्तरिक्ष में मानव की		३१ रामायण में प्रयुक्त त्रिये	
आश्चर्यजनक उड़ान	२८३	जानेवाले नापाइलोक	३३४

# वक्तृत्वकला के बीज—उपविषयानुक्रमणिका

	पृष्ठ		पृष्ठ
पहला भाग		१५ मित्रता-भग के कारण	३२०
१ किसका कौन गुरु ?	७७	१६ अगुलिया एव अगूठा	३२८
२ आचार्य की न सम्पदाएँ	८०	तीसरा भाग	१०
३ लोकधर्म	१०६	१ नम्रता का उपदेश	६१
४ धर्म कई तरह से होता है	१३७	२ स्वप्नो की सत्या एव	६३
५ धर्म और सम्प्रदाय	१४२	शुभाशुभता	६५
दूसरा भाग		३ स्वप्न के प्रकार	६६
१ बाल विवाह	४७	४ स्वप्नो की सत्यासत्यता	६६
२ वृद्धविवाह के प्रसंग पर	४७	५ स्वप्नफल की अवधि	६६
३ लडके-लडकियों का मोल	५३	६ स्वप्नो का काम	६६
४ चार प्रकार की पतिव्रताएँ	८८	७ स्वप्न की चमत्कारी घटनाएँ	६७
५ स्त्रियों के सोलह श्रु गार	१२०	८ स्वप्न रिकार्ड करने वाली	६८
६ सतोष के तीन मार्ग	१७०	मशीन	६९
७ क्रोध में जहर	२२४	९ घृणा-निषेध	११७
८ पैशुन्य-निषेध	२५५	१० ज्ञान की विशेषता	१८१
९ अपनी आलोचना सुनना		११ जातिस्मरण ज्ञान	१८४
कठिन		१२ ज्ञान मार्ग की सात	१८६
१० प्रार्थना में द्वेष	२६३	भूमिकाएँ	
११ राग के भेद	२६६	१३ इस्लाम धर्म के अनुसार	
१२ रामान्ध	२७०	परमज्ञान (मारिफ्त) पाने	१८७
१३ प्रेमी का विरह	२७२	के लिए जरूरी बातें	२०१
१४ मित्रता की रक्षा के चार	२६६	१४ आविष्कारकर्त्ता वैज्ञानिक	२३१
उपाय		१५ ज्ञान का दिवालियापन	
			३१७

१६ परीक्षा में सफल कैसे हो	२३५	२३ नास्तिकता का मूलकारण	११३
चौथा भाग		आज की पढाई	११५
१ अमद् विचार	११	२४ सम्यक्त्व के भेद	११६
२ विचारों का परिवर्तन	११	२५ सम्यक्त्व के लक्षण, भूषण	१३४
३ उपदेश-दान	१८	दूषण और विशुद्धि	१५२
४ नेत्रनकला	२०	२६ छ प्रकार के प्रश्न	१६४
५ वस्त्र बुनने की कला	२३	२७ उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य	१८६
६ गायनकला	२४	२८ वेद पौरुषेय	२००
७ नृत्यकला	२६	२९ मदाचार-दुराचार	२१०
८ तैरने की कला	२७	३० एकादशी व्रत का ढोंग	
९ धर्मकला	३०	३१ योग शब्द का दूसरे प्रकार	
१० कलाकार	३१	में प्रयोग	
११ काव्य में दोष देने वाले		३२ मयम से भ्रष्ट होते समय	
व्यक्ति	३७	१८ वानो का चिंतन	२३१
१२ गलगच्चिया क गद्यचित्र	५७	२३ माधु दण्ड	२८६
१३ ग्रन्थ को सक्षिप्त करने वाले		२४ गोचरी-मम्बन्वी ४० दोष	२९६
अनूठे लेखक	६८	पाचवाँ भाग	
१४ बुरे लेखक	६९	१ श्रावक के प्रत्याग	१२
१५ ममाचारपत्र	८८	२ श्रावक क चार विश्राम	१५
१६ अनुभवी वंश-डाक्टर वकील		३ श्रावक के तीन मनोरथ	१६
आदि	९३	४ श्रावक की ग्यारह प्रतिमाएँ	१७
१७ अद्भुत अनुभवी	९८	५ सामायिक का महत्त्व	२०
१८ दर्शन में लाभ	१०३	६ सामायिक के अधिकारी	२२
१९ दर्शनों के भेद	१०३	७ सामायिक के भेद	२२
२० दर्शनों का उद्भव	१०८	८ सामायिक के अनिचार	२३
२१ दर्शनों के प्रमाण	१०८	९ सामायिक के ३० दोष	४१
२२ दर्शनान्त	१०९	१० प्रायश्चित्त में लाभ	

	पृष्ठ	पृष्ठ
११ आलोचना कौन करता है ?	४६	२८०
१२ प्रतिसेवना के दस प्रकार	५३	
१३ आलोचनादाता के आठ गुण	५५	
१४ आलोचना के भेद	५८	
१५ मिच्छामि दुक्कड	६२	
१६ प्रतिक्रमण	६३	
१७ वैदिक सध्या	६६	
१८ ध्यान के आलवनभूत सात	७१	
कमल-चक्र		
१९ ध्यान के आलम्बनभूत चार	७२	
ध्येय	८४	
२० चार ध्यान एव धर्म ध्यान	८६	
के भेद-प्रभेद	१०३	
२१ भोजन का पाचनकाल	१०६	
२२ विटामिन	१०६	
२३ कौन कब आहार के इच्छुक	११४	
२४ भोजन के समय मौन	११४	
२५ कैलोरी	१५७	
२६ सिद्धो के गुण	२००	
२७ ग्रहो और ब्रह्माण्डो के	२०१	
विषय मे वैज्ञानिको का मत	२०२	
२८ देवों की कार्यक्षमता	२१८	
२९ देवों की आयु		
३० देवों के भेद		
३१ आश्चर्यकारी वृक्ष		
३२ गणित की अपेक्षा से मनुष्यों		
के चार आश्रमो का रहस्य	२३४	
३३ भूगर्भ-ससार की खोज		
३४ विश्व के महासागर एव		
महाद्वीप		
३५ वर्तमान विश्व के देश, उनकी		२८२
जनसख्या एव राजधानिया		२८६
३६ विश्व की लम्बी नदियाँ		२६६
३७ भूगोल के रिकार्ड		२६८
३८ ससार के बड़े शहर और		३०१
उनकी आवादी		
३९ वर्तमान विश्व के निरक्षर		३०२
और अंधो की सख्या		
और विश्व के प्रलयकारी		३०३
भूकम्प		३०५
४० भारत की आवादी		
४१ भारत गणराज्य के अन्तर-		३०७
वर्ती राज्य		
४२ भारत की जनसख्या का		३११
आयुविवरण		
४३ भारत के गाँव और शहर		३१२
४४ भारत मे पशुधन		३१३
४५ भारत मे दूध		३१३
४६ भारतीय इतिहास की		
प्रमुख तिथियाँ		३१५
४७ भारत मे साक्षरता		३१६
४८ भारत की बड़ी चीजें		३२१
४९ भारत की बड़ी चीजें		
सूर्योदय और सूर्यास्त		
सारणी		३२१

	पृष्ठ		पृष्ठ
५१ समार के प्रमुख नगरो के समय और दूरिया	३२८	२३ आत्मा की अलिगिता	२४०
छठा भाग		२४ आत्मस्थित होने के चार साधन	२५७
१ सगति न करने योग्य व्यक्ति	४७	२५ रमना मे तीन इन्द्रिया	२८६
२ महानता के विघातक दोष	५७	२६ मन के विषय	२८६
३ विलंब न करने के काम	७२	२७ मन की पहचान	२८६
४ गुणिजन-मगति	१०५	२८ मन की ताकत	२९०
५ दोष को छोटा मत समझो	११७	२९ मन का पानी पर अद्भुत असर	२९६
६ दोष आते ही गुणों का पलायन	११७	३० शरीर की क्रियाये भी मुन्यतया मन के पीछे	२९५
७ दान के भूषण	१४३	सातवा भाग	
८ दान के दोष	१४३	१ कटु मत्व मे हानि	४७
९ कृपण को दकार से घृणा	१६६	२ समन्यापूर्ति	८०
१० अद्भुत मिखारी	१७०	३ प्रहेलिका	८१
११ हरणक के पाम मत माग ।	१७३	४ अन्तर्लापिका	८३
१२ रूपया	१८४	५ क्रिया गुप्त	८४
१३ पैसा	१८६	६ गजस्थानी पहेलिया	८५
१४ चौदह रत्न	१८८	७ वातचीन मे १३ वपं	९०
१५ विभिन्न देशों की मुद्राएँ	१८९	८ वात की रक्षा	९३
१६ दीनों की लक्ष्मी से प्रार्थना	२०६	९ मुनने की विधि	१०६
१७ भारत के बडे-बडे उद्योगगृहों की कुल-पूँजी	२१४	१० शरीर का वजन	१००
१८ गरीब को मत मताओ ।	२१६	११ शरीर का दाहिना अंग	१२०
१९ छ दमती में राजाभोज	२२०	१२ शरीर-रक्षा	१२६
२० आयकर (इन्कम टैम)	२२३	१३ व्यायाम के अ्याय्य व्यक्ति	१३६
२१ मकद और उधार	२३१	१४ योग के कारण	१४३
२२ आत्मा की परिमितता	२३६		



१५ समोहन विद्या के सहारे शल्यक्रिया	१६१	१४ अद्भुत साहसी छत्रपति शिवाजी	६७
१६ गर्भगत जीव बाहर की वाते भी सुनता है	१७३	१५ कार्य के प्रारंभ में ही हिम्मत हारने वालों के लिए	१०१
१७ प्राणियों की गर्भस्थिति	१७४	१६ काम में शर्म	१०६
१८ जगत्प्रसिद्ध आदर्श बालक	१७८	१७ निषिद्धकार्य के कर्ता	११६
१९ अभिभावक को विशेषध्यान देने योग्य कई वाते	१८०	१८ निषिद्ध कार्य का फल	११६
२० वृद्ध और वृद्धत्व का सवाद	२०३	१९ निकम्मों के काम	१२३
२१ मनुष्य जीवन के सौ वर्ष	२१२	२० विघ्न	१४४
२२ वाट इज लाइफ	२१६	२१ लोकप्रियता के इच्छुक निम्न	१५०
२३ मरने के बाद गति	२४६	२२ आठ करण	१६७
आठवाँ भाग		२३ सुख की अशाश्वतता	१६८
१ मन्वन्तर कालगणना पद्धति	८	२४ गृहस्थ बनने की योग्यता	२३७
२ बौद्धिक क्षेत्र में कमी	२०	२५ निदनीय गृहस्थ	२३८
३ सादगी के क्षेत्र में कमी	२०	२६ कच्चा पाहुना	२४७
४ भ्रातृप्रेम में कमी	२१	२७ पक्का पाहुना	२४७
५ नैतिकता में कमी	३७	२८ स्थान का महत्त्व	२५२
६ एक मिनट में	३८	२९ स्वस्थान	२५४
७ कौन कितने समय में	३८	३० पक्षपात	२७२
८ पृथ्वी पर प्रति घटा गति	३८	३१ स्वजनो के साथ व्यवहार	२७५
९ पानी में प्रति घटा गति	३९	३२ निकृष्ट स्वजन	३१३
१० वायु में प्रति घटा गति	६१	३३ भयानक एवं सहायक स्वजन	३१३
११ भोजन का स्वभाव	६१	३४ बहू का कण्टमय जीवन	
१२ विष का स्वभाव	६२	३५ सास-बहू का व्यवहार	
१३ अमफलता के चार कारण			

	पृष्ठ		पृष्ठ
३६ वेटे-बहू को वश करने की विधि	३१४	१६ राजपूतो के प्रति व्यग	१०४
		१७ छप्पन देशों की मेना और उम पर १६॥ खरब रुपये वार्षिक खर्च	१४३
<b>नौवा भाग</b>		१८ मुक्ति देने वाला युद्ध	१६२
१ मभी जातियों में ब्राह्मण और चाण्डाल	२	१९ मेवक के कर्तव्य	१७१
२ स्नान के भेद	१०	२० सेवा में लाभ	१७५
३ जीवनभर नहीं नहाने वाले स्त्रीतियन	१५	२१ राजवल्लभ मेवक	१७८
४ पाइचों की तीर्थयात्रा	२५	२२ नौकर के विषय में विशेष	१८०
५ यज्ञ का मटल	३०	२३ मत्ता का महत्व	१८८
६ पितर	४०	२४ निर्णय के अजब तरीके	१९६
७ व्यसनो के कुफल	४८	२५ वणिक की प्रकृति	२००
८ व्यसनो का मूल छूत	४९	२६ व्यापार के विषय में विशेष ज्ञातव्य	२१२
९ शराब की बोटल	७०	२७ व्यापार में हिमाय	२१०
१० सिगरेट में गान्-काट	७८	२८ अनूठा व्यापारी एव दानी	२१३
११ आम चुनाव	८६	२९ दिव्य दृष्टि	२१७
१२ ओहदे के अनुसार उच्च पदाधिकारियों का क्रम	९०	३० नमन	२२७
१३ भारत के प्रमुख राजनीतिक दल एवं उनके चिन्ह	९४	३१ भारत में कुआँग्रियों में कुआँरि अधिक	२३४
१४ राष्ट्र (भारत) की वर्तमान पानव्य वस्तुओं	९८	३२ विगडने के बाद प्रमत्त व्यय	२३६
१५ राजा के विषय में विविध	९९	३३ अद्भुत ज्ञानशक्ति	२४०
		३४ पायनियर ११ ऑ-१०	२४८
		३५ जीवनभर का लेगा-जोना	२६१

वस्तुत्वकला के बीज भाग दसवा

वस्तुत्वकला के बीज ग्रन्थ से १२८० विषय एवं २४६ उपविषय हैं।  
सब मिलकर १५२६ गिनने से आए हैं। प्रत्येक भाग में—  
विषय-उपविषय की सख्या निम्न प्रकार हैं

भाग	१	२	३	४	५	६	७	८	९	योग
विषय	१२८	१४७	१४३	१४१	१०८	१५३	१२९	१६८	१६३	१२८०
उपविषय	५	१६	१६	३४	५१	३०	२३	३६	३५	२४६
योग	१३३	१६३	१५९	१७५	१५९	१८३	१५२	२०४	१९८	१५२६



## विषयों का क्रम

	भाग	पृष्ठ		भाग	पृष्ठ
अपल के विषय कहावतें	३	२६०	अनगार	४	२४७
अच्छा काम	८	११०	अनजन	५	३६
अच्छी कविता	४	३४	अनाध्याय	४	७६
अज्ञान	३	२०६	अनित्यभावना	७	८
अज्ञानी	३	२११	अनुभव	४	६२
अति काम	८	१०६	अनुभवहीन	४	६६
अतिज्ञान-अल्पज्ञान	३	१८८	अनुरागी	२	२७०
अनिधि के लक्षण	८	२४६	अनेकपति-प्रथा	२	६५
अतिथिसत्कार	८	२४४	अन्तरिक्ष में मानव की		
अतिपरिचय अपमान			वादचर्यजनक उद्दान	६	२८३
का हेतु	८	१३२	अन्तिम मन्त्रार को		
अति भोजन	५	११२	अनोन्नी प्रचारण	७	२५०
अतिमह्वारा का निषेध	२	७६	अन्धा	६	२८३
अद्भुत बलिष्ठ व्यक्ति	६	८६	अन्धाय का घन	६	१६४
अधर्म (नीच) पुरुष	६	६५	अपना-पराया वाम	८	१२५
अधर्म	१	१५८	अपमान	३	३७
अधिर अध्ययन	८	७७	अपमान-निषेध	३	३६
अधिक गानेवाने बादमी	५	१८८	अपरिग्रह	२	१०८
अधिर मन्नात रष्ट			अपव्यय-निषेध	६	२८७
वा शरण	८	२८६	अपेक्षा में शिवर ता		
अधिर मन्नातवाने			वर्तुत्व	१	११
मा-शात	८	२८३	अपराधचर्य	७	२०
अध्ययन	८	७१	अभयदाता	३	१२५

५८

अभयदान  
 अभिमान  
 अभिमान के उदाहरण  
 अभिमान के दुर्गुण  
 अभिमान के भेद आदि  
 अभिमानी  
 अभ्यास  
 अभ्यास का महत्व  
 अमरत्व  
 अमासाहारी  
 अयोग्य आचार्य  
 अयोग्य मन्त्री  
 अयोग्य राजा  
 अयोग्य श्रोता  
 अराजकता  
 अवसर  
 अवसर चूकने के बाद  
 अविनीत  
 अविनीत शिष्य  
 अविवेकी  
 अशरणभावना  
 अश्रद्धावान (शकाशील)  
 असतोष  
 असम्भव  
 असत्य (असत्य का  
 स्वरूप)

वक्तृत्वकला के बीज भाग दसवाँ

भाग	पृष्ठ	असत्य की निन्दा	भाग	पृष्ठ
६	१५४	असत्य के भेद और फल	१	२४१
३	१७	असत्य के विषय में विविध	१	२३८
३	३३	असत्य के सम्बन्ध में	१	२४६
३	१६	कहावतें	१	२४६
३	२३	असत्य वचन	१	२४३
३	३१	असत्यवादी	१	२४४
३	२५७	असफलता में वैयर्थ	५	६२
२	१०२	असमानता	५	२२८
५	१०४	असह्य वाते	२	१६१
५	२४३	अहिंसा	२	१७६
७	६०	अहिंसा का उपदेश	१	१८३
६	८६	अहिंसा की महिमा	१	१७८
१	११५	अहिंसा के फल	१	१८१
६	१०५	आर्षे	३	२८१
७	११४	आसू	४	१८८
६	५०	आचारण विना ज्ञान	४	१८६
५	५१	आचार (आचरण)	४	१६२
५	५	आचारवान		
३	१०२	आचारहीन	१	८३
१	४	आचार्य का शिष्य के प्रति	१	८७
४	११	कर्त्तव्य		
७	१३१	आचार्यों के प्रकार	५	४३
४	१७६	आज का काम कल पर	६	२६४
२	२	मत छोड़ो	६	२४८
६		आत्म-चिन्तन		
१	२३७	आत्मज्ञ		

आत्म...  
 आत्मरक्षा  
 आत्मविषय  
 आत्मविश्वास  
 आत्मभुक्ति  
 आत्म-सम्मान  
 आत्मसुक्ति  
 निषेध  
 आत्म...

FOR...

	भाग	पृष्ठ		भाग	पृष्ठ
आत्मदमन	६	२६०	आपत्ति	८	२२३
आत्मनिन्दा	२	२६४	आय	६	२२३
आत्मप्राप्ति	६	२५६	आयु	७	२२२
आत्मयज्ञ (अहिंसात्मक यज्ञ)	६	३४	आयु क्षय	७	२३१
आत्मयज्ञ की श्रेष्ठता	६	३७	आयुर्वेद एव नाडी विज्ञान	७	१६४
आत्मरक्षक	६	२५०	आर्जव (सरलता)	३	६०
आत्मरक्षा	६	२५०	आलोचना	५	४६
आत्मविजय	२	२६२	आलोचना के दोष	५	५०
आत्मविश्वास	६	२५४	आलोचना के विषय में विविध	५	४६
आत्मशुद्धि	६	२५८	आवश्यक	५	६१
आत्म-सम्मान	६	२५३	आवश्यकता	२	१३०
आत्मस्तुति (स्व-प्रशंसा)			आशा	२	१३७
निषेध	२	५०	आशा की प्रशंसा	१	१४६
आत्महत्या	७	२५०	आश्चर्य	६	
आत्मा	६	२३५	आश्चर्यकारी नियंत्रक	५	२०१
आत्मा का कर्तृत्व	६	२४१	आश्चर्यकारी वालक-		
आत्मा का ज्ञान	६	२४५	बालिकाएँ	७	१६२
आत्मा का दर्शन	६	२४३	आश्चर्यकारी मनुष्य	५	२६२
आत्मा का स्वरूप	६	२३७	आश्चर्यकारी मनुष्यजियाँ	५	२३०
आत्मा की महिमा	६	२६६	आश्चर्य के भेद	६	२७१
आत्मा की शाश्वतता आदि	६	२३६	आश्चर्यजनक आय वर्ष		
आत्मा के भेद	६	२७०	बस्तुएँ	६	२८७
आदन	८	७१	आश्चर्यजनक पशु-पक्षी	६	२७५
आध्यात्मिक तीर्थ	६	२८	आश्चर्यजनक प्रतियोगिताएँ	६	२७८
आनन्द	८	१६३	आश्चर्यजनक बद्मूल्य		
आनन्द की स्थिति	८	१६५	पुस्तकें	६	२७७

# वक्तृत्वकला के बीज भाग दसवाँ

	भाग	पृष्ठ	उत्तम मरण	भाग	पृष्ठ
आश्चर्यजनक वृक्ष	६	२७४	उत्सर्ग-अपवाद	७	२४२
आश्चर्यजनक स्मरणशक्ति	६	२८१	उत्साह	४	१६१
आसक्ति	२	१६२	उत्साह हीनता	८	६५
आहार	४	११०	उदार और उदारता	८	६६
आहार किसलिये ?	५	८१	उद्यम	८	१३८
इकरगे-दुरगे मत्त	४	३०५	उद्यम की प्रेरणा	८	७५
इच्छा	१	५६	उद्यम से कार्यसिद्धि	८	७६
इज्जत-सम्मान	२	१४५	उद्यम से प्रकृति का	८	७७
इतिहास	३	४४	परिवर्तन	८	८२
इन्द्रिय दमन	४	६४	उद्यमी	८	८०
इन्द्रियाँ	६	२७६	उधार	८	२३०
इन्द्रियों की शक्ति	६	२७२	उपकार (अहसान)	६	१२६
ईसाई पर्व	६	२७४	उपदेश	४	१८
ईमानदार	६	२६६	उपवास	५	३८
ईर्ष्या	६	२३४	उपहास (मजाक-विनोद)	३	३८
ईर्ष्यालु	६	२३४	उपहास-निषेध	३	१३६
ईर्ष्या सम्बन्धी दृष्टान्त	१	२४२	उल्टा काम	५	२२८
और कहावतें	२	२४४	ऋण-कर्ज	७	१४
ईश्वर का जगत्कर्तृत्व	२	२४६	एकत्वभावना	८	१४०
चिन्तनीय	१	१३	एक पथ दो काज	७	१५०
ईश्वर की निन्दा भी	१	६५	औषधि	७	४८
ईश्वरीय ज्ञान एव दर्शन	१	२०	कदुवाणी	५	२८८
उतावल	७	७३	कदुवाणी-निषेध	८	१५०
उत्तम औषधियाँ	७	१५३	कठिनाई	७	४८
उत्तम पुरुष	७	६२	कतिपय अद्भुत व्यक्ति	७	२८८
उत्तम पुरुषों का स्वभाव	६	६३	कतिपय औषधियाँ	७	१५०

	भाग	पृष्ठ		भाग	पृष्ठ
कतिपय जगत्प्रसिद्ध			कलिकाल के कौतुक	८	१५
सन्त-महात्मा	४	२६७	कलिकाल के प्रभाव में न		
कतिपय देशों की औसत			आने वाले	८	२६
भाग्य	७	२२६	कलिकाल से प्रभावित		
कथन के समान आचरण			भारत की स्थिति	८	१६
आवश्यक	४	१४३	कलिकाल के प्रभाव से		
कन्दर्पादि में लीन माधुओं			वस्तुओं के मूल्य में		
की गति	४	३३५	उत्तरोत्तर वृद्धि	८	२०
कन्यादान	२	५१	कल्पना	४	५४
कमी	८	२३१	कल्पना के उदाहरण	४	५६
करने योग्य काम	८	११३	कवि	४	३८
कर्त्तव्य	८	१४५	कविता	४	३२
वर्म	८	१५३	कविता का महत्त्व	४	३३
कर्म कर्त्ता के पीछे-पीछे	८	१६१	कविता-विरोध	४	३७
कर्मक्षय के बाद	८	१६६	कवि-प्रशंसा	४	४१
कर्मबन्ध	८	१६५	कवियों की प्रकृति	४	४२
कर्मानुसार फल	८	१५७	कवियों की शक्ति	८	४३
कर्मों का अवश्य भोग	८	१५६	कवियों के लिये		
कर्मों की विचित्र गति	८	१६०	विचारणीय बातें	४	४५
कल का नाम आज ही			कपाय	३	६६
कर लो	८	४६	कपायत्याग	३	७१
कलह	२	२४६	कहावतें	७	६७
कलहकर्त्ता	२	२५३	कान और बगिरता	६	२७६
कलह में हानि	२	२५६	कानून	६	१६०
रत्ता	६	२१	काम	२	२७
कला के निम्ने प्रसिद्ध			काम-वर्म	८	१०६
ऐतिहासिक स्थान	८	२६०	काम का महत्त्व	८	१११



१२

वक्तृत्वकला के बीज भाग दसवाँ

	भाग	पृष्ठ	क्रोध	क्रोध की उत्पत्ति आदि	भाग	पृष्ठ
काम के भेद	२	३०	क्रोध की स्थिति	२	२१३	
काम को अधूरा मत रखो	८	१४१	क्रोध के दुर्गुण	२	२१७	
काम-भोग	२	३७	क्रोध-त्याग	२	२२१	
कामान्धो के उदाहरण	२	४२	क्रोध पर काबू पाने वाले	२	२१५	
कामासक्त	६	३८	महापुरुष	२	२२२	
कायर	८	८१	क्रोधी			
कारण	८	१०८	क्षमा			
कार्य की असिद्धि	७	१४३	क्षमा का उपदेश	२	२२८	
कार्य की सिद्धि	७	१४२	क्षमा के उदाहरण	२	२२६	
काल	८	१	क्षमापना	२	१८५	
किन्तु शब्द की करामात	८	१	क्षमावान	२	१८८	
कुदरत	८	१	ख्याति-प्रसिद्धि	२	२००	
कुपात्रदान	६	२६	गतानुगतिक ससार	२	१८६	
कुपुत्र	८	७३	गप्पी और गप्पें	५	५५	
कुमार्या	८	१५८	गया वक्त वापस नहीं	७	१६६	
कुमित्र	८	३००	आता			
कुराज्य	८	६७	गरज	३	४६	
कुलटा स्त्री	८	३११	गरीब और गरीबी	७	१४७	
कुलीन पुरुष	८	६६	गरीबी के चित्र	७	१७३	
कुसगति का असर	८	६६	गर्भ			
कुसगति से हानि	८	१३२	गर्भावान के विषय में	१	७६	
कृतज्ञता और कृतज्ञ	८	१३६	विवेक	६	६४	
कृतघ्न	८	१६३	गुण	६	१०६	
कृपण	८	२१६	गुणग्राहक बनो !	६	१११	
कृपक	८	२१७	गुणग्राही के अभाव में	६		
कृपि-खेती	८	१८६				
क्रान्ति और सघर्ष						

	भाग	पृष्ठ		भाग	पृष्ठ
गुणज्ञ	६	१०३	चाय	६	८२
गुणशून्य नाम	६	११४	चारण जाति की		
गुणहीन	६	११२	विशेषताए	६	२१६
गुणी	६	१०४	चारित्र्य	४	१६५
गुणी णिष्य के कर्त्तव्य	१	१००	चारित्र्य का महत्त्व	४	१६७
गुणो का नाश एव प्रकाश	६	१०२	चारित्र्य की रक्षा	४	१७२
गुणो का महत्व	६	६६	चारित्र्य में लाभ	८	१७६
गुणों में दोष	६	१२३	चिकित्सा	७	१६१
गुप्तचर	६	१२४	चिन्तन-मनन	४	८
गुरु (गुरु की व्याख्या)	१	६६	चिन्ता	३	१०७
गुरु-आज्ञा	१	७३	चिन्तानिषेध	३	११०
गुरु की आवश्यकता	१	७१	चिन्ता में हानि	३	१०८
गुरु की आशातना	१	१०६	चोर	१	२५८
गुरु के छत्तीस गुण	१	७८	चोर के त्रिषय में कहावते	१	२६२
गुरुभक्ति की विधि	१	६२	चोरी	१	२५०
गुरु-महिमा	१	६८	चोरी का त्याग	१	२५६
गुरुशिक्षा	१	७३	चोरी के कारण	१	२५२
गुरुशिक्षा के समय			चोरी के भेद	१	२५४
विनीत-अविनीत शिष्यों का			चोरों का मुधार	१	२६०
विन्यत	१	१०४	जगत को ब्रह्म में करने का		
गृहस्थ	८	२३६	उपाय	५	१८४
गृहस्थ को शिक्षा	८	२३६	जङ्गमनीध की प्रतीक्षा में		
गोचरी के नियम	४	२६६	गंगा	६	१६
गोचरी के भेद	४	२६५	जन्म	७	१६६
धर	८	२४८	जन्मभूमि-वर्षण	८	२६६
पूजा	३	११७	जन्म-मृत्यु एवं बाल		
चतुर्	३	२८०	मृत्यु	८	१६३

वस्तुत्वकला के बीज भाग दसवाँ

विषय	भाग	पृष्ठ	विषय	भाग	पृष्ठ
जन्म-सम्बन्धी अनोखी प्रथाएँ	७	१६७	ज्ञान की आवश्यकता	३	१७६
जप	१	६१	ज्ञान की महिमा	३	१८०
जय-पराजय	६	१६३	ज्ञान के भेद	३	१८४
जरा-वृद्धावस्था	७	१६६	ज्ञान के साथ चारित्र्य		
जागरण	३	१०२	आवश्यक	४	१७०
जाग्रत और सुप्त	३	१०५	ज्ञानदान	६	१६२
जाट	३	२२३	ज्ञान से लाभ	३	१७८
जातिप्रेम के उदाहरण	६	२६७	ज्ञानी	३	१६०
जादूगर एव उसके आश्चर्य	२	३०८	ज्ञानी अज्ञानी में अंतर	३	२१५
जामाता-जमाई	६	३१०	ज्योतिष की जानकारी	६	३११
जितेन्द्रिय	६	२७८	ज्योतिषियों की चमत्कारी	६	३१८
जिह्वा	६	२८५	वर्तों	१	५२
जीवन	६	२११	ठग भक्त	६	३२
जीवन की अस्थिरता	७	२१४	डाक एव तार	४	१४८
जीवन के हेतु आदि	७	११३	ढोग एव ढोगी	४	२६
जीवन से लाभ	७	२१६	तत्व	५	३२
जैनपर्व	६	२५६	तप	५	३०
जैनधर्म एव उसका महत्त्व	१	११३	तप के भेद	५	७४
जैन सिद्धान्तानुसार काल के भेद	५	२१६	तप कैसे और किस लिए	५	७६
ज्ञान (ज्ञान की उत्पत्ति आदि)	३	१७३	तप से लाभ	६	८१
ज्ञान और क्रिया	३	२०५	तमाखू (तमाखू का प्रचार)	६	८५
ज्ञान का उपदेश	३	१८२	तमाखू का निषेध	६	७५
			तमाखू के समर्थक	६	२६१
			तमाखू में जहर	४	२३२
			तापस	८	१
			तितिक्षा-सहनशीलता	८	
			तीर्थ	८	

	भाग	पृष्ठ		भाग	पृष्ठ
तीर्थ, यज्ञ एव वाह्य			दुःख	८	२१६
क्रिया-काण्डों को महत्त्व			दुःख का महत्त्व	८	२२०
देनेवालों के लिए	६	२८	दुःख की अधिकता	८	२१७
तियंज्व-ससार	५	२१७	दुःख के बाद मुक्त	८	२०४
तुच्छ व्यक्तियों में अधिक			दुःख के भेद	८	२२०
अभिमान	३	२६	दुःखनाश के उपाय	८	२०५
तू-में	३	२१	दुःख में दुःख	८	२१६
तृष्णा	२	१५२	दुःख में प्रभु का स्मरण	८	६४
तृष्णात्रिजय	२	१६०	दुःख रूप ससार	५	१६३
तेजस्वी-पुत्र्य	६	७५	दुःखी	८	२२६
त्याग	४	१७७	दुनिया की ताकत	५	१६३
त्याग के भेद	४	१७८	दुनिया के बड़े धनी	६	२१०
त्यागी	६	१८०	दुर्ग (किला)	६	१४०
धोड़ी-नी देर में मुत्तमान	८	८७	दुर्जन-दुष्ट	६	१५
दया	८	१८८	दुर्जनमग-परित्याग	६	२२
दया की महिमा	१	१६०	दुर्जनों का स्वभाव	६	१८
दयालु	१	१६३	दुर्जनों के साथ व्यवहार	६	२६
दरिद्र	६	१८	दुर्जेय	६	२४०
दरिद्रता	६	२०१	दुर्नाय-पापोदय	८	१८२
दशन	४	१०६	दुर्लभ मनुष्यजन्म		
दाता	६	१३६	को हाना मन ।		
दाता के उदाहरण	६	१६२	दुःखिघा	५	१५८
दान	३	१४३	दुष्टों का गुधार	८	२०६
दान की प्रेरणा	३	१४६	दुष्टि		
दान की महिमा	६	१७४	दुष्टि		
दान के भेद	६	१८	दुष्ट्राप्य मन		
दान में वित्त	५	१८	दुष्टर्मियों के उदाहरण		
	५	१८	दुष्टमान जन्म की आवादी		

वस्तुत्वकला के बीज भाग दसवा

भाग	पृष्ठ	(ख) पैसा	भाग	पृष्ठ
दृश्यमान विश्व में पशु-पक्षी	५	२३१	(ग) चौदह रत्न	६
दृष्टि के समान सृष्टि	६	१७६	(घ) विभिन्न देशों की मुद्राएँ	६
आश्चर्य	६	१२४	घनवान	६
देव-ईश्वर	१	६	घन से घर्म नहीं	६
देव-संसार	५	२००	घनिकों की स्थिति	६
देशमत्त	५	२६८	धर्म	१
देश विशेष के दोष-गुण	५	२७०	धर्म की आवश्यकता	१
देशी-विदेशी भाषा	७	१७	धर्म की उत्पत्ति आदि	१
दैनिक चमत्कार की विचित्र बातें	५	२०३	धर्म की प्रेरणा	१
दो-दो काम नहीं होते	५	१३७	धर्म की महिमा	१
दोष	६	११६	धर्म के ठेकेदार	१
द्यूत	६	४६	धर्म के फल	१
द्रव्य	४	१५०	धर्म के भेद	१
द्रव्यपूजा का रहस्य	१	२१	धर्म के लक्षण	१
द्वेष	२	२६७	धर्म के विविध प्रसंग	१
घन	६	१७५	धर्मज्ञ	१
घन का उत्पादन	६	१८१	धर्म-प्राप्ति के उपाय	१
घन का उपयोग	६	१८३	धर्म समझने के वाद	१
घन का खजाना (अमेरिका में)	६	१७८	धर्मोंपदेश किसलिए ?	१
घन का प्रभाव	६	१६१	धर्मोंपदेश के अधिकारी	६
घन की निन्दनीयता	१	१७६	धीर पुरुष	६
घन की मूल्य	६	१८४	धूर्त-दगाबाज	६
घन के विविध रूप	६	१८४	धर्म	१
(क) रुपया	६	१८४	घोला और घोलेबाज	१

	भाग	पृष्ठ		भाग	पृष्ठ
ध्यान (ध्यान करने वाला)	१	७९	निद्रा-निषेध	३	८७
ध्यान	१	६०	निद्रानु श्लोका	७	११०
ध्यान से लाभ	१	७४	निद्रा में लाभ	३	८६
न करने योग्य काम	३	११५	निन्दक	३	२६६
नमस्कार	३	१३	निन्दनीय कवि	४	४६
नम	३	११	निन्दनीय उद्दयानम्	३	२४२
नमन	३	९	निन्दनीय-मूर्खजीवन	३	२९४
नमन में नमन	३	१०	निन्दनीय स्वामी	९	१७०
नम-नमन	४	१५४	निन्दा	३	२५५
नरक के सुख	१	१९३	निन्दानिषेध	३	२६०
नरकवासी का न	१	१९७	निन्दा में नमनभाव	१	२६५
नरक में जाने के कारण	१	१९६	निन्दन	९	१९२
नरक-नमन	१	१९०	निरूपकारी	९	१३५
नहीं	९	२४१	निरुपय	९	२३९
नहीं के समान	९	२४३	निर्गन्ध	४	२९४
नहीं में कुछ अच्छा	९	२४४	निर्गन्ध और निर्बन्ध	९	२१३
नाम की सामाजिक	३	२९	निर्गन्ध	९	३३
नामधारी लघु	४	३३०	निर्भोक कवि गा	४	४९
नामिक	४	१११	निर्बन्ध	३	१६२
नामिकों का जीवन	४	११३	निश्चय-व्यवहार नम	४	१५५
निन्दुहना	३	१५७	नोद को उद्भुत करवृत्त	३	२९४
निन्दन-श्रेणर	३	१०१	नीतिमान और नैतिकता	९	२४३
निन्दन जीवन	९	२००	नेत्र	९	१६५
निन्दन वीर	९	१५९	नैतिक शिक्षाएँ	९	२४३
नि	३	२४	नौकर	९	१००
निद्रा के अर्थ	३	१००	नौकरों	९	१७९
			न्याय	९	१९३

वक्तृत्वकला के बीज भाग दसवा

भाग	पृष्ठ	(ख) पैसा	भाग	पृष्ठ
दृश्यमान विश्व में पशु-पक्षी	५	१७६	(ग) बौद्ध रत्न	६
दृष्टि के समान सृष्टि	६	१२४	(घ) विभिन्न देशों की मुद्राएँ	६
आश्चर्य	१	२००	घनवान	६
देव-ईश्वर	५	२६८	घन से घर्म नहीं	६
देव-संसार	८	२७०	घनिकों की स्थिति	६
देशभक्त	७	१७	धर्म	१
देश विशेष के दोष-गुण	५	२०३	धर्म की आवश्यकता	१
देशी-विदेशी भाषा	८	१३७	धर्म की उत्पत्ति आदि	१
दैविक चमत्कार की	६	११६	धर्म की प्रेरणा	१
विचित्र बातें	६	४६	धर्म की महिमा	१
दो-दो काम नहीं होते	६	१५०	धर्म के ठेकेदार	१
दोष	१	२१	धर्म के फल	१
द्युत	२	२६७	धर्म के भेद	१
द्रव्य	६	१७५	धर्म के लक्षण	१
द्रव्यपूजा का रहस्य	६	१८०	धर्म के विविध प्रसंग	१
द्वेष	६	१८१	धर्मज्ञ	१
घन	६	१८३	धर्म-प्राप्ति के उपाय	१
घन का उत्पादन	६	१७८	धर्म-समझने के बाद	१
घन का उपयोग	६	१६१	धर्मों	१
घन का खजाना	६	१७६	धर्मोंपदेश किसलिए ?	१
(अमेरिका में)	६	१८४	धर्मोंपदेश के अधिकारी	१
घन का प्रभाव	६	१८४	वीर पुरुष	१
घन की निन्दनीयता	६	१८४	धूर्त-दगावाज	१
घन की भूल	६	१८४	धैर्य	१
घन के विविध रूप	६	१८४	धोखा और धोखेवाज	१
(क) रुपया	६	१८४		१

१४५  
६८  
३१  
७०  
२७१

	भाग	पृष्ठ		भाग	पृष्ठ
ध्याता (ध्यान करने वाला)	५	७६	निद्रा-निषेध	३	८७
ध्यान	५	६७	निद्रालु श्रोता	७	११८
ध्यान से लाभ	५	७४	निद्रा से लाभ	३	८६
न करने योग्य काम	८	११५	निन्दक	२	२६६
नमस्कार	३	१३	निन्दनीय कवि	४	४६
नम्र	३	११	निन्दनीय गृहस्थाश्रम	८	२४२
नम्रता	३	९	निन्दनीय-मूर्खजीवन	३	२९४
नम्रता से लाभ	३	१०	निन्दनीय स्वामी	९	१७०
नय-प्रमाण	४	१५४	निन्दा	२	२५८
नरक के दुःख	५	१९३	निन्दानिषेध	२	२६०
नरकगामी कौन	५	१९७	निन्दा में समभाव	२	२६२
नरक में जाने के कारण	५	१९६	नियम	९	१९२
नरक-संसार	५	१९०	निरूपकारी	६	१३५
नहीं	९	२४१	निरुपाय	९	२३९
नहीं के समान	९	२४३	निर्ग्रन्थ	४	२९४
नहीं से कुछ अच्छा	९	२४४	निर्धन और निर्धनता	६	२१३
नाम की सामायिक	५	२६	निबल	६	८८
नामधारी साधु	४	३३०	निर्भीक कवि गण	४	४९
नास्तिक	४	१११	निर्लज्ज	३	१४८
नास्तिकों का कथन	४	११३	निश्चय-व्यवहार नय	४	१५५
निःस्पृहता	२	१५१	नीद को अद्भुत करतूते	३	२९०
निकम्मा-ब्रेकार	८	१०१	नीतिमान और नैतिकता	९	२४१
निकृष्ट जीवन	७	२२०	नेता	९	१६१
निकृष्ट वैद्य	७	१५९	नैतिक शिक्षाएँ	९	२४
निद्रा	३	८४	नौकर	९	१८
निद्रा के भेद	३	१००	नौकरी	९	१७
			न्याय	९	१९



न्यायकर्ता के उदाहरण  
न्यायार्जित धन  
न्यूनाधिकता  
पत्र

वक्तृत्वकला के बीज भाग दसवा

भाग	पृष्ठ	परीक्षा	भाग	पृष्ठ
६	१६६	परीक्षा आवश्यक	४	६६
६	१६५	परीक्षा का समय	४	१००
६	२३३	परीक्षाविधि	४	१०४
६	१६७	परोपकार	४	१०१
६	२७४	परोपकारी	६	१२८
३	२७६	परोपदेश-कुशल पण्डित	६	१३३
३	२७६	पर्व-स्यौहार	३	२७८
२	८५	पात्र-कुपात्र	३	२५८
२	७०	पानी	६	१६०
२	६६	पाप	६	१३८
२	८७	पाप का पश्चात्ताप	५	१६०
२	६३	पाप के प्रकार	१	१७०
२	१५४	पाप को छिपाओ मत ।	१	१७२
७	२२७	पाप निवृत्ति का उपदेश	१	१६२
८	१२१	पापबन्ध	१	१६८
		पापी	१	१६६
		पापी साधु	४	३३
		पिता	८	२८१
		पिण्ड (चुगल)	८	२५६
		पुण्यो से पुत्रप्राप्ति	८	२६४
		पुत्र	८	२८७
		पुत्र के प्रति माता-		
		पिता का कर्तव्य	८	२६५
		पुत्र के विना	८	३०६
		पुत्री (कन्या)	८	३०७
		पुत्री की विदाई		
		परिग्रह		
		परिग्रह के प्रकार		
		परित्याग करने योग वाणी		
		परिवर्तनशील ससार		
		परिश्रम की व्यर्थता		
		परिस्थिति		

# विषयो का आकारादिक्रम

	भाग	पृष्ठ		भाग	पृष्ठ
पुत्री के योग्य-अयोग्यवर	८	३०६	प्रभु-आज्ञा	१	२८
पुत्रो के प्रकार	८	३०४	प्रभु-भजन	१	५७
पुत्रो के लिये अनर्थ	८	२६६	प्रमाद (आलस्य)	३	७६
पुनर्जन्म की वास्तविकता	७	१६८	प्रमाद के भेद	३	७८
पुनर्विवाह	२	६५	प्रमाद-त्याग	३	७६
पुराणानुसार-विष्णु के			प्रमादी (आलसी)	३	८१
दस अवतार	१	१५	प्रमादी के विषय मे कहावतें	३	८३
पुरुषार्थ	८	८३	प्रशसा	३	५०
पुस्तक (शास्त्र)	४	७८	प्रशसनीय गृहस्थाश्रम	८	२४१
पुस्तक-प्रकाशन	४	८७	प्रमत्त	३	१६६
पुस्तको का चयन	४	८०	प्रसन्नता (खुशमिजाजी)	३	१६५
पूजा	१	१६	प्राचीन एव आधुनिक कवि	४	५१
पूजा के आठ फूल	१	२०	प्राचीन युद्ध के चित्र	६	१५५
पेट	५	१३४	प्रामाणिक ग्रन्थ	४	८३
पैशुन्य (चुगली)	२	२५५	प्रायश्चित	५	४०
पौराणिक कालगणना पद्धति	८	८	प्रायश्चित के भेद	५	४२
पौषध	५	२८	प्रेम	२	२८२
प्रकृति	८	६७	प्रेम का नाश	२	२६०
प्रकृति नही बदलती	८	६६	प्रेम का निर्वाह	२	२८८
प्रकीर्णक	६	३३०	प्रेम की प्रेरणा	२	२६२
प्रजा	६	१२५	प्रेम की महिमा	२	२८६
प्रत्याग्यान	४	१८१	प्रेम के भेद	०	२६१
प्रतिमा-निषेध	१	१६	प्रेम-बन्धन	२	२८७
प्रतिमापूजा-निषेध	१	१७	प्रेमी	२	२६४
प्रत्युपकार (उपकार			फकीर	४	२६२
का बदला)	६	१३०	वडा आदमी और बड़प्पन	६	६०
प्रभावशाली वक्ता	७	७१	वन (पराक्रम)	६	६०

बल (सेना)  
बलवान व्यक्ति  
बहु  
बात  
बात का निर्वाह  
बात करते समय  
सावधानी

बालक  
बालको की उच्छ्रु खलता  
बालको की सरलता  
बालको के गुण और दोष  
बालको के निर्माण की  
कुछ विधियाँ  
बालको को बिगाडने  
एव सुधारने वाले  
अभिभावक  
बिगाड  
बीद-बीदणी की अद्भुत  
जोडी  
बुद्धि एव उसके फल  
और गुण  
बुद्धि का महत्त्व  
बुद्धि के भेद  
बुद्धिमत्ता  
बुद्धिमान् एव मूर्ख मे  
अन्तर

वक्तृत्वकला के बीज भाग दसवा

भाग	पृष्ठ	बुद्धिमानो के कर्तव्य	भाग	पृष्ठ
६	१४२	बुराई-दुर्जनता	३	२७०
६	८४	बुरे लेखक	६	४१
६	३१२	वेईमानी के चित्र	४	७०
७	८६	बोलने योग्य वाणी	१	२३५
७		व्याज	७	३८
		६३ ब्रह्मचर्य	६	२३४
		१७३ ब्रह्मचर्य की दुष्करता	२	१
		१६१ ब्रह्मचर्य की नव-गुप्तियों (बाडों)	२	३
		१८८ ब्रह्मचर्य की महिमा	२	१५
		१८० ब्रह्मचर्य के फल	४	४
		१८५ ब्रह्मचर्य सम्बन्धी उदाहरण	२	६
		२३७ ब्रह्मचर्य-सम्बन्धी उपदेश	२	१८
		ब्रह्मचारी	७	७
		ब्रह्मचारी को शिक्षा	२	१०
		ब्राह्मण	२	१२
		ब्राह्मण के अनेक रूप	२	१
		ब्राह्मण के लक्षण	२	६
		ब्राह्मण के विषय मे विशेष ज्ञातव्य	६	६
		२५८ भक्त	२	२
		२५२ भक्ति का स्वरूप	३	५
		२५४ भक्ति की महिमा	२	३
		२६२ भक्ति के भेद	३	३
		२६४ भक्ति के विषय मे स्फुट विचार	३	३
		२७२	३	३६

भय  
भय आवश्यक  
भयभीत  
भयसम्बन्धी  
भयसम्बन्धी  
भलाई (सज्ज  
भलाई-बुराई  
भवितव्यता (नियति)  
भवितव्य  
भविष्य  
भार्य  
भार्य

	भाग	पृष्ठ		भाग	पृष्ठ
भक्तों के लिये शिक्षा	१	४७	भारत में पशु धन	५	३१३
भक्तों के दश भगवान	१	४९	भारत में दूध	५	३१३
भगवान का निवास	१	२५	भारतीय इतिहास की प्रमुख		
भजन बिना जीवन सूना	१	९३	तिथियाँ	५	३१५
भयकर भूले	३	१५८	भारत में साक्षरता	५	३१९
भय	३	१२२	भारत की बड़ी चीजें	५	३२१
भय आवश्यक	३	१०४	भारत की कतिपय विशेष		
भयभीत	३	१२७	ज्ञातव्य बातें	५	३२३
भयसम्बन्धी कहावतें	३	१२८	सूर्योदय-सूर्यास्त सारणी	५	३२६
भयसम्बन्धी दृष्टान्त	३	१२९	संसार के प्रमुख नगरों के		
भलाई (सज्जनता)	६	३८	समय एवं दूरिया	५	३२८
भलाई-बुराई की अमरता	६	४४	भारत की राजनैतिक		
भवितव्यता (होनाहार- नियति)	८	१८०	स्थिति	६	८५
भवितव्यता के दृष्टान्त	८	२९७	भारत के कुछ दर्शनीय		
भविष्य की मूचनाएँ	८	२७	स्थान	८	२५७
भाग्यवान	८	१८०	भारत में विदेशी दूतावास		
भाग्यहीन	८	१८५	एवं उच्चायुक्त	६	१२१
भाग्यानुसार लाभ	८	१७३	भावना	७	१
भारत	५	३०५	भावनाकी प्रसुप्तता	७	३
भारत की आवादी	५	३०५	भावना के भेद	७	७
भारत गणराज्य के			भावनानुसार फल	७	४
अन्तरवर्ती राज्य	५	३०७	भावना में लाभ	७	९
भारत की जन-संख्या का			मापण	७	८७
आयु विवरण	५	३११	भापा (बाणी)	७	१६
भारत में वे घर और			भापा के प्रकार	७	०१
घर वाले	५	३१२	भिन्नता	७	३०८
			भिक्षु	४	२५०

# वक्तृत्वकला के बीज भाग दसवा

बल (सेना)  
बलवान व्यक्ति  
बहू  
बात  
बात का निर्वाह  
बात करते समय  
सावधानी

बालक  
बालको की उच्छूल खलता  
बालको की सरलता  
बालको के गुण और दोष  
बालको के निर्माण की  
कुछ विधियाँ  
बालको को बिगाडने  
एव सुधारने वाले  
अभिभावक  
विवाड  
बीद-बीदणी की अद्भुत  
जोडी  
बुद्धि एव उसके फल  
और गुण  
बुद्धि का महत्त्व  
बुद्धि के भेद  
बुद्धिमत्ता  
बुद्धिमान्  
बुद्धिमान् एव मूर्ख मे  
अन्तर

बुद्धिमानो के कर्तव्य  
बुराई-दुर्जनता  
बुरे लेखक  
वेईमानी के चित्र  
बोलने योग्य वाणी  
व्याज

ब्रह्मचर्य  
ब्रह्मचर्य की दुष्करता  
ब्रह्मचर्य की नव-गुप्तियाँ  
(बाडें)  
ब्रह्मचर्य की महिमा  
ब्रह्मचर्य के फल  
ब्रह्मचर्य सम्बन्धी उदाहरण  
ब्रह्मचर्य-सम्बन्धी उपदेश  
ब्रह्मचारी  
ब्रह्मचारी को शिक्षा  
ब्राह्मण  
ब्राह्मण के अनेक रूप  
ब्राह्मण के लक्षण  
ब्राह्मण के विषय मे  
विशेष ज्ञातव्य

भक्त  
भक्ति का स्वरूप  
भक्ति की महिमा  
भक्ति के भेद  
भक्ति के विषय मे  
स्फुट विचार

भाग	पृष्ठ	भाग	पृष्ठ
६	१४२	३	२७०
६	८४	६	४.
३१२		४	७०
८६		१	२३५
६६		७	३८
		६	२३४
		२	१
		२	३
७	६३	२	१५
७	१७३	२	४
७	१६१	२	१८
७	१८८	२	७
७	१८०	२	१०
७	१८५	२	१२
७	२३७	२	१
६	२३७	२	६
६	२३७	२	६
२	६८	२	६
३	२५८	२	५
३	२५२	२	३६
३	२५४	२	३१
३	२६२	२	३३
३	२६४	२	३४
		२	३६
		२	२७२

	भाग	पृष्ठ		भाग	पृष्ठ
भक्तो के लिये शिक्षा	१	४७	भारत मे पशु वन	५	३१३
भक्तो के वश भगवान	१	४६	भारत मे दूध	५	३१३
भगवान का निवास	१	२५	भारतीय इतिहास की प्रमुख		
भजन बिना जीवन सूना	१	६३	तिथियाँ	५	३१५
भयकर भूले	३	१५८	भारत मे साक्षरता	५	३१६
भय	३	१२२	भारत की बडी चीजे	५	३२१
भय आवश्यक	३	१२४	भारत की कतिपय विधेय		
भयभीत	३	१२७	ज्ञातव्य बातें	५	३२३
भयसम्बन्धी कहावतें	३	१२८	सूर्योदय-सूर्यास्त मारणी	५	३२६
भयसम्बन्धी दृष्टान्त	३	१२६	सतार के प्रमुख नगरो के		
भलाई (सज्जनता)	६	३८	ममय एव दूरिया	५	३२८
भगवार्त्-बुराई की अमरता	६	४४	भारत की राजनैतिक		
भवितव्यता (होनहार-			स्थिति	६	८५
नियति)	८	१८०	भारत के कुछ दर्शनीय		
भवितव्यता के दृष्टान्त	८	२६७	स्थान	८	२५७
भविष्य की सूचनाएँ	८	२७	भारत मे विदेशी दूतावास		
भाग्यवान	८	१८०	एव उच्चायुक्त	६	१२१
भाग्यहीन	८	१८५	भावना	७	१
भाग्यानुसार लाभ	८	१७३	भावनाकी प्रमुग्ता	७	३
भारत	५	३०५	भावना के भेद	७	७
भारत की आवादी	५	३-५	भावनानुसार फल	७	४
भारत गणराज्य के			भावना मे लाभ		६
न्तरवर्ती राज्य	५	३०८	भाषण	७	८७
भारत की जन-मन्या का			भाषा (वाणी)	७	१६
भायु विवरण	५	३११	भाषा के प्रकार	७	७१
भारत में वे घर और			भिन्नता	८	३-
घर वाले	५	३१८	भिन्नु	४	

# वक्तुत्वकला के बीज भाग दसवा

भूल  
भूल मे स्वाद  
भूखा

भूखा क्या नहीं करता  
भूल  
भूल के विषय मे विविध  
भूल को स्वीकार करता  
कठिन  
भूल पर हास्य  
भूल सुधार  
भोग

भोजन  
भोजन का ध्येय  
भोजन का समय  
भोजन की मात्रा  
भोजन की विधि  
भोजन की शुद्धि  
भोजन के बाद  
भोजन के भेद  
भोजन के समय दान  
भोजन कैसा हो ?  
भोजन मे आवश्यक तत्व  
भ्राता (भाई)  
मगलाचरण  
मदकपायी-तीव्रकपायी  
मतलब  
मद्य (मद्यनिषेध)

भाग पृष्ठ  
५ १२८ मद्यपान की मात्रा  
५ १३० मद्यपान के दुर्गुण  
५ १३२ मन शुद्धि  
५ १३३ मन शुद्धि के अभाव मे  
३ १४६ मन शुद्धि दुष्कर  
३ १५६ मन शुद्धि के बिना जलादि  
से आत्मशुद्धि नहीं

३ १५४ मन  
३ १५१ मन के विषय  
३ २५२ मन के गुण  
२ ३४ मन की पहचान  
५ ८४ मन का वेग  
५ १०१ मन की ताकत  
५ १०३ मन का तार  
५ १०८ मन का स्वभाव  
५ ८५ मन की उपमाएँ  
५ १०२ मन की मुख्यता  
५ १०७ मन के अश्रित बन्ध-  
५ ६१ भोक्षादि  
५ १०५ मन के पीछे सुख-दुःख  
५ ८८ मन के बिना कुछ नहीं  
५ ६५ मन के विषय मे विविध  
५ ३१७ मन को शिक्षा  
१ १ मनचाहा काम  
३ ७५ मनुष्य का कर्तव्य  
३ १४५ मनुष्य का महत्त्व  
३ ६५ मनुष्य का स्वभाव

भाग पृष्ठ  
६ ६७  
६ ८६  
६ २६६  
६ ३०२  
६ ३०१

६ २२  
६ २८८  
६ २८८  
६ २८६  
६ २८६  
६ २८६  
६ २८६  
६ २९०  
६ ३१०  
६ २६१  
६ ३१३  
६ २६४

६ २६२  
६ २१३  
६ २६७  
६ ३१६  
६ ३०३  
६ १३५  
६ २३७  
५ २४०  
५ २३५

	भाग	पृष्ठ		भाग	पृष्ठ
मनुष्य की दस अवस्थाएँ	५	२४४	महापाप	१	१६४
मनुष्य के प्रकार	५	२४६	महापुरुष-महात्मा	६	४६
मनुष्य के लिये शिक्षाएँ	५	२३८	महापुरुषों का पराक्रम	६	५३
मनुष्य के विषय में			महापुरुषों का सम्पर्क	६	५८
ज्ञातव्य बातें	५	२७५	महापुरुषों के विषय में		
मनुष्य जन्म की दुर्लभता	५	२५६	विविध	६	५५
मनुष्य जन्म की प्राप्ति	५	२५३	महाव्रत	४	२०२
मनुष्य जन्म की श्रेष्ठता	५	२५४	मागलिक तत्त्व	१	२
मनुष्यलोक	५	२७७	मागलिक पद्य	१	४
मनुष्य-संसार	५	२३०	मांस	६	५१
मनोनिग्रह	६	३०४	मांस की ताकत कम	६	५६
मनोनिग्रह के मार्ग	६	३०६	मांसत्याग का महत्त्व	६	५५
मनोनिग्रह से लाभ	६	३०८	मांस-निषेध	६	५३
मन्त्री कितने हों ?	६	११४	मांस भक्षणों के लिये		
ममता	२	१६४	ध्यान देने योग्य बातें-	६	६२
ममता और समता	२	१६६	मासाहार से होने वाले		
ममता के विषय में			भयकर रोग	६	५७
कहावते	२	१६७	माता	८	२७७
मरण	७	२३४	माता-पिता	८	२८२
मरण के भेद आदि	७	२४८	माता-पिता के अनुरूप पुत्र	८	२६१
मरते समय भी निर्भय	७	२४१	मानत्याग	३	२४
मरने के बाद	७	२४४	मानवता	५	२६०
मर्मघातक वाणी	७	५०	मानस तीर्थ	६	१७
महत् पुरुषों का मन मान	३	४१	माया (कपट)	३	६३
महत्त्वपूर्ण शिक्षाएँ	३	२४५	मायात्याग का उपदेश	३	६७
महान् कवि	४	५२	मायावी व्यक्ति	३	६५
महान् दूत	८	२१८	मित भोजन	५	११०





	भाग	पृष्ठ		भाग	पृष्ठ
युद्ध के कतिपय नियम	६	१५२	राज्य	६	१३०
युद्ध में पहले विचारणीय वातों	६	१५०	राज्यकोष (खजाना)	६	१४१
योग	४	२०६	राज्य-मन्त्री	६	११३
योगमहिमा	४	२०८	रात्रि भोजन के त्याग से लाभ	५	१२७
योगियों के चमत्कार	४	२१५	रात्रिभोजन-निषेध	५	१२१
योगी	४	२११	रात्रिभोजन से हानि	५	१२५
योग्य श्रोता	७	११२	रामकृष्णपरमहंस का अदभुत अभ्यास	८	१०७
यौवन	७	१६६	रामायण में प्रयुक्त किये जाने वाले भाषाश्लोक	६	३३४
यौवन का अनर्थकारित्व	७	१६८	राष्ट्रपतिपद के विषय में चिन्तन	६	६४
रसिक श्रोताओं के अभाव में कवि	४	४८	राष्ट्र (देश)	६	१३६
राक्षसी खुराक वाले व्यक्ति	५	११७	रासायनिक तुलनात्मक चार्ट	५	६६
राग	२	२७०	रिवाज (रूढ़ि)	३	१६२
राग-द्वेष	२	२७४	रिश्वत	१	१३६
राग-द्वेष के क्षय से लाभ	२	२७६	रिश्वत के वयान	१	२६७
राज कर्मचारी	६	१२३	रिश्वत न लेनेवाले विरले	१	२७०
राजगुरु	६	११२	रिश्वती राज्यकर्मचारी	१	२६८
राजदूत	६	११७	रैलगाडी एव मोटरों	६	३२४
राजनीति	६	८३	रोग	७	१४३
राजनीतिज्ञ	६	६३	रोग के प्रकार	७	१४५
राजमेवक	६	१७७	रोगी	७	१४७
राजसेवा	६	१७६	रोगी की सेवा	७	१४६
राजा (राजा की महिमा)	६	६५	रोदन	३	११८
राजा की कमिया	६	१०३	तदन में सवा लाख वेश्याएँ	२	१२७
राजा के धर्म (कर्तव्य)	६	१००			
राजाओं के प्रकार	६	१०८			

६८

भूगोल के रिकार्ड  
 सप्ताह के बड़े शहर और  
 उनकी आबादी  
 वर्तमान विश्व के निरक्षर और  
 अघो की सख्या  
 विश्व के प्रलयकारी भूकम्प  
 विश्वास  
 विश्वास के अयोग्य  
 विश्वासघात  
 विश्राम  
 विषय-वासना  
 वृद्ध  
 वृद्ध ऐसा चितन करें ?  
 वृद्धो का सम्मान  
 वृद्धो के प्रकार  
 वृद्धि  
 वैश्या-निन्दा  
 वैज्ञानिको के मतानुसार  
 पृथ्वी आदि का जन्म-  
 काल  
 वैदिक सस्कृति मे ब्राह्मण  
 और शूद्र  
 वैद्य  
 वैद्यो के प्रकार  
 वैधावृत्त्य  
 वैर  
 वैर के बदले

वक्तृत्वकला के बीज भाग दसवा

भाग ५ पृष्ठ २६८

वैर-त्याग  
 वैराग्य  
 वैराग्य की महिमा  
 वैराग्यवान  
 वैरी  
 वैरी के साथ व्यवहार  
 वैवाहिक रीति-रिवाज का  
 रहस्य  
 वैश्य (वणिक्)  
 व्यय  
 व्यर्थ अभिमान  
 व्यर्थ काम  
 व्यवहार  
 व्यवहारिक एव आध्यात्मिक  
 दृष्टि से वस्तुओं की शुद्धि  
 व्यसन  
 व्यापारी  
 व्रत  
 शकुन  
 शकुनज्ञ एव उनकी  
 आश्चर्यजनक बातें  
 शत्रु के रूप मे पुत्र  
 शम (शान्ति)  
 शरावियो की दुर्दशा  
 शरीर  
 शरीर का महत्त्व  
 शरीर का वेग

भाग २ पृष्ठ २३२  
 ३ १६८  
 ३ १६६  
 ३ १७१  
 २ २३४  
 २ २३६  
 ३०२  
 ३०३  
 १३६  
 १३६  
 १४२  
 ६०  
 २३  
 २०२  
 २०६  
 २०५  
 २०७  
 २३७  
 १२४  
 २७६  
 १५५  
 १५७  
 ६५  
 २३०  
 २३६

शरीर का व्यायाम  
 शरीर की अतिलयता  
 शरीर की उपमाएँ  
 शरीर की निन्दनीयता  
 शरीर के अन्दर  
 जन्म  
 मोक्ष  
 मोक्ष की महिमा  
 शारीरिक दोष पर  
 आधारित अ  
 साक  
 शासन  
 मित्र  
 मित्रा  
 मित्रा के योग्य  
 पात्र  
 मित्राप्रहण  
 मित्रा-दान  
 मित्रों और  
 मित्र  
 मित्रों  
 ५८  
 २०२  
 २२५  
 २७  
 ११८  
 १४८  
 २७  
 ४६  
 २१३  
 १६६  
 २६६  
 ३०५  
 ३०२  
 २०५  
 ७२  
 ११६  
 १२६  
 १३४

	भाग	पृष्ठ		भाग	पृष्ठ
शरीर का व्यायाम	७	१३२	शूद्र के विषय मे विशेष	६	११
शरीर की अनित्यता	७	१२८	शूरता और कायरता	६	८३
शरीर की उपमाएँ	७	१३१	शूर-वीर पुरुष	६	७८
शरीर की निदनीयता	७	१३०	शोक	३	१११
शरीर के अन्दर	७	१२२	शोक-निषेध	३	११४
शस्त्र	६		श्रद्धा	४	१२७
शान्ति	२	२०६	श्रद्धावान	४	१२६
शान्ति की महिमा	२	२०८	श्रम	८	८५
शारीरिक दोष पर		१४५	श्रम की कमाई	८	८७
आधारित अधमता	६	६७	श्रमण	४	२५२
शासक	६	१८६	श्रवण (सुनना)	७	१०४
शासन	६	१८७	श्रवण का असर	७	१०६
शिकार	१	१६६	श्राद्ध	६	४०
शिक्षा	३	२३६	श्राद्ध आदि मे मास का		
शिक्षा के योग्य-अयोग्य			विधान और निषेध	६	४४
पात्र	३	२४३	श्राद्ध के योग्य-अयोग्य		
शिक्षाग्रहण	३	२३८	ब्राह्मण	६	४२
शिक्षा-दान	३	२४२	श्राद्ध को न मानने वालों		
शिष्टों और दृष्टों की			का मतव्य	६	४३
मित्रता	२	३१८	श्रावक (श्रावक की पूर्व		
शिष्यों को आचार्य का			भूमिका)	५	१
उपदेश	१	८५	श्रावक का स्वरूप	५	६
शिष्यों पर अनुशासन			श्रावक के गुण	५	८
करते समय	१	१०२	श्रावक के विषय मे		
शील	४	१६६	विविध	५	१५
शुद्धि-शीघ्र	६	२६	श्रावक धर्म	५	१०
शुभाशुभशकुन	६	३०१	श्रेष्ठ	६	२३२

श्रेष्ठ जीवन  
 श्रेष्ठ राजा  
 श्रेष्ठ वैद्य  
 श्रोता  
 सक्षिप्तवाणी  
 सख्या  
 सगठन  
 सगति के दोष

सग्रह  
 सत  
 सतान  
 सतो का सताप  
 सतोष  
 सतोष का उपदेश  
 सतोष से लाभ  
 सतोषी  
 सयम  
 सयम (दीक्षा) का समय  
 आदि  
 सयम की दुष्करता  
 सयम के भेद  
 सयम में सुख-दुःख  
 सयम से भ्रष्ट होने के  
 अठारह स्थान  
 सयम से लाभ  
 सयोग के साथ वियोग

वक्तृत्वकला के बीज

भाग पृष्ठ -

७ २१७  
 ६ ६७  
 ७ १५६  
 ७ ११०  
 ७ १५  
 ६ ३२७  
 २ ३२२  
 ६ ४५  
 ६ २३२  
 ४ २६४  
 ८ २८४  
 ४ २८६  
 २ १६८  
 २ १७२  
 ० १७१  
 ४ २२२  
 ४ २२६  
 ४ २३४  
 ४ २२८  
 ४ २३१  
 ४ २२४  
 ८ २३३

सयोजक  
 सशय  
 ससार  
 ससार का पागलपन  
 ससार का स्वभाव  
 ससार का स्वरूप  
 ससार की विशालता  
 ससार के भेद  
 ससार को उपमाएँ  
 मच्चाई के उदाहरण  
 सच्चा धर्माचरण  
 सच्चे भक्त  
 सच्चे व्यक्ति  
 सच्चे व्यक्ति का चिन्तन  
 सच्चो का सम्मान  
 सज्जन  
 सज्जन-दुर्जन का अन्तर  
 सज्जनों का स्वभाव  
 सज्जनों के स्वभाव की  
 निश्चलता  
 सती-प्रथा  
 सत्ता  
 सत्य  
 सत्य का उपदेश  
 सत्य की महिमा  
 सत्य के पालन में कठिनाई  
 सत्य के प्रकार

भाग दसवा

भाग पृष्ठ

४ ६५  
 ४ १३४  
 ५ १५७  
 ५ १७१  
 ५ १७४  
 ५ १५६  
 ५ १८६  
 ५ १६१  
 ५ १८०  
 १ २२६  
 १ १४१  
 १ ४४  
 १ २२२  
 १ २२३  
 १ २२७  
 १ १  
 ६ ६  
 ६ ६  
 २ १८८  
 १ २०१  
 १ २१२  
 १ २०८  
 १ २१३  
 १ २०६

दूसरी संज्ञादि

वक्त्रिय में कहवते ?  
 वक्त्रिय में विविध ?  
 वक्त्र  
 वक्त्र को प्रेरणा  
 वक्त्र  
 वक्त्र का प्रभाव  
 वक्त्रयुक्त  
 वक्त्र  
 वक्त्र

मम का सम्पुयोग  
 मम को कीमत  
 ममसुख का मम  
 ममसुखी वाली  
 ममसुख  
 ममसुखी  
 ममसुखी

## विषयो का अकारादिक्रम

	भाग	पृष्ठ		भाग	पृष्ठ
सत्य के विषय मे कहावतें	१	२२८	सम्यग्दृष्टि	४	१२३
सत्य के विषय मे विविध	१	२१४	सरल एव कुटिल व्यक्ति	३	६२
सत्य वचन	१	२१६	सलाह के विषय मे विविध	४	१५
सत्य वचन की प्रेरणा	१	२१८	सलाह लेना जरूरी	४	१४
सत्यवादी	१	२२४	ससुराल	८	३११
सत्सगति	६	१०	सहज एव सच्चा प्रेम	८	२८५
सत्सगति का प्रभाव	६	११	सहयोग	८	२३४
सद्भाग्य-पुण्योदय	८	१७६	सहवास के लिये निषिद्ध		
सफलता	८	६०	समय एव स्थान	२	७१
सबको दुःख	५	१६६	सहारा-सहानुभूति	२	२३५
सम्यता	४	२०४	सासारिक सुख	८	२०१
समता	२	२११	मात व्यसन और उनमे		
समय	८	३४	हानि	६	४७
समय का सदुपयोग	८	३७	साधना	४	२४८
समय की कीमत	८	३५	साधु	४	२३६
समयानुसार काम	८	४०	साधुओ का निवासस्थान	४	३०८
ममयोपयोगी वाणी	७	४२	साधुओ का विहार	४	३१४
समर्थ-पुरुष	६	७७	साधुओ की गोचरी	४	२६१
समाधि	५	८०	साधुओ के गुण	४	२८५
समानता (बराबर)	६	२२६	साधुओ को शिक्षा	४	२२८
सम्मति	४	१२	साधुओ के पात्र	४	३१२
सम्मान की इच्छा का निषेध	३	४६	साधुओ के वारह समोग		
मम्यक्त्व का महत्व	४	१२०	और उनका विच्छेद	४	३२७
मम्यक्त्व की दुर्लभता	४	११८	साधुओ के लिये कल्प	४	३२२
सम्यक्त्व से लाभ	४	११६	अकल्प	४	३१०
सम्यग्ज्ञान	३	१८६	साधुओ के वस्त्र	३	३२५
सम्यग्दर्शन (सम्यक्त्व)	४	११४	साधुओ के सुख		

वक्तृत्वकला के बीज	भाग	दसवा	पृष्ठ	भाग	पृष्ठ	भाग	पृष्ठ
साधु का आहार	४	३०२	सुमिक्ष-दुर्मिक्ष के लक्षण	५	१२	भाग	५
साधु की भाषा	४	३१७	सुमार्या	२	६१	भाग	५
साधु-सर्गति	४	२८६	सुभाषित-सूक्ति	७	३६	भाग	५
साधु-दर्शन	६	२८७	सुमित्र एव सच्चामित्र	२	३०७	भाग	५
सामान्य नीति	५	२५३	सुयोग्य आचार्य	१	७६	भाग	५
सामायिक	५	१६	सुराज्य [अच्छी सरकार]	६	१३१	भाग	५
सामायिक का प्रभाव	५	२५	सुषम-दुष्पमकाल के लक्षण	५	१०	भाग	५
सामायिक के विषय में विविध	१	२२०	सुस्त्री-प्रशसा	१	१४४	भाग	५
सावद्य सत्य का निषेध	१	६३	सेवक	६	१७१	भाग	५
सावधानी और असावधानी	५	६७	सेवक की दयनीय दशा	६	१७३	भाग	५
साहस	४	६२	सेवा	६	१७५	भाग	५
साहित्य	६	७७	मोनार	३	२२२	भाग	५
सिगरेट	५	२५३	सोने के समय	७	२६	भाग	५
सिद्धान्त	४	१६३	सोलह सस्कार	२	१७५	भाग	५
सुख	५	१६३	स्त्रियो की सबलता	२	११२	भाग	५
सुख के भेद	५	१६७	स्त्री की निरकुशता	२	११०	भाग	५
सुख के स्रोत	५	२०६	स्त्री के दोष	२	१०४	भाग	५
सुख-दुख	५	२०५	स्त्री के लिये निकृष्ट उपमाएँ	२	१०६	भाग	५
सुख-दुख का जोडा	५	२१२	स्त्री के विषय में कहावतें	२	१२२	भाग	५
सुख-दुखमय ससार	५	२१४	स्त्री-धन	२	१२१	भाग	५
सुख में धर्म की विस्मृति	५	१६७	स्त्रीनाश के कारण	२	११६	भाग	५
सुखी	५	२०३	स्त्री-सम्मान	२	११७	भाग	५
सुपात्रदान	५	२०६	स्त्री-स्वभाव	२	१०२	भाग	५
सुपुत्र	५	१५६	स्थविर	४	२५८	भाग	५
सुपुत्र-कुपुत्र	५	२६८	स्थान	५	२५१	भाग	५
सुबुद्धि एव कुबुद्धि	३	३०३					
		२५७					

	भाग	पृष्ठ		भाग	पृष्ठ
स्थान-त्याग	८	२५५	स्वाधीन (स्वतन्त्र)	६	१८१
स्थान-भ्रष्ट	८	२५३	स्वाधीनता	६	१८३
म्नान	६	१२	स्वाध्याय	४	७३
स्तान-निषेध	६	१४	स्वाध्याय-ध्यान की प्रेरणा	५	७८
स्नेह	२	२७६	स्वामी	६	१६७
स्नेहत्याग	२	२८१	स्वामी का प्रसाद	६	१६६
स्याद्वाद	४	१५६	स्वामी के कर्त्तव्य	६	१६८
स्वजन-ज्ञाति	८	२७३	स्वार्थ	३	१४३
स्वकृत कर्म ही सुख- दुःख के दाता	८	१५५	स्वास्थ्य-भारोग्य	७	१३८
स्वतन्त्र	६	१८२	हमी आनेवाली बातें	७	६१
स्वदोष	६	११६	हठ (भाग्य)	३	१६०
स्वधर्म-परधर्म	१	१४८	हाजिर जवाब	३	२८२
स्वपक्ष	८	२७२	हाँजीडे (खुशामदी)	३	१४८
स्वप्न	३	६०	हाँ में हाँ मिलाने वाले	७	६४
स्वप्रशसक	३	५४	हाथ कमाया काम	८	१३६
स्वभाव	८	५८	हास्य	३	१३१
स्वभाव का परिवर्तन कठिन	८	६३	हास्य-निषेध	३	१३३
स्वभाव न छोड़ने वाले	८	६५	हिंसा	१	१६४
स्वामाविकता नहीं छिपती	८	६६	हिंसा के प्रकार	१	१६७
स्वराज्य (प्रजातन्त्र राज्य)	६	१३८	हिंसात्मक यज्ञ	६	३१
स्वरो का रहस्य एव उनके आधार पर भविष्य की सूचनाएँ	८	२६	हिंसात्मक यज्ञों का निषेध	६	३२
स्वस्थ (नीरोग)	७	१४०	हिंसा में धर्म नहीं	१	१६८
			हिन्दुपर्व	६	२६२
			हिम्मत	८	६६
			हिम्मतहार मत बनो !	८	१००



# वक्तृत्वकला के बीज भाग १ से ६ में उद्धृत ग्रन्थ एव व्यक्ति

- |                                      |                                   |
|--------------------------------------|-----------------------------------|
| ग्रन्थ                               | २२ अमूल्य शिक्षा                  |
| १ अगिरास्मृति                        | २३ अर्चना और आलोक                 |
| २ अगुत्तरनिकाय                       | २४ अवेस्ता                        |
| ३ अग्निपुराण                         | २५ अष्टकप्रकरण                    |
| ४ अणुत्रत<br>(मासिक)                 | २६ अष्टाङ्गहृदय                   |
| ५ अत्रिमहिता                         | २७ आइने-अकबरी                     |
| ६ अत्रिस्मृति                        | २८ आकर्षणशक्ति                    |
| ७ अथर्ववेद                           | २९ आर्कलैंड (दैनिक)               |
| ८ अध्यात्मकल्पद्रुम                  | ३० आगम और त्रिपिटक<br>एक अनुशीलन  |
| ९ अध्यात्मरामायण                     | ३१ आचारङ्गनीति                    |
| अध्यात्मसार                          | ३२ आचाराङ्गनिर्युक्ति             |
| १ अध्यात्मोपनिषद्                    | ३३ आचाराङ्गसूत्र                  |
| १२ अनुयोगद्वार सूत्र                 | ३४ आचार्य शिवनारायण<br>की रिपोर्ट |
| १३ अन्ययोगव्यवच्छेदद्वारिंत्रिशिक्षा | ३५ आतुरप्रत्याख्यान               |
| १४ अपरोक्षानुभूति                    | ३६ आत्मपुराण                      |
| १५ अभिज्ञानशाकुन्तल<br>(शाकुन्तल)    | ३७ आत्मविकास                      |
| १६ अभिघम्मपिटक                       | ३८ आत्मानुशासन                    |
| १७ अभिघानचिन्तामणि<br>(हैमकोप)       | ३९ आपका व्यक्तित्व                |
| १८ अभिघानराजेन्द्र कोप               | ४० आपस्तम्बधर्मसूत्र              |
| १९ अमर-उजाला (दैनिक)                 | ४१ आपस्तम्बस्मृति                 |
| २० अमरभारती (मासिक)                  | ४२ आप्तमीमासा                     |
| अमितिगति-श्रावकाचार                  | ४३ आवश्यक अवचूरी                  |

२६० पृथ एव

४४ आदर्शक नियुक्ति

४५ आत्मस्यक

४६ आत्मस्यकसूत्र

४७ आत्मा अद्वैत

(गाली धर्म)

४८ इजैल

४९ इतिवृत्तक

५० इतिहास

५१ इतिहास

५२ इन्ववृत्ता

विषयक पु

५३ इष्टोपदेश

५४ इस्लाम

५५ ६२

५६ ९

५७ ७७

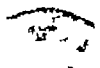
५८ ७

५९ ७७

६० ७

६१ ७

- |   |                                |
|---|--------------------------------|
| ४४ आवश्यक निर्युक्ति                          | ७० उर्दू शेर                   |
| ४५ आवश्यक मलयगिरि                             | ७१ ऋग्वेद                      |
| ४६ आवश्यकसूत्र                                | ७२ ऋषिमापित                    |
| ४७ आवा अद्वी सुर्यस्त<br>(पारसी धर्मग्रन्थ)   | ७३ ऐतरेयब्राह्मण               |
| ४८ इजील                                       | ७४ ओघनिर्युक्ति                |
| ४९ इतिवुत्तक                                  | ७५ औपपातिकसूत्र                |
| ५० इतिहासतिमिरनाशक                            | ७६ कठोपनिषद्                   |
| ५१ इतिहाससमुच्चय                              | ७७ कथालोक (मासिक)              |
| ५२ इन्वतूता-लिखित भारत-यात्रा<br>विषयक पुस्तक | ७८ कथासरित्सागर                |
| ५३ इष्टोपदेश                                  | ७९ कमल नाहटा का सग्रह          |
| ५४ इस्लामधर्म क्या कहता है ?                  | ८० कल्पतरु                     |
| ५५ ईश्वरगीता                                  | ८१ कल्पसूत्र                   |
| ५६ ईशावास्योपनिषद्                            | ८२ कल्याण (मासिक)              |
| ५७ उज्ज्वलवाणी                                | ८३ कल्याण-गोमक                 |
| ५८ उत्तररामचरित                               | ८४ कल्याण-बालक अक              |
| ५९ उत्तराध्ययन-टीका                           | ८५ कल्याण-सत अक                |
| ६० उत्तराध्ययन निर्युक्ति                     | ८६ कल्याण-सत्कथाङ्क            |
| ६१ उत्तराध्ययन-वृहद् वृत्ति                   | ८७ कविता कौमुदी                |
| ६२ उत्तराध्ययनसूत्र                           | ८८ कवितावली                    |
| ६३ उदान                                       | ८९ कस्तूरी प्रकरण<br>(कहावतें) |
| ६४ उद्भटसागर                                  | ९० (क) अग्नेजी कहावतें         |
| ६५ उपदेशतरङ्गिणी                              | ९१ (ख) अरवी कहावतें            |
| ६६ उपदेश प्रासाद                              | ९२ (ग) इटालियन कहावतें         |
| ६७ उपदेशमाला                                  | ९३ (घ) ईरानी कहावतें           |
| ६८ उपदेशसुमनमाला                              | ९४ (ङ) उर्दू कहावतें           |
| ६९ उपासकदशाङ्गसूत्र                           | ९५ (च) गुजराती कहावतें         |
|   | ९६ (छ) चीनी कहावतें            |



- ६७ (ज) जर्मनी कहावतें  
 ६८ (झ) जापानी कहावतें  
 ६९ (ञ) डच कहावतें  
 १०० (ट) डेनिस कहावतें  
 १०१ (ठ) पजाबी कहावतें  
 १०२ (ड) पारसी कहावतें  
 १०३ (ढ) बगला कहावतें  
 १०४ (ण) मराठी कहावतें  
 १०५ (त) मालावारी कहावतें  
 १०३ (थ) राजस्थानी कहावतें  
 १०७ (द) रूसी कहावतें  
 १०८ (ध) संस्कृत कहावतें  
 १०९ (न) हिन्दी कहावतें  
 ११० कात्यायन स्मृति

- १११ कादंबिनी  
 ११२ किरातार्जुनीयम्  
 ११३ किशनवावनी  
 ११४ कार्तिकेयानुप्रेक्षा  
 ११५ कुमारपाल चरित्र  
 ११६ कुमारसम्भव  
 ११७ कुरानशरीफ  
 ११८ कुशक्षेत्र  
 ११९ कुवलयानन्द  
 १२० कूटवेद  
 १२१ केनोपनिषद्  
 १२२ केन्टकी का उद्देश्य  
 १२३ कौटिलीय-अर्थशास्त्र  
 १२४ खुले आकाश मे

- वक्तृत्वकला के बीज भाग दसवा  
 १२५ गच्छाचार-प्रकीर्णक  
 १२६ गणधरवाद  
 १२७ गरुडपुराण  
 १२८ गलगचिया  
 १२९ गीता  
 (श्रीमद् भगवद् गीता)

- १३० गीताञ्जलि  
 १३१ गीताभाष्य  
 १३२ गुजराती पद्य  
 १३३ गुरुग्रन्थ साहिब  
 १३४ गुर्जर भजनपुष्पावली  
 १३५ गुलिस्ता  
 १३६ गृहस्थ-धर्म  
 १३७ गोटम कुलक  
 १३८ गोटम स्मृति  
 १३९ गोपथ ब्राह्मण  
 १४० गोम्मटसार  
 १४१ गोरक्ष-शतक  
 १४२ गोवर्धन सप्तशती  
 १४३ घटखर्पर का नीतिसार  
 (नीतिसार)  
 १४४ चढी कला  
 १४५ चन्द्रराजानो राम  
 १४६ चन्द्रचरित्र (संस्कृत)  
 १४७ चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्र  
 १४८ चरकसहिता  
 १४९ चरकमूत्र  
 १५० चपटपजरिका

- १५१ चरित्ररत्ना  
 १५२ चाणक्यनीति  
 १५३ चाणक्यसूत्र  
 १५४ चित्राम की  
 १५५ चीनी  
 १५६ चेला ( )  
 १५७ छान्दोग्यो  
 १५८ वनगण ( )  
 १५९ बतौरसा  
 १६० ब्रजुजी साहि  
 १६१  
 १६२ जगृति ( )  
 १६३ बातक  
 १६४ जापानी  
 १६५ जावाल  
 १६६ जाह्नवी  
 १६७ जीव  
 १६८ जी  
 १६९ जीवन  
 १७० जीवन  
 १७१ जीवा  
 ७२ जै  
 १७३ जैन  
 १७४ जैन  
 १७५ जैन  
 १७६ जै  
 १७७ ज्ञान  
 १७८

१५१ चरित्ररक्षा	१७६ ज्ञानसार
१५२ चाणक्यनीति	१८० ज्ञानार्णव
१५३ चाणक्यसूत्र	१८१ टॉड राजस्थान
१५४ चित्राम की चोपी	१८२ टी वी हैण्डबुक
१५५ चीनी सुभाषित	१८३ डेली मिरर (दैनिक)
१५६ चेतना (मासिक)	१८४ ड्यूनेडिन
१५७ छान्दोग्योपनिषद्	१८५ ढाका-रेजिडेन्ट
१५८ जनगण (साप्ताहिक)	१८६ तत्त्वानुशासन
१५९ जतीरासा	१८७ तत्त्वामृत
१६० जपुजी साहिव	१८८ तत्त्वार्थसूत्र
१६१ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति	१८९ तन्दुलवैचारिक
१६२ जागृति (मासिक)	१९० तपोष्टक
१६३ जातक	१९१ ताओ-उपनिषद् (ताओ तेह किंग)
१६४ जापानी लोककथा	१९२ ताण्ड्यमहाराष्ट्र
१६५ जावालश्रुति	१९३ तात्त्विक-त्रिगती
१६६ जाह्नवी	१९४ तालमुद्र
१६७ जीवकल्प	१९५ निरुक्रुल
१६८ जीवनप्रेरणा	१९६ तीन वात
१६९ जीवनलक्ष्य	१९७ तुलसी कविनावनी
१७० जीवन सौरभ	१९८ तैत्तिरीय-आरण्यक
१७१ जीवामिगमसूत्र	१९९ तैत्तिरीय-उपनिषद्
१७२ जैनत्व की शाकी	२०० तैत्तिरीय ब्राह्मण
१७३ जैनपाडवचरित्र	२०१ तोरा
१७४ जैनभारती	२०२ त्रिपटि-शलाकापुरुष चरित्र
१७५ जैनसिद्धान्तदोषिका	२०३ धेरगाथा
१७६ जैनसिद्धान्तबोल मग्रह	२०४ दक्षसहिता
१७७ ज्ञातामूत्र	
१८८ ज्ञानप्रकाश	



उद्धृत ग्रन्थ एव व्यक्ति

- २५६ निश्चयपञ्चात्  
 २६० नीतिवचन (पुरानी वाइविल)  
 २६१ नीतिवाक्यामृत  
 २६२ नैतिक पाठमाला  
 २६३ नैतिक विज्ञान  
 २६४ नैषधीयचरित्र  
 (नैषध)  
 २६५ न्यायदीप  
 २६६ न्युयार्क ट्रिव्यून हेराल्ड  
 २६७ पचतत्र  
 २६८ पचदशी  
 २६९ पचाशक  
 २७० पचास्तिकाय  
 २७१ पजाबकेसरी  
 २७२ पजाबी कविता  
 २७३ पथ के गीत  
 २७४ पद्मपुराण  
 २७५ पद्मानन्द महाकाव्य  
 २७६ पब्लियस साइरस  
 २७७ परमात्मद्वारिप्रशिका  
 २७८ परमानन्द पचविंशति  
 २७९ पराशरसहिता  
 २८० पराशरस्मृति  
 २८१ पहेलवी टेक्स्ट्म  
 २८२ पाच वात  
 २८३ पातजलयोग दर्शन  
 २८४ पारस्करस्मृति  
 २८५ पार्श्वनाथ-चरित्र  
 २८६ पिण्डनिर्युक्ति  
 २८७ पुरानी वाइविल  
 २८८ पुरुषार्थसिद्धियुपाय  
 २८९ पूर्वमीमासा  
 २९० पैबन्द  
 २९१ प्रकरणरत्नाकर  
 २९२ प्रज्ञापनासूत्र  
 २९३ प्रणिपातदण्डक-षडावश्यक टीका  
 २९४ प्रवचनडायरी  
 २९५ प्रवचनसार  
 २९६ प्रवचनसारोद्धार  
 २९७ प्रशमरति  
 २९८ प्रश्नव्याकरणसूत्र  
 २९९ प्रसगरत्नावली  
 ३०० प्राचीनचरित्रकोष  
 ३०१ प्राचीनसग्रह  
 ३०२ प्रायश्चित्तसमुच्चयवृत्ति  
 ३०३ प्रास्ताविक श्लोकशतक  
 ३०४ बगश्री  
 ३०५ बवई-समाचार  
 ३०६ वाइविल  
 ३०७ बालभारती  
 ३०८ बुद्ध और बौद्धमाघक  
 ३०९ बुद्धचरित्र  
 ३१० बृहत्कल्प-भाष्य  
 ३११ बृहत्कल्पसूत्र  
 ३१२ बृहत्पराशरसहिता  
 ३१३ बृहदारण्यकोपनिषद्

- ३१४ बृहद्ब्रह्मसंह
- ३१५ बृहन्नारदीयपुराण
- ३१६ बृहस्पतिस्मृति
- ३१७ वैदीदाद (पारसी व०)
- ३१८ बोधिचर्यावतार
- ३१९ ब्रह्मग्रन्थावली
- ३२० ब्रह्मपुराण
- ३२१ ब्रह्मविन्दूपनिषद्
- ३२२ ब्रह्मवैवर्तपुराण
- ३२३ ब्रह्मानन्दगीता
- ३२४ व्यावलो
- ३२५ भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक
- ३२६ भक्तामर-विवृति
- ३२७ भक्तिसूत्र
- ३२८ भगवतीसूत्र
- ३२९ भर्तृ हरि-नीतिशतक
- ३३० भर्तृ हरि-वैराग्यशतक
- ३३१ भर्तृ हरि-शृंगारशतक
- ३३२ भवभूति के गुणरत्न
- ३३३ भविष्यपुराण
- ३३४ भामिनीविलास
- ३३५ भारत का भूगोल
- ३३६ भारतज्ञानकोष
- ३३७ भारत भारती
- ३३८ भारत भारती मान चित्रावली
- ३३९ भारत सरकार द्वारा प्रकाशित पत्रिका

- वक्तृत्वकला के बीज भाग दसवाँ
- ३४० भारत सरकार द्वारा प्रकाशित हेल्थबुलेटिन
- ३४१ भारतीय-अर्थशास्त्र
- ३४२ भास्करवीय श्रुति
- ३४३ भावपाहुड
- ३४४ भावप्रकाश
- ३४५ भाषाश्लोकसागर
- ३४६ मिश्रुन्याय कर्णिका
- ३४७ भूदान पत्रिका
- ३४८ भोज प्रबन्ध
- ३४९ मज्झिमनिकाय
- ३५० मत्स्यपुराण
- ३५१ मनुस्मृति
- ३५२ मनोनुशासन
- ३५३ मन्यन
- ३५४ मरकुस (नयी वाइविल)
- ३५५ मरणसमाधि प्रकीर्णक
- ३५६ मरुवर-केसरी-ग्रन्थावली
- ३५७ मरुभारती
- ३५८ महानिद्देस पालि
- ३५९ महानिर्वाणतन्त्र
- ३६० महानिशीथभाष्य
- ३६१ महानिशीथ सूत्र
- ३६२ महापुराण
- ३६३ महाप्रत्याख्यान प्रकीर्णक
- ३६४ महाभारत
- ३६५ मानो न मानो ।
- ३६६ मारवाडी मजनमाला

- दृग्गण्य एव व्यक्त
- ३७ मार्कण्डेयपुराण
- ३८ मार्गशी
- ३९
- ४० मिररास निर्ग
- (यहूदी
- ४१ मिलाप (दैन
- ४२ मिलित्दप्रश्न
- ४३ मुक्ति
- ४४ मुण्ड
- ४५ मुताबुलसाद
- ४६ भुवारासस
- ४७ मुनि श्री
- ४८ मूलाचार
- ४९ मूच्छ्रकटि
- ५० मेगजीत
- ५१ मेघदूत
- ५२ मेडम द
- ५३ मैत्राय
- ५४ मो
- ५५ मो
- ५६ मो
- ५७
- ५८ मो
- ५९
- ६०
- ६१
- ६२ य
- ६३

३६७ मार्कण्डेयपुराण	३६४ यशत (पारसी धर्मग्रन्थ)
३६८ मार्गशीर्षएकादशी-माहात्म्य	३६५ यशन ( " " )
३६९ मालविकाग्निमित्र	३६६ याज्ञवल्क्यस्मृति
३७० मिदरास निर्गमन रत्ना (यहूदी धर्मग्रन्थ)	३६७ घालकल शिमेओ (यहूदी धर्मग्रन्थ)
३७१ मिलाप (दैनिक)	३६८ यू एन डेमोग्राफिक इयर बुक १९६६ तथा १९७०-७१
३७२ मिलिन्दप्रश्न	३६९ यू री पी डी जे
३७३ मुक्तिकोपनिषद्	४०० यूहन्ना के समाचार (नई वाईविल)
३७४ मुण्डकोपनिषद्	४०१ योगदर्शनभाष्य
३७५ मुतातुलसादीन	४०२ योगदृष्टिसमुच्चय
३७६ मुद्राराक्षस नाटक	४०३ योगविन्दु
३७७ मुनि श्री जवरीमलजी का सग्रह	४०४ योगवाङ्मिथ
३७८ मूलाचार	४०५ योगशास्त्र
३७९ मृच्छकटिक	४०६ योगशिल्पोपनिषद्
३८० मेगजीन डाइजेस्ट	४०७ योगसार
३८१ मेघदूत	४०८ योगसूत्र
३८२ मेडम दी स्नाल	४०९ रगभूमि
३८३ मैत्रायणी आरण्यक	४१० रघुवण
३८४ मोक्षपाहुड	४११ रत्नाकरपञ्चविंशिका
३८५ मोक्षप्रकाश	४१२ रश्मिमाला
३८६ मोक्षाष्टक	४१३ राजपूतीकथा
३८७ मोरली दी आरमामेट	४१४ राजप्रदनीयसूत्र
३८८ मोहमुद्गर	४१५ राजवार्तिक
३८९ मौनवाणी	४१६ रामचरितमानन (तुलसीरामायण)
३९० यजुर्वेद	
३९१ यज्ञरहस्य	
३९२ यतिधर्म नमुच्चय	
३९३ यशन्तिलकचम्पू	



- ४१७ रामजशरसायण  
४१८ रामशतसई  
४१९ राष्ट्रदूत (दैनिक)  
४२० रोड मेगजीन (अमेरिका)  
(रूपक)

- ४२१ गुजराती रूपक  
४२२ राजस्थानी रूपक  
४२३ लघुयोगवाशिष्ठसार  
४२४ लघुवाक्यवृत्ति  
४२५ सूका (नई वाइविल)  
४२६ लेटिनसूत्र  
४२७ लोक-प्रकाश  
(लोकोक्तिया)

- ४२८ (क) अरबी लोकोक्ति  
४२९ (ख) चैक लोकोक्ति  
४३० (ग) लेटिन लोकोक्ति  
४३१ (घ) वेल्स लोकोक्ति  
४३२ (ङ) स्पेनिश लोकोक्ति  
४३३ वशिष्ठस्मृति  
४३४ वायुपुराण  
४३५ वाल्मीकिरामायण  
४३६ विक्रमचरित्र  
४३७ विक्रमोर्वशीयनाटिका  
४३८ विचित्रा (त्रिमासिक)  
४३९ विज्ञान के नये आविष्कार  
४४० विदुरनीति  
४४१ विनयपिटक  
४४२ विपाकसूत्र

वस्तुत्वकला के बीज भाग दसवाँ

- ४४३ विवेकचूडामणि  
४४४ विवेकविलास  
४४५ विशुद्धिमगो  
४४६ विशेषावश्यक  
४४७ विशेषावश्यक-चाणूणि  
४४८ विशेषावश्यक-भाष्य  
४४९ विश्वज्ञानकोष  
४५० विश्वदर्पण  
४५१ विश्वमित्र (दैनिक)  
४५२ विश्वविजय पञ्चांग  
४५३ विश्वामित्रस्मृति  
४५४ विष्णुपुराण  
४५५ विष्णुस्मृति  
४५६ वीतरागस्तोत्र  
४५७ वीर अर्जुन (दैनिक)  
४५८ वीस्परत् (पारसी धर्मग्रन्थ)  
४५९ वेदान्तदर्शन  
४६० वैदिकधर्म क्या कहता है ?  
४६१ वैदिक विचार-विमर्शन  
४६२ वैद्यक शास्त्र  
४६३ वैद्यरसराममुञ्जय  
४६४ वैशेषिकदर्शन  
४६५ व्यवहारचूलिकामाष्य  
४६६ व्यवहार-भाष्य  
४६७ व्यवहारसूत्र  
४६८ व्याख्यान का मसाला  
४६९ व्याख्यानमणिमाला  
४७० व्याख्यानरत्नमञ्जूषा

उद्धृत ग्रन्थ एवं व्यक्ति

- ४७१ व्याससहिता  
 ४७२ व्यासस्मृति  
 ४७३ व्रतान्नत की चौपाई  
 ४७४ शकरप्रश्नोत्तरी  
 ४७५ शखस्मृति  
 ४७६ शकुनावली  
 ४७७ शतपथब्राह्मण  
 ४७८ शयस्त ला शयन्त  
 ४७९ शान्तसुधारस  
 ४८० शान्तिगीता  
 ४८१ शाङ्गघर  
 ४८२ शाम्भवावार्त्तिसमुच्चय  
 ४८३ शिवगीता  
 ४८४ शिवपुराण  
 ४८५ शिवसहिता  
 ४८६ शिशुपालवध  
 ४८७ शील की नववाड  
 ४८८ शीलपाहुड  
 ४८९ शुकवोध  
 ४९० शुकनीति  
 ४९१ शुक्लयजुर्वेद  
 ४९२ श्राद्धपितृमीमांसा  
 ४९३ श्राद्धविधि  
 ४९४ श्रावकधर्मप्रकाश  
 ४९५ श्रावकधर्म प्रज्ञप्ति  
 ४९६ श्रावकप्रतिक्रमण  
 ४९७ श्रावक रूपचन्दजी  
 ४९८ श्रीमद्भागवत (नागवत)
- ४९९ श्री विलक्षण अवधूत-  
 स्वरोदय  
 ५०० श्वेताश्वतरोपनिषद्  
 ५०१ षट्प्राभृत  
 ५०२ षड्दर्शनसमुच्चय  
 ५०३ सक्षिप्त जैनमहाभारत  
 ५०४ सगीत पृथ्वीराज  
 ५०५ सजीवनी वूटी  
 ५०६ सतवचन  
 ५०७ सवोधसत्तरि  
 ५०८ सवोधि  
 ५०९ सयुक्तनिकाय  
 ५१० सवेगद्रुमकन्दली  
 ५११ सचित्र-विश्वकोप  
 (विश्वकोप)  
 ५१२ सत्यार्थ प्रकाश  
 ५१३ सप्तव्यसनसन्धान काव्य  
 ५१४ समातरग  
 ५१५ समयसार  
 ५१६ समथचि सामर्थ्यं  
 ५१७ ममवायाग सूत्र  
 ५१८ समाधिशतक  
 ५१९ सम्मतितकं प्रकरण  
 ५२० सम्यग्दर्शन  
 ५२१ नरलमनोविज्ञान  
 ५२२ सरिता (पाक्षिक)  
 ५२३ नर्जना  
 ५२४ सर्वैया शतक

वक्त्रकला के बीज भाग दसवाँ

५२५ सहलतस्त्री  
५२६ साख्यदर्शन  
५२७ साकेत  
५२८ सामवेद

५२९ सामान्यज्ञान एवं व्यक्तिपरिचय  
५३० सामायिकसूत्र

५३१ सावधानी रो समुद्र  
५३२ साहित्यदर्पण

५३३ मिहान्तकौमुदी  
५३४ सिन्दूरप्रकरण

५३५ सुखमणि माहव  
५३६ सुतनिपात

५३७ सुतपाहुड  
५३८ सुत्तपिटक

५३९ सुवोधपद्मकर  
५४० सुभाषितरत्नखण्ड-मजूषा

५४१ सुभाषितरत्नभाण्डागार  
५४२ सुभाषितरत्नसदोह

५४३ सुभाषितसचय  
५४४ सुभाषितावली

५४५ सुश्रुतसहिता  
५४६ सूक्तमुक्तावली

५४७ सूक्तरत्नावली  
५४८ सूत्रकृताग सूत्र

५४९ सेक्ष्वल लाइफ ड्यूरिंग वर्ल्डवाय  
५५० सौरठासग्रह

५५१ सोवियतभूमि  
५५२ सौरपरिवार

५५३ स्कन्दपुराण  
५५४ स्टडीज इल डिसीट

५५५ स्थानाग-टीका  
५५६ स्थानागसूत्र

५५७ स्थानादमजरी  
५५८ स्वप्नवासवदत्ता

५५९ स्वप्नशास्त्र  
५६० स्वरशास्त्र

५६१ स्वर-साधना  
५६२ हउममज्जा

५६३ हजरत बुखारी और मुस्लिम  
५६४ हठयोग-प्रदीपिका

५६५ हदीशशरीफ  
५६६ हनुमन्नाटक

५६७ हरिजन सेवक  
५६८ हरितस्मृति

५६९ हरिमद्र्योगविशिका  
५७० हरिमद्रीय-आवश्यक

५७१ हरिमद्रीयषट्क टीका  
५७२ हर्षचरित्र

५७३ हिगुलप्रकरण  
५७४ हितोपदेश

५७५ हिन्दू समाचार  
५७६ हिन्दी मिलाप (दैनिक)

५७७ हिन्दुस्तान (दैनिक)  
५७८ हिन्दुस्तान (साप्ताहिक)

५७९ हृदयप्रदीप  
५८० होडाचक्र

१ अकर

२

३ अगस्त्य

४ अफला

५ अ

६ अरु

७ अरु

८ अरु

९ अम

१०

११ अर

१२

१३ अर

(ए

१४

१५ अ

१६

१७

(

१८

१९

२० आ

२१

## व्यक्ति नामावली

- |                     |                           |
|---------------------|---------------------------|
| १ अकबर              | २२ आदम स्मिथ              |
| २ अक्खामवत          | २३ आरकिंग                 |
| ३ अगस्त्य मुनि      | २४ आरजू                   |
| ४ अफलातून           | २५ आरिलियम                |
| ५ अबीदाउद           | २६ आस्टिन                 |
| ६ अबुमुर्ताज        | २७ आस्टिन मेले            |
| ७ अबूदकर केतानी     | २८ आस्तिन ओमले            |
| ८ अब्दुल हसन        | २९ ड गरसोल                |
| ९ अमरमुनि           | ३० इजिल                   |
| १० अरविन्द घोष      | ३१ इकवाल                  |
| ११ अरस्तू (जरथुस्थ) | ३२ इन्द्रचन्द नीलखा       |
| १२ अलजर             | ३३ इद्वेसिना              |
| १३ अल्काट           | ३४ इब्राहीम लिंकन (लिंकन) |
| (एमो ब्रासन अल्काट) | ३५ इमर्सन (एमर्सन)        |
| १४ अल्फान्मीकर      | ३६ ई० एच० चेपिन           |
| १५ अष्टावक्र        | ३७ इशा अल्लाखाँ           |
| १६ असोन दी चाँसेल   | ३८ ईसरदास                 |
| १७ आईजक डिजराइली    | ३९ ईसा                    |
| (डिजराइली)          | ४० उइदा                   |
| १८ आईन्स्टीन        | ४१ उद्यमवादी              |
| १९ आचार्य उमाशंकर   | ४२ उमाश्वति               |
| २० आचार्य तुलसी     | ४३ ऊ धाट                  |
| २१ आचार्य रजनीश     | ४४ ए० ए० हाफकिन्स         |

४५ एक इंग्लिश विचारक

४६ एक युवक अन्यायी

४७ एच० जी० बोन

४८ एच० जी० वेल्स

४९ एच० डब्ल्यू० वीचर

५० एच० मोर

५१ एञ्जिलो

५२ एञ्जिल्स

५३ एडविन मार्कहम

५४ एडिसन (जी० एफ० एडिसन)

५५ ए० ड्यू० पाई

५६ एनन

५७ एनीवीसेन्ट

५८ एपिक्टेट्स

५९ एफ० एल० किमेन्स

६० ए० मिली

६१ एम० जी० लिश्वर

६२ एमी० एल०

६३ एरियल यूनानी

६४ एलाहीलर

६५ एल्वर्ट हुगांड

६६ एलोशियस

६७ एविड

६८ एस० सी० श्रीवास्तव

६९ ओलवर गोल्डस्मिथ  
(गोल्डस्मिथ)

७० ओविद

७१ ओडोरपार्कर

वक्तृत्वकला के बीज भाग दसवाँ

७२ कन्डोरसेंट

७३ कन्फ्यूशियस (कागफ्यूत्सी)

७४ कर्मवादी

७५ कवि उदयरराज

७६ कवि अमरदान

७७ कवि ऋद्धुलाल

७८ कवि कालिदास

७९ कवि कृपाराम

८० कवि कृष्णदास

८१ कवि केशव

८२ कवि क्षेमेन्द्र

८३ कवि गग

८४ कवि गिरधर

८५ कवि ग्वाल

८६ कवि घनश्याम

८७ कवि घाघ

८८ कवि घासीराम

८९ कवि जगन्नाथ

९० कवि जाल

९१ कवि जिनहर्ष

९२ कवि जुगतदान

९३ कवि जुगल

९४ कवि दिनकर

९५ कवि दीन

९६ कवि दीनदरवेश

९७ कवि दीप

९८ कवि देवीदास

९९ कवि धर्म्मामह

शक्ति

१०० कवि

१०१ कवि

१०२ कवि

१०३ कवि

१०४ कवि

१०५ कवि

१०६ कवि

१०७ कवि

१०८ कवि

११० कवि

१११ कवि

११२ कवि

११३ कवि

११४

११५

११६

११७ क

११८ कवि

११९

१२०

१२१ क

१२२

१२३

१२४

१२५

१२६ कवि

१२७ कवि

- |                     |                      |
|---------------------|----------------------|
| १०० कवि नाथूलाल     | १२८ कवि वेताल        |
| १०१ कवि नारायण      | १२९ कवि सग्रामदास    |
| १०२ कवि पद्माकर     | १३० कवि सहदेव        |
| १०३ कवि परसराम      | १३१ कवि सुन्दरदास    |
| १०४ कवि पीपा        | १३२ कवि सुजान        |
| १०५ कवि प्रताप      | १३३ कवि सूरत         |
| १०६ कवि बनारसीदास   | १३४ कवि सूर्यमल      |
| १०७ कवि बाकीदास     | १३५ कवि हस           |
| १०८ कवि बोधा        | १३६ कामवेल           |
| १०९ कवि ब्रह्म      | १३७ कारनट            |
| ११० कवि ब्रह्मदत्त  | १३८ कार्डिनल         |
| १११ कवि ब्रह्मानन्द | १३९ कार्ल मार्क्स    |
| ११२ कवि भड्डली      | १४० कार्लाइल         |
| ११३ कवि भूधरदास     | १४१ कालवादी          |
| ११४ कवि मयाराम      | १४२ किंगसले          |
| ११५ कवि माघ         | १४३ किडलिपर          |
| ११६ कवि मान         | १४४ किवकट            |
| ११७ कवि मोहन        | १४५ किसनिया          |
| ११८ कवि रणजीत       | १४६ कुन्दकुन्दाचार्य |
| ११९ कवि रतन         | १४७ कुसुमदेव         |
| १२० कवि रहीम        | १४८ कूपर             |
| १२१ कविराज हरनामदास | १४९ केटो             |
| १२२ कवि राम         | १५० केम्पी           |
| १२३ कवि रामचरण      | १५१ कैयराल           |
| १२४ कवि लिखमेश      | १५२ कैनेथ वालसर      |
| १२५ कवि विल्हण      | १५३ कैलाश जैन        |
| १२६ कवि विहारी      | १५४ कोलरिज           |
| १२७ कवि वृन्द       | १५५ कोलम्बम          |



## व्यक्ति नामावली

- २१२ जेग विल  
 २१३ जे० नोफेन  
 २१४ जे० पी० सी० बर्नाड  
 २१५ जे० पी० हॉलेण्ड  
 २१६ जे० फरीस  
 २१७ जेम्जगार फिल्ड  
 २१८ जे० राल्ड  
 २१९ जो० हावेज  
 २२० जौक  
 २२१ टप्पर  
 २२२ टाइन एडवर्ड्स  
 २२३ टामस कैम्पिस  
 २२४ टालमेज  
 २२५ टालस्टाय  
 २२६ टी० एल० वास्वानी  
 २२७ टी० कोगन  
 २२८ टेनीशन  
 २२९ टेलीटस  
 २३० टैगोर (रवीन्द्रनाथ ठाकुर  
 विश्वकवि)  
 २३१ ड० ल० जॉर्ज  
 २३२ डाइट रॉट  
 २३३ डाड्रिज  
 २३४ डान्टन  
 २३५ डायोजिनिस  
 २३६ डारेन्टोल  
 २३७ डार्विन  
 २३८ डॉ० एलेजी केरेल  
 २३९ डॉ० एल्फ्रेड  
 २४० डा० करेले  
 २४१ डॉ० कार्लवीच  
 २४२ डॉ० कैलाशचन्द्र दुवे  
 २४३ डॉ० गरास जे० रोल्ड  
 २४४ डॉ० जे० एच० केलोग  
 २४५ डॉ० डौग्लस मेकडोनल्ड  
 २४६ डॉ० फोर्ड एम० डी०  
 २४७ डॉ० लुकास शेम्पोनीअर  
 २४८ डॉ० वाई० पी० कपूर  
 २४९ डॉ० विलियम वेस  
 २५० डॉ० विलियम लेम्ब  
 २५१ डॉ० वोन नुरडन  
 २५२ डॉ० सर जेस्स शियर  
 २५३ डॉ० स्पैस  
 २५४ डॉ० हरदयाल माथुर  
 २५५ डिबेन्स  
 २५६ डी० एल० मूडी  
 २५७ डी० जे० रोल्ड  
 २५८ डे० नि० एल० वेक्टर  
 २५९ डेलकान्नेगी  
 २६० डेविस ग्रेसन  
 २६१ ड्राड्डेन  
 २६२ तिरमजी  
 २६३ तिरुचल्लुवर  
 २६४ तोतापुरी  
 २६५ तोमर  
 २६६ तोलाराम चोपडा



२६७ त्रायपट  
 २६८ थामस केम्पी  
 २६९ थामस पेन  
 २७० थामस फूलर  
 २७१ थियोनिनस  
 २७२ थेल्स  
 २७३ थैकरे  
 २७४ थोरो  
 २७५ थ्यू फ्रास्टस  
 २७६ द्वार  
 २७७ दाते  
 २७८ दादा वर्माधिकारी  
 २७९ देवेश्वर  
 २८० देवी रानी विडुला  
 २८१ धनमुनि (प्रथम)  
 २८२ धूमकेतु  
 २८३ नकुलेश्वर  
 २८४ नजिन  
 २८५ नरसी भगत  
 २८६ नरेन्द्रकुमार  
 २८७ नलिन  
 २८८ नाथजी  
 २८९ निकोलस चेम्फर्ट  
 २९० निपट निरजन  
 २९१ नियतिवादी  
 २९२ निर्मला हरवशासिंह  
 २९३ नीत्से  
 २९४ नेपोलियन (नेपोलियन बोनापार्ट)

वक्तृत्वकला के बीज भाग ५००

२९५ पंडित श्रद्धाराम जी  
 २९६ पत (मुमित्रानन्दन पत)  
 २९७ पटोरिया  
 २९८ पास्कल  
 २९९ पीथागोरस  
 ३०० पुरुषोत्तमदास टडन  
 ३०१ पृथ्वीराज सुराणा  
 ३०२ पेट्रार्क  
 ३०३ पैटार्क  
 ३०४ पैरेक्लीज  
 ३०५ पोप  
 ३०६ प्रेमचन्द  
 ३०७ प्रेमनिधि  
 ३०८ प्रेमसुख सेवक  
 ३०९ प्रेमादेवी रामायणी  
 ३१० प्रो० क्रिय  
 ३११ प्रो० विल्सन  
 ३१२ प्लुटार्क  
 ३१३ प्लूटार्क  
 ३१४ प्लेटन  
 ३१५ प्लेटो  
 ३१६ फिलिप्स बुक्स  
 ३१७ फिलिडग  
 ३१८ फीनेलन  
 ३१९ फेब्रर  
 ३२० फोथ  
 ३२१ फ्रैकलिन  
 ३२२ फ्रैंच-सेना के सर्जन जनरल

बौद्ध नामावली

३२३ वटलर  
 ३२४ वर्नाहड शा  
 ३२५ बलवर  
 ३२६ वाइल्ड  
 ३२७  
 ३२८ वावू  
 ३२९ बालबक  
 ३३०  
 ३३१ बीडेल  
 ३३२ बुडरो  
 ३३३ कुलवर  
 ३३४ कुल्लेश  
 ३३५  
 ३३६ बहू  
 ३३७ वेकन  
 ३३८ वेन  
 ३३९ वेली  
 ३४० वेन्डे  
 ३४१ वो  
 ३४२ वल्ल  
 ३४३ व  
 ३४४ मव  
 ३४५  
 ३४६  
 ३४७  
 ३४८  
 ३४९  
 ३५०

## व्यक्ति नामावली

- ३२३ बटलर  
 ३२४ बर्नार्ड शा  
 ३२५ बलवर  
 ३२६ वाइल्ड  
 ३२७ बाउपलर्स  
 ३२८ बाबू गुलाबराय  
 ३२९ बालजक  
 ३३० बावरीसाहिब  
 ३३१ बीडेल  
 ३३२ बुडरो विल्सन (विल्सन)  
 ३३३ बुलवर लिटन  
 ३३४ बुल्लेशाह  
 ३३५ बूलकोट  
 ३३६ बृहस्पति  
 ३३७ बेकन (फ्रांसिस बेकन)  
 ३३८ बेन जान्सन  
 ३३९ बैली  
 ३४० बैन्डेल फिलिप  
 ३४१ वो बी  
 ३४२ ब्रह्मदेवसिंह  
 ३४३ ब्लेयर  
 ३४४ भवरलाल चडालिया  
 ३४५ भगवतीचरण वर्मा  
 ३४६ भगवान् व्यास (वेदव्यास)  
 ३४७ भर्तृहरि  
 ३४८ भवभूति  
 ३४९ भावदेव सूरि  
 ३५० मिथु स्वामी  
 ३५१ मदन द रियु  
 ३५२ मदनमोहन चटर्जी  
 (मास्टर मोहन)  
 ३५३ म० वेकर  
 ३५४ मर्फी  
 ३५५ महर्षि मरीचि  
 ३५६ महर्षि रमण  
 ३५७ महाकवि भारवि  
 ३५८ महात्मा तिलक  
 ३५९ महात्मा बुद्ध (गौतम बुद्ध)  
 ३६० महात्मा भगवानदीन  
 ३६१ महावीरप्रसाद द्विवेदी  
 ३६२ महेन्द्रकुमार वशिष्ठ  
 ३६३ माण्टेन  
 ३६४ मान्टेस्की  
 ३६५ मान्टेस्क्यू  
 ३६६ माकटेन  
 ३६७ मार्डन बेकरीज  
 ३६८ मालचन्द्र वैद  
 ३६९ मि० जे० एच० ओलीवर  
 ३७० मिकावर  
 ३७१ मि० जे० एच० ओलीवर  
 ३७२ मि० थोमस जे० रीगन  
 ३७३ मिनेन्द्र  
 ३७४ मिलिन्द  
 ३७५ मिल्टन  
 ३७६ मुनि बच्छराज  
 ३७७ मुहम्मद-घिन-वशीर



## व्यक्ति नामावली

- ४३४ लेनिन  
 ४३५ लेवेटर  
 ४३६ लेडी मोटग्यु  
 ४३७ लैसिंग  
 ४३८ लोकमान्य तिलक  
 ४३९ वनेर  
 ४४० वरले  
 ४४१ वर्क  
 ४४२ वर्ड्सवर्थ  
 ४४३ वल्लभदेव  
 ४४४ वान हापर  
 ४४५ वाक्केशियो  
 ४४६ वायगटन  
 ४४७ वायरन  
 ४४८ वायर्स  
 ४४९ वारटल  
 ४५० वाल्टेयर  
 ४५१ वार्शिगटन ड्विन  
 ४५२ विकटर ह्यूगो  
 ४५३ विजयधर्मसूरि  
 ४५४ विजम  
 ४५५ विनोवा भावे  
 ४५६ विलकावस  
 ४५७ विलियम जेम्स  
 ४५८ विलियम पिट  
 ४५९ विलियम पेन  
 ४६० विवेकानन्द  
 ४६१ विशनदयाल गोयल  
 ४६२ विशप कम्बरलैड  
 ४६३ विशप वनेट  
 ४६४ विशप हॉल  
 ४६५ विष्णु शर्मा  
 ४६६ वीरुजी  
 ४६७ वोकला  
 ४६८ वोस्ता  
 ४६९ व्यास  
 ४७० शकराचार्य  
 ४७१ शरदचन्द्र  
 ४७२ शशिकान्त शर्मा  
 ४७३ शिकागो के शरीर शास्त्री  
 शिलर  
 ४७४ शिवानन्द  
 ४७५ शीलनाथ  
 ४७६ शुक्राचार्य  
 ४७७ शुभचन्द्राचार्य  
 ४७८ शेक्सपियर  
 ४७९ शेखशादी (शादी)  
 ४८० रौली  
 ४८१ शोपेन हावर  
 ४८२ श्री कालूगणी  
 ४८३ श्री डालगणी  
 ४८४ श्रीमती क्लूडनर  
 ४८५ श्रीमद् राजचन्द्र  
 ४८६ श्लीग्लैन  
 ४८७ मच्चियालालजी नगहटा  
 ४८८ सत आगस्तिन

# वक्तृत्वकला के बीज-शुद्धिपत्र

## [पहला भाग]

पृष्ठ	पवित	अशुद्ध
४	१	तत्सवितु
	४	हम सब
	५	समस्त
२४	५	लब्ध्वा
३१	१६	अहिंसा
४८	१२	सावण साजा
५६	६	समित्पाणि
७१	८	विडम्बका
७६	२	छूट गया
८०	२३	

१०६	१०	हलाहल
१०६	५	वय्युसहाओधम्मो
		(कुदकुद)
		दोष न लगे।
११३	२१	

११५

निवृत्ति

शुद्ध  
ओ३म् भूर्भुव स्वस्तस्वितु  
हम सब प्राणप्रिय, दुःखविनाशक  
सुखरूप एव  
सभी वृक्ष कल्पवृक्ष है, समस्त

लब्ध्वा  
अहिंसा, सत्य  
सोम साजा  
समित्पाणि भक्त को

विडम्बना  
(कर्तव्य की सूचना 'सारणा'  
है, अकर्तव्य का निषेध 'वारणा'  
है और भूल होने पर कर्तव्य के  
लिए कठोरता के साथ शिक्षा  
देना 'पडिचोयणा' है।)

हलाहल  
धम्मो वय्युसहाओ  
(कार्तिकेयानुप्रेक्षा ४७८)  
दोष न लगे। फिर वह विधि  
चाहे वेदो मे हो अथवा धर्म-  
शास्त्रो मे हो, उसे मानने मे  
कोई आपत्ति नहीं है।  
निवृत्ति

शुद्धिपत्र	पृष्ठ	पवित
	११८	७
	१२०	१७
	१३१	६
	१४८	१७
	१५४	१७
	१८१	१४
	१८५	१७
	२०६	१२
	२०८	११
	२१६	११
	२१६	१२
	२३६	६
	२३६	२
	२४४	२१
	२४५	२
	२४५	५
	२४६	१३
	२६८	१
	२७०	

३  
२१  
२६

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११८	७	धम्मो	धम्मो
१२०	१७	२३७	२३८
१३५	६	१४५।८४	४५८४
१४८	१७	मविष्य पुराण मे	मविष्य पुराण, प्रतिसर्गपर्व
			५८।५३ मे
१६४	१७	स्वामीवध	स्वामिद्रोह
१८१	१४	प्रेमवश	प्रेमवश पुत्र की बुद्धि से
१८५	१७	न मारे	न मारे और न मरवाये
२०६	१२	१०।७७	१०।७४१
२०८	११	जजमान	जमान
२१६	११	और	×
२१६	१२	करती है	करती है, सब मगलो की
			माता है
२३६	६	सकना	सकना 'काहलत्व' दोष है। मुख
			मे दोल न सकना
२३६	२	वारु भृंशम्	वारुणं भृंशम्
२५४	२१	१४।११।८४	११।८४
२५५	२	१४।८३।१	८३।१
२५५	५	१४।४।२	४।२
२५६	१३	महाभारत	महाभारत शांति पर्व, २३३
२६८	१७	नोट	नी का नोट
२७०	६	सेठने	नेठ

## [दूसरा भाग]

३	८	नकते हैं
२१	०	ब्रह्मचर्य के
२६	१०	के

मकते हैं, गदहे नहीं उठा मकते।

अब्रह्मचर्य के

×

पृष्ठ	पक्षित	अशुद्ध	वस्तुत्वकला के बीज भाग दसवा	शुद्ध	गुद्धि पत्र
२८	२०	मनुस्मृति २।६४		महामारत आदिपर्व ८५।५०	३२२
३४	२०	अपनी इच्छानुसार	X	तथा मनुस्मृति २।६४	३२३
३४	२०	पुरुषो को		पुरुषो को प्राप्त होकर	३२७
४३	२०	केफड़े		रैड्स	३२७
५४	२०	वार्य	X	वार्य	
५६	२०	रहकर		एँठी	
६२	२०	मीठी		१२३।१३-१४	
६५	२०	श्लोक ३३।४।२३		जिणसासण	
१०६	२०	जिणसासण		च या माया	
११३	२०	च माया		छाडो	
१४१	२०	ना छाडो		१०।७५६	
१४६	२०	१।७५६		सकप्यओ	
१६१	२०	सकप्यओ		अन्मुट्ठओहि	
२००	२०	अन्मुट्ठओ ओह		तुमने	
२०३	२०	तुम		उपधि	
२१७	२०	उपधि		रहा है? मैं चाण्डाल थोडा ही हूँ।	
२१६	२०	रहा है?		X	
२१६	२०	मैं चाण्डाल थोडे ही हूँ।		कूरगइक	
२२४	२०	कूरगइक		उससे	
२४५	२०	उसे		यो तारीफ	
२४७	२०	तारीफ		पराये दु ख	
२४७	२०	पराटु खये		कलहकरे	
२५३	२०	कलह करो		कोई दोष नहीं है	
२५६	२०	कोई नहीं है		पन्नता	
२६८	२०	पन्नते		१३।६	
२७६	२०	१।५			
					१०
					२१
					२८
					४३
					६०
					७८
					९४
					१५१
					१५३
					१७६
					१८६
					१८६
					२००
					२२४
					२६०
					२६३
					२७८
					२८१
					२६८
					२६८
					३०२

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३२२	६	दूर के	के दूर
३२३	११	१२-१३	तीन पक्तिर्यां काटनी हैं ।
३२७	१	सवने	सब
३२७	८	रुपयो	रुपयो को

[तीसरा भाग]

१०	१६	तस्वीर	तबसीर
२१	१३	जहाँ	जहाँ मे
२८	२	तीरबालियाँ	वीरबालियाँ
४३	५	६।१०	१६।१०
६०	१५	तेपु	भूतेपु
७८	४	जय	जूय
६४	६	देशात्यो	देशोत्यो
१५१	६	भूख	भूल
१५३	५	किसी से	किसी ने
१७६	१८	गिर जाने पर	गिर जाने पर भी
१८६	५	अनुभूत	अनुभूति
१८६	१२	पिच्चुग्घाडिओ	निच्चुग्घाडिओ
२००	२०	कितनी	कितनी ही
२२४	१२	तो	तो भी
२६०	१२	गोदा घाय	गोदा खाय
२६३	१०	कहती	यो कहती
२७८	१२	नोपाध्याया	नोपाध्याय
२८१	६	पवन-भाफ	पवन से साफ
२६८	२	नाई	ताई
२६८	१०	पापी	पाणी
३०२	१४	कहा के	कहा से



वक्तृत्वकला के बीज भाग दसवां

[चौथा भाग]

पृष्ठ	पंक्ति	असुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ
५	११	मेला	मेला	२६७
४४	७	करणोषारा	करणोतरा	२६८
४४	१३	पृथ्वीराजनाटक	सगीत पृथ्वीराज	३०४
७४	७	भावो	भवो	३१५
१०१	७	घसना, कटना	घिसना, काटना	३२७
११०	६	किरियादी	किरियावादी	
११६	१	समकत्व	सम्यक्त्व	
१४३	१८	नइरस्य	नरस्य	
१५६	१८	अणणहफले	अणणहयफले	
१६५	४	छारित्र	चारित्र्य	
१७६	१४	सेलेसी	जीवे सेलेसी	
१८६	१४	आयारकुसले	आयारकुसले (व्यवहार ३/५)	
२०८	६	योग्य	योग	
२३१	१६	दुस्सामए	दुस्समाए	
२३६	१३	साधन	साधव	
२४१	२	हृद्धि	तद्धि	
२४१	२	पुरुषस्था	पुरुषस्या	
२४५	७	निग्रन्ध	निग्रन्ध	
२४६	१०	विकुर्वणा	विकुर्वणा	
२६२	१२	जो	×	
२६३	६	णपि	णवि	
२७७	६	जिसमे	जिनमे	
२७६	१२	तेरहू हूँ	तेरा हूँ	
२६२	८	माप्रयेत्	माश्रयेत्	
२६३	६	नमिया	न सिया	
२६५	६	मिझापि	मिझापि	

पृष्ठ	पक्षित	अशुद्ध	शुद्ध
२६७	७	मवङ्कमित्ता	मवकमित्ता
२६८	२३	चाहे दो	चाहे तो
३०४	६	खाइम	खाइम, साइम
३१५	६	आचाराग श्रुत २, अ	३, उ १ वृहत्कल्प १।३६
३२७	५	अब्भुट्ठारोत्ति	अब्भुट्ठाणेत्ति

[पाँचवाँ भाग]

२८	१८	नृप	नृत्य
२८	२२	धगीशय्या	धजी शय्या
३५	१२	प्रिय	प्रिय एव
३६	४	मंत्रायणी	तैत्तिरीय
३६	६	अर्थात्	दुराघर्षे ही अर्थात्
३७	६	पडराणतवो	पङ्णतवो
४६	१४	कथानुसार	कथनानुसार
५३	२१	०।७३३	१०।७३३
६१	८	आणोवओगे	अणोवओगे
६३	७	२६।१	२६।११
६३	२०	नुम्यत्तु	लुम्पत्तु
६६	१२	२६।३	२६।४३
६७	१३	शुभैक	शुभैक
६७	१३	सूध्या	सूधमा
७२	२३	आवायविजए	अवायविजए
७८	५	ध्यानपि	ध्यानादपि
७६	२०	तकर	मकार
६०	१०	उवणा	ठवणा
१२०	२	परान्ने	परान्न
१०५	११	छपकली	मकही

वक्त्रकला के बीज भाग दसवाँ

०२

पृष्ठ

१२८  
१२९  
१३५  
१३७  
१४१  
१४४  
१४९  
१५०  
१५१  
१५२  
१५४  
१५६  
१५९  
१६४  
१६५  
२०५  
२२७  
२४०  
२४४  
२५७  
२८२  
२८८  
२९१  
२९१  
२९१  
२९४  
२९६

अशुद्ध

जिघच्छा

जस

मोमणी

पण चीरी

३।२

पुरुषतत्व

२।१६।५८

कामसचय

उस उस

६।२।१६।१

नपुसकालिग

१।१।१

८३ हजार

मिदह मिदह

घर

पूर्वकथा

डाल

तैत्तिरीय ताराज्य

पणता

सुलमाइ

१,१९

३४९९

२५,७२,०००

७०५

शुद्ध

जिघच्छा

जडै

मोमणी

पण पेटचीरी

३।१

X

२।१।५।९

कम्मकवुय

उस

५।२।१६।१

नपुसकालिगसिद्ध

१।१।१०

८६ हजार

छिदह मिदह

घर

पूर्वकथना

डालकर

ताण्ड्य

पणताओ

णो सुलमाइ

१,१६

३४०९

२५,७२,६००

९०५

शुद्धिपत्र

पृष्ठ

२९७  
३०१  
३०२  
३०३  
३१२  
३१४  
३१५  
३१६  
३१९  
३२४  
३२४  
३२४  
३२५  
३२५  
३२५  
३२६  
३२७  
३२७

११  
११  
२९  
३५  
४९  
६२

१,७०,८५  
६,६००  
३९८८

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२६७	७	२५००	१५००
३०१	४	७६,६४,२०७	७६,६४,२०७
३०२	१३	जव सरया	जन सरया
३०३	१६	१६५५	१५५६
३१२	१७	६ प्रतिशत	६० प्रतिशत
३१४	४	७ करोड मन	७० करोड मन
३१५	५	१५००-२०००	१५००-१०००
३१६	१०	१ लाख	११ लाख
३१६	११	२१ अगस्त	३१ अगस्त
३२४	१०	३॥ लाग्न	३॥॥ लाग्न
३२४	१७	४४ ८८	४४ ६८
३२४	२३	ऊनके	ऊनके
३२५	८	१८६०	१६६०
३२५	११	८०	६०
३२५	१५	५३८	५३६
३२६	१३	१६ ०२	१६ ०१
३२७	८	१७ १०	१७ ११
३२७	६	५ ४२	५ ४१

[ छठा भाग ]

११	१६	शान्ति	ज्ञाति
२१	७	निरुप्य	निरुप्य
२६	७	शाम्येन्	शाम्येन्
३५	०१	गृह्णाति	गुणान् गृह्णाति
४६	१३	प्रश्रय-विनय का होना	प्रश्रय-आश्रय देने का गुण होना
६२	५	चढता है	चढता है

१०४  
पृष्ठ  
७६

वक्तृत्वकला के बीज भाग दसवा

८४	७	अशुद्ध
८५	१४	जो देता लेता नहीं ।
१००	७	आधा मर्द वह है, जो
१०७	२	लेता है पर देता नहीं
१७६	१३	सुबोध
१६३	४	बलिमत
२०५	२०	रागद्वेषो
२०६	२२	षट्षद
२४१	८	उसे
२४३	२०	दुर्वृत्ता
२६५	२२	तल्लो
२६६	२०	दण्ड
२७०	२२	कामधेनु मेरी आत्मा ही
२७२	२२	व अरे
२७४	२	बहिरा
२७६	१४	नास्य
२८२	११	वाहिरप्पा
२७४	१४	कर्णो
२७६	१४	आदि
२८२	११	शिष्यो
२८३	१६	इदि
३१३	७	जिसकी
	१	रात्र्यान्व
	१	भू
	८	हाथ
	१५	
	१७	

शुद्ध  
जो देता है, लेता नहीं, आधा मर्द  
वह है, जो लेता भी है और देता  
भी है ।

सुबोध  
बलियत्त  
रागद्वेषो  
षट्षद  
इसे  
दुर्वृत्ता  
तल्लो  
दण्ड  
मेरी आत्मा ही कामधेनु  
वा अरे  
बहिरा  
नास्य  
वाहिरप्पा  
कर्णो  
आदि पाँच  
शिष्यो  
इदिया  
जिसके  
रात्र्यान्व  
भू  
हत्या

[सातवा भाग]

तप्यते

पृष्ठ	पङ्क्ति
११	४
३६	१८
४७	१
४८	३
४९	१६
४६	१६
६६	२१
६६	४
६१	३
६६	४
६४	२६
११७	५
१२०	१०
१२२	८
१२४	१५
१७	७
१४३	३
१४३	११
१४७	२
१४६	५
१४४	१४
१७२	१
१६२	९
१३५	११
१४३	४
२०	१७

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११	४	पुरिस	पुरिस
३६	१८	के	के लिए
४७	१	अहित	ऐसी अहित
४८	३	अग्निदण्ड	अग्निदाह
५६	१६	नाज्वाजिना वाजिना	नाज्वाजिन वाजिना
५६	१६	गर्द	गर्दभ
६६	२१	स्वल्पभापी	सत्यभापी
६६	४	५०	८०
८१	३	पतिव्रता	पतिव्रत
८४	४	लघिण्ठेद	लघिण्ठेद
६४	२६	मूछ	मू द
११७	५	मी में	में भी
१२०	१०	मस्तिक	मस्तिष्क
१२२	६	परिणामो	परिमाणो
१३४	१५	वेगात्	वेगान्
१३७	७	२० मई	१५ जून
१४३	३	रसादिदोषो	रसादिधातुओ
१४३	११	अपराध से	उपशय मे
१४७	२	गुण	गुणा
१४६	५	मञ्चाई	सफाई
१५४	१४	मुमूर्षाणा	मुमूर्षणा
१७२	१	अनमुना	सुना-अनसुना
१६२	६	नाल	वाल
२३५	११	पुर ने	पूर न
२५३	४	पैगोडा को	पैगोडा क
		[आठवा भाग]	
२०	१७	हवन मी	हवन की

वक्त्रकला के बीज भाग दसवाँ

शुद्ध  
४५० से ४७५-५१० से ५२५

१०६

पृष्ठ

२५

पङ्क्ति

१३

अशुद्ध

५१० से ५२५-४५०

से ४७५

परौ

सिद्धि

जहन्ति

उसकी

पहले के दो

वह धनुर्धारी निन्द्य है।

जो युद्ध भूमि में मरते

समय एव कमान पर

तीर चढाकर एकाग्रचित्त

से लक्ष्यवेध करने में

समोह का प्रदर्शन

करता है।

दाक्ष्यं

ज्ञान

सेवते

कुण सरसी

होते

व्यवहरज्ञो

पर

जाती है

बोर

इन्होंने

कानी है।

खाना

शाला

पैरो

सिद्ध

जहति

उनकी

X

वह धनुर्धारी वेकार है, जो युद्ध-

भूमि में एव कमान पर तीर

चढाते समय समोह का प्रदर्शन

करे। इसी प्रकार वह तपस्वी

भी निकम्मा है, जो मरणान्त

कण्ट में और मन को समाधिस्य

करने में विमूढ-सा बन जाये।

दाक्ष्य

जान

मेवेत

कुण करसी

होती

व्यवहारज्ञो

पर भी

चली ही जाती है

भोर

उन्होंने

कानी है, काली है।

विदा

शाम्भ्र

शुद्ध

पृष्ठ

२३६

२५१

२६२

२७३

२८४

२९५

३०६

३१७

३२८

४

१२

१७

२७

४६

६२

८५

११५

१२८

१५७

१५७

१५८

१५९

१७७

१८२

१८२

पृष्ठ	पक्षित	अशुद्ध	शुद्ध
२७६	१	छापने	छापाने
२८१	२	स्मृत	स्मृता
२८२	२०	खोद	खोदकर
२६६	१२	आई	आई एव वे मर गयी
३०२	१५	माने	मुझे बहन माने
३०४	१२	अति	अधि
३०६	३	प्राप्यस्यति	प्राप्स्यति
३१२	७	श्वश्र्वा	श्वश्रूवा
३१४	४	डेली	डली

[ नौवा भाग ]

४	२२	तसपाणे	तसे पाणे
१२	२३	पायिव	पायिव
१७	७	विशुद्धिभनम	विशुद्धिर्मनस
२७	२१	पाप्पो	पापा
४६	१३	और	और व्यमन मे
६२	८	स्नानितो	स्नानितो
८५	६	वर्ष मे	वर्ष मे
११५	२	कायतया	कार्यतया
१२८	४	लगा	लगा एव
१५७	१७	बदलो	बादलो
१५७	२०	घटो	घटो की
१५८	७	जग	जङ्ग
१५६	१२	१८६६	१८६१
१७७	१६	पर	पर भी
१८२	१	न्वतन्त्र	न्वतन्त्रता
१८२	११	बुत्वर	बुन्वरलिटन



वक्त्रकला के बीज भाग दो.

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध (१६४३-४८)	शुद्ध (१६४३-४८)
१८६	१६	पानी	पानी में
२२१	१७	पर	पर भी
२२१	१८	वर्ष की	वर्ष से
२३४	३	गिवाड	विगाड
२३५	१	हानिकारण	हानिकारक
२३८	६	टेढो	डेढो
२३८	१३	हवलदारी	हवालदारी
२३८	१३	कटाने का	कराने का
२३८	४	इस दिन	इस दिन से
२५१	२१	के	X
२६३	२१	स्मृत	रमृति
२६३	११	चमरेन्द्र ने	चमरेन्द्र
२६८	१२	काका	का
२७२	५	बहुत मे	बहुत से
२६४	१६	श्वान को	श्वान के
३००	१५	नीलयस	नील टास
३०१	१६	जाऊँ	जाऊँ तो
३०३	१४	साथ	अनुसार
३०५	१०	भाद्रपक्ष	भाद्रपद
३११	१८	पुरी	पुरी
३११	५	इसका	इसका स्थान
३१६	१३	क्वार्ट्स	क्वर्ल्स
३२२	२०	पजावी कहाव	गुजराती कहावत
३३०	३	मेह	नेह
३३१	१४	काणे	काणो
३३२	१५	मनो	ममो
३३२	२२		

— के पर १

मागों वमें पदम्य, के। के स्व नियम है। स० क० लि० जो मं०

मुनिश्री धनराज जी द्वारा लिखित—साहित्य

## एक विहंगावलोकन

[मुनि श्री धनराज जी द्वारा सकलित-संगृहीत महान ग्रथ वक्तृत्वकला के बीज भाग १ से ६ तक का संपूर्ण परिचय पाठक पिछले पृष्ठों पर पढ़ चुके हैं। अब उनके अन्य साहित्य का संक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत है।]

### १ मनोनिग्रह के दो मार्ग

इस पुस्तक में मन को निग्रह करने के लिए स्वाध्याय और ध्यान रूप दो मार्गों का गहनतम विवेचन है। वाचना, पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा और धर्मकथा आदि स्वाध्याय के भेद-प्रभेद प्रथम मार्ग के मूल आधार हैं। पिण्डस्थ, पदस्थ, रूपस्थ एवं रूपातीत ध्यान की विविध पद्धतियाँ दूसरे मार्ग में वर्णित हैं। पार्थिवी, आग्नेयी, वायवी, वारुणी, तत्त्वरूपवती नामक मन्त्र धारणाओं के स्वरूप ध्येयसिद्धि के लिए विशेष चिन्तन प्रस्तुत करते हैं। योग के यम, नियम आदि आठों अंगों का मार्ग विवेचन भी पाठकों के लिए बहुत उपयोगी है। दोनों मार्गों में क्रमशः बीस और चौतीस विषयों पर महत्त्वपूर्ण तथ्यों का सुन्दर विवेचन मन को निग्रह करने के लिए पर्याप्त सामग्री प्रस्तुत करता है। छः प्रकार के मन्त्र आवर्त तथा श्री कर्मचन्द्रजी स्वामी वा ध्यान नायकों के लिए विशेष सबलभूत हैं। मुनि श्री चन्दनमलजी स्वामी द्वारा लिखित पुस्तक की प्रस्तावना बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। पुस्तक का दूसरा संस्करण सन् १९६८ में श्री सम्पतरायजी बोरड, मोहनलालजी बरडिया वी कॉम द्वारा संपादित श्रीमती कस्तूरी देवी बोरड, गगानग ने 'प्रेम प्रिन्टिंग प्रेस' आगरा में मुद्रित कराया है। मूल्य १ रु २५ पैसे।

## २. सोलह सतियाँ

यह पुस्तक, जैन इतिहास में वर्णित, प्रमुख रूप से सोलह सतियों के जीवन-वृत्तो से अलंकृत है। ये जीवनवृत्त इस अवसर्पिणी काल में भगवान ऋषभनाथ के समय से लेकर भगवान महावीर के जीवन काल में घटित होने वाली जाकियाँ प्रस्तुत करते हैं। इन जीवनवृत्तो में आध्यात्मिकता, सामाजिकता, राष्ट्रीयता तथा नागरिकता का सजीव चित्रण है। श्रमण-संस्कृति पर आधारित ये जीवनवृत्त जैन साहित्य-धारा की प्राचीनता का स्वयम्भू प्रमाण हैं। इस पुस्तक सोलह सतियों के साथ जैन ग्रन्थों में वर्णित शीलवती, चेलता, अजना, मदनरेखा इन चार महासतियों का जीवन-वृत्त भी परिशिष्ट में प्रस्तुत है। प्रत्येक जीवनवृत्त के साथ उसकी आधारभूत विशेषता भी प्रस्तुत की गई है। इस सर्वजनप्रिय पुस्तक का तृतीय संस्करण सन् १९७२ में श्री भवरलालजी दसानी, कलकत्ता द्वारा श्री श्रीचन्द्रजी मुराना 'सरस' के लिए 'राष्ट्रीय आर्ट प्रिन्टर्स' में प्रकाशित किया गया है। मूल्य २ रुपये।

## ३. प्रश्न-प्रकाश

प्रस्तुत कृति में जैनदर्शन के मौलिक तत्वज्ञान का सक्षेप में महत्त्वपूर्ण विवेचन है। प्रत्येक तत्व को प्रश्नोत्तर के माध्यम से सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक की उपयोगिता उसकी नौ हजार प्रतियों के प्रकाशन से स्वतः सिद्ध हो जाती है। आबालवृद्ध में तत्वज्ञान अधिक से अधिक प्रसारित हो, इसी भावना से इस पुस्तक की रचना हुई है। इसका पाचवाँ संस्करण ई० सन् १९७२ में वनेचन्द्र-बूणकरण-मानमल सिधौ, शार्दूलपुर द्वारा 'श्री विष्णु प्रिन्टिंग प्रेस' आगरा, में प्रकाशित हुआ है। मूल्य ८० पैसे।

## ४. लोक-प्रकाश

यह पुस्तक लोक का स्वरूप विषयक प्रश्नोत्तरों से मकलित है। इसमें विशेष रूप में वर्म, अधर्म, आकाश, काल, पुद्गल, जीव इन छः द्रव्यों का विस्तृत विवेचन है। जैन आगमों पर आधारित बहुत ही सरल भाषा में

उपयोगी तथ्यों का निरूपण किया गया है। तत्त्वज्ञान के साथ व्यवहार-ज्ञान का भी हिन्दी भाषा में विस्तृत वर्णन सभी के लिए विषय उपयोगी है। इसमें प्रस्तुत सामग्री पुनः पुनः पठन-पाठन करने योग्य है। इसका प्रकाशन 'श्री जैन तेरापथी समा' वालोतरा ने कराया है। यह पुस्तक ४७ प्रामाणिक आगम ग्रन्थों के उदाहरणों युक्त नव पुजों में विभक्त है। इसकी भूमिका वर्तमान सेशन जज श्री सोहनराज जी कोठरी ने लिखी है। मूल्य १ रु २५ पैसे।

## ५. ज्ञान-प्रकाश

इस कृति में जैन दर्शन की आधारशिला-रूप पाँच ज्ञानों का विस्तृत विवेचन है। उनके भेद, प्रभेद आगम शास्त्रीय साक्षियों के साथ अतीव सरल भाषा में सकलित किए गये हैं। विद्वान् अध्येता के लिए इसमें चिन्तन एवं मनन के अतिरिक्त अपनी गवेषणा के अनुरूप यथेष्ट सामग्री प्राप्त है। जैन शिक्षाधियों के लिए तो यह एक अमूल्य सहायक ग्रन्थ सिद्ध हो सकता है। परा मनोविज्ञान के आधार पर कतिपय सत्य घटनाएँ भी पुस्तक में उल्लिखित हैं। पुस्तक पाँच पुजों में विभक्त तथा ११८ प्रश्नों के विस्तृत उत्तरों का महत्वपूर्ण सफलन है। इस पुस्तक की भूमिका समाजभूषण श्री ज्योगमलजी चौपडा बी ए, बी एल ने लिखी है तथा सम्पादन कार्य श्री गुलाबचन्द वैद द्वारा हुआ है। यह पुस्तक सन् १९६३ में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापथी समाजीनागर (वीकानेर) द्वारा प्रकाशित तथा 'आदर्श मुद्रणालय' वीकानेर में मुद्रित हुई है। मूल्य १ रुपया।

## ६. दर्शन-प्रकाश

भारतीय सन्स्कृति में प्राचीन व अर्वाचीन सिद्धान्तों के प्रवर्तकों तथा उनके द्वारा प्रवर्तित धर्म-सम्प्रदायों का चिन्तन-मनन इस पुस्तक में प्रस्तुत है। दर्शनशास्त्र में अध्येताओं के लिए पुस्तक में वर्णित विवेचन विशेष उपयोगी है। प्रश्नोत्तरों के माध्यम से तत्त्व की यथायथा वा दिग्दर्शन कराया गया है। सभी धर्म सम्प्रदाय के भेद-प्रभेदों तथा उनके सिद्धान्तों का विस्तृत विवेचन उदारता की भावना से ओतप्रोत है। पुस्तक में बहूँ पर किन्ती दर्शनों को ऊँचा या नीचा

वताने का प्रयत्न नहीं किया गया है। दर्शन से सम्बन्धित ऐतिहासिक व पारम्परिक परिज्ञान भी विशद रूप से परिवर्णित है। पुस्तक में नय-निक्षेप, सप्तमगी आदि ममस्त पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डालने के साथ-साथ बौद्ध दर्शन, नैयायिक, वैशेषिक, साह्य, योग, मीमांसक, वेदान्त, चार्वाक, आदि दर्शनों पर भी विस्तृत प्रकाश डाला गया है। इसके अतिरिक्त मुस्लिम, ईसाई, ताओ एव कन्फ्यूशियस, सिक्ख, यहूदी, पारसी आदि धर्मग्रन्थों का दिग्दर्शन भी पुस्तक में कराया गया है। प्रत्येक विवेचन प्रामाणिक धर्मग्रन्थों पर आधारित है। १६ पुजो में विभक्त वह पुस्तक सन् १९७३ में श्री ईश्वरदास, जरणदास जैन टोहाना द्वारा 'सजय साहित्य संगम' के लिए 'राष्ट्रीय आर्ट प्रिन्टर्स' में प्रकाशित हुई है। मूल्य २ रुपये ५० पैसे।

### ७. चारित्र-प्रकाश

जैन आगमों में वर्णित पाच चारित्रों पर विशद प्रकाश देने वाली यह पुस्तक है। सामायिक, छेदोपम्यापनीय, परिहार-विशुद्धि, सूक्ष्मसपराय एव यथाव्यात चारित्र के भेद-प्रभेद इसमें विशेष रूप से वर्णित है। सरल भाषा में छोटे-छोटे २३८ प्रश्नों के माध्यम से जैन मुनियों के कठिन चारित्र सम्बन्धी जिज्ञासाओं का समुचित समाधान है। महाव्रत, अणुव्रत आदि साधनापरक प्रक्रियाओं के नियमों-नियम भी उल्लिखित हैं। चारित्रधर्मों-पासको के लिए इस पुस्तक का पठन-पाठन बहुत उपयोगी हो सकता है। नव पुजो में विभक्त यह पुस्तक वालोत-रानिवासी श्रीमती सुआदेवी अज्जेड द्वारा सन् १९६६ में 'भारत प्रिन्टर्स' जोधपुर में मुद्रित हुई है। मूल्य २ रुपये ५० पैसे।

### ८. श्रावकधर्म-प्रकाश

जैन आगमों में वर्णित श्रमणोपासकों के लिए बारह व्रतों का विस्तृत वर्णन मय यह पुस्तक है। श्रावक आचरणों से सम्बन्धित भगवद्वाणी के व उत्तरवर्ती आचार्यों द्वारा प्रेरणाजन्य बनाये विधि-विधानों के आधारों पर १४६ समाधान-कारक प्रश्नों के उत्तर इसमें दिये गये हैं। पुस्तक पन्द्रह पुञ्जों में विभक्त है एव शास्त्रीय आधार पर बारह व्रतों का मुन्दर विवेचन है। श्रावक धर्म उपासकों के लिए पुस्तक विशेष मननीय है। पुस्तक का दूसरा सम्करण मोमराज

तिलोकचंद्र पुगलिया, डूंगरगढ़ द्वारा 'राष्ट्रीय आर्ट प्रिन्टर्स' जागरण में प्रकाशित हुआ है। मूल्य १ रुपये ५० पैसे।

## ६. मोक्ष-प्रकाश

मोक्ष-मार्ग पर अनवरत चलने वाले पथिक के लिए यह पुस्तक आलोक-न्तर्मम है। जैन दर्शन के अद्वितीय सिद्धांत कर्मवाद का विस्तृत विवेचन इसका मूल आधार है। आठ कर्मों के भेदोपभेद, कर्म-प्रकृतियाँ, कर्मनिवन्ध के कारण, कर्मनिवृत्ति, कर्मन्वन्ध, कर्मनिवारणता आदि अनेक ज्ञातव्य तथ्यों से सम्बन्धित प्रश्नों के विस्तृत उत्तर एवं यह पुस्तक है। प्रत्येक उत्तर आगम शास्त्रीय उद्धरणों से युक्त है। इस अलोकस्तम्म के प्रकाश में नायक ज्ञानाराधना की उपासना करता हुआ मोक्षप्राप्ति को सरल व सुगम बना सकता है। पुस्तक मन् १९७१ में 'आदर्श साहित्य सघ' द्वारा दिल्ली में प्रकाशित हुई है। मूल्य ५ रुपये ५० पैसे।

## १०. पच्चीस बोल का सरल विवेचन

इसमें पच्चीस बोल के थोकड़े की बहुत-ही नीधी सादी भाषा में व्याख्या की गयी है। बाल-वृद्ध एवं महिलायें इसको पढ़कर महज में ही जैन तत्त्व का गभीर रहस्य समझ सकते हैं। मूल्य १ रुपया ५० पैसे।

## ११. चमकते चाँद

इस पुस्तक में जैन ध्वत्ताम्बर तैरापथी सघ के प्रभावशाली नव आचार्यों के जीवन वृत्तों का सुन्दरतम चित्रण है। इस गौचरपूर्ण मक्षिप्त इतिहास में कतिपय घटनाएँ तो बहुत भासिक तथा रोचक हैं। पुस्तक में आचार्यों के मक्षिप्त पश्चिम के भाग उनके जन्म नवन् गाँव, दीक्षा, पट्टागोहण, आदि वर्णनों का दिग्दर्शन विशेष महत्त्वपूर्ण है। पुस्तक की उपयोगिता उसी तृतीय आवृत्ति से स्वतंत्र सिद्ध हो जाती है। वि. स. २००४ में पुस्तक का तृतीय संस्करण श्री स्त्रीराम जैन केंद्रन मठ (हरियाणा) द्वारा प्रेम प्रिंटिंग प्रेस आगरा में मुद्रित हुआ है। पुस्तक की भूमिका मुनि श्री चन्दनमन्त्री द्वारा लिखी गई है। मूल्य ४० पैसे।



## १६. सच्चा धन

यह पुस्तक जैन तत्वज्ञान कण्ठाग्र करने के लिए विशेष उपयोगी है। पुस्तक केवल पठनीय ही नहीं है, अपितु सदा-सदा के लिए पास में रखने योग्य है। पुस्तक श्री दयाराम वृजलान टोहाना मण्डी द्वारा मुद्रित है।

मूल्य ३० पैसे

## १७. चौदह नियम

इस पुस्तक में जैन श्रावकों के प्रतिदिन धारण करने योग्य चौदह नियमों का विशद विवेचन है जो प्रत्येक जैन श्रावक के लिये पढ़ने के योग्य है। इस पुस्तक के नौ सम्करण (लगभग १८,००० पुस्तकें) छप चुके हैं। इसका वर्तमान प्राप्तित्त्यान आदर्श साहित्य मघ, चुर है।

□ गुजराती रचनाएँ •

## १८. धर्म एटले शुं ?

उसमें तेरापथ के आदि-पुरप श्री मिधु स्वामी प्ररूपित त्या-दान का विवेचन है। यह पुस्तक श्री जैन श्वेताम्बर तेरापथी समा, बम्बई में प्रकाशित है।

## १९. परीक्षक बनो ?

इसमें जैन आगमानुसार माधुओं के आचार-विचार का विस्तृत विवेचन है। इनका प्रकाशन श्री श्री जैन श्वेताम्बर तेरापथी समा, बम्बई ने किया है।

मपूर्ण साहित्य प्राप्त करने के लिए नपकं करे।

मोतीलाल पारख □

इन्द्रचन्द नीलखा

व्यामसुखा हाऊस

अभयकुमार राजकुमार नीलखा

इटो का चीक पो० बीकानेर

दहीमटी पो० ग्वालियर





## १६. सच्चा धन

यह पुस्तक जैन तत्वज्ञान कण्ठाय करने के लिए विशेष उपयोगी है। पुस्तक केवल पठनीय ही नहीं है, अपितु मदा-सदा के लिए पास में रखने योग्य है। पुस्तक श्री दयागम वृजलाल टोहाना मण्डी द्वारा मुद्रित है।

मूल्य ३० पैसे

## १७. चौदह नियम

इस पुस्तक में जैन श्रावकों के प्रतिदिन धारण करने योग्य चौदह नियमों का विषय विवेचन है, जो प्रत्येक जैन श्रावक के लिये पढ़ने के योग्य है। इस पुस्तक के नौ नस्करण (लगभग १८,००० पुस्तकें) छप चुके हैं। इसका वर्तमान प्राप्तिस्थान आदर्श साहित्य मघ, चुर है।

□ गुजराती रचनाएँ :

## १८. धर्म एटले शुं ?

इसमें तेरापथ के आदि-पुरुष श्री निधु स्वामी प्रणीत दया-दान का विवेचन है। यह पुस्तक श्री जैन श्वेताम्बर तेरापथी मन्ना, बम्बई से प्रकाशित है।

## १९. परीक्षक बनो ?

इसमें जैन आगमानुसार गार्धुओं के आचार-विचार का विस्तृत विवेचन है। इसका प्रकाशन श्री श्री जैन श्वेताम्बर तेरापथी मन्ना, बम्बई ने किया है।

संपूर्ण साहित्य प्राप्त करने के लिए नपर्फं करें।

मोतीलाल पारख □

इन्द्रचन्द्र नीलखा

श्यामसुखा हाऊस

अभयकुमार राजकुमार नीलखा

इंदो का चौक पो० बीकानेर

दहीमडी पो० श्वालियर

# मुनि श्री धनराज जी की अप्रकाशित रचनाएँ

संस्कृत	१५	दोहा-सदोह
१ देवगुरुधर्म-द्वात्रिंशिका	१६	व्याख्यान-मणिमाला
२ प्रास्ताविक-श्लोकशतकम्	१७	व्याख्यानरत्नमञ्जूषा
३ ऐकाहिक-श्रीकालुशतकम्	१८	जैनमहाभारत-जैनरामायण
४ श्रीकालुगुणाष्टकम्	१९	आदि बीस व्याख्यान
५ श्रीकालुकल्याणमन्दिरम्	२०	उपदेशसुमन माला
६ भाविनी	२१	उपदेशद्विपञ्चा
७ ऐक्यम्	२२	राजस्थानी
८ श्रीमिक्षुशब्दानुशासनलघुवृत्ति- तद्धितप्रकरणम्	२३	धनबावनी
९ गुजराती	२४	सवैयाशतक
१० गुर्जरमजनपुष्पावलि	२५	औपदेशिक ढाले
गुर्जरव्याख्यानग्लतावलि	२६	प्रास्ताविक ढाले
हिन्दी	२७	कथाप्रबन्ध
११ वैदिकविचारविमर्शन	२८	उ बडे व्याख्यान
१२ मक्षिप्तवैदिक विचारविमर्शन	२९	ग्यारह छोटे व्याख्यान
१३ अवधान-विधि	३०	सावधानी को समुद्र
१४ संस्कृत बोलने का सरल तरीका	३१	पञ्जाबी
	३२	पञ्जाव-पन्चीमी

